मैं समय हूँ - राजकुमार चन्दन
मैं
समय हूँ
विश्व शान्ति के लिये
युवाओं का अभियान
- राजकुमार चन्दन

रुस-यूक्रेन लड़ाई पर आधारित युवा शक्ति का अभियान

मैं समय हूँ...

(विश्व शान्ति की अनूठी पहल...)

- राजकुमार चंदन

मैं समय हूँ...

ISBN NO.- 978-81-956404-3-0

- पुस्तक- मैं समय हूँ...
- लेखक- राजकुमार चन्दन
एल.आय.जी. 185, जवाहर नगर, देवास (म.प्र.)
मो. - 9827328555
email : rajkumarchandan@gmail.com
-
- प्रकाशक- साधना कुंज पब्लिकेशन
No. - 978-81-956404-1-6
पता- 214/ए, बजरंग नगर, देवास (म.प्र.)
मो. - 9826268286
email: sadhanakunj1@gmail.com
- मुद्रक- राजा ऑफसेट प्रिंटर
नेहरू नगर, इंदौर म.प्र.
मो. 9993340084
- टाइपिंग व आकल्पन
विशाल जलोरे
मो. - 9993971799

मूल्य - 129 ₹

पाठकों की सुविधा के लिए

कहाँ क्या

प्रकाशक की ओर से...

'मैं समय हूँ...' एक बहुमूल्य उपन्यास है। लेखक श्री राजकुमार चंदन ने इस उपन्यास के माध्यम से धरती के मनुष्य पर छाए संकट के प्रति आगाह किया है। लेखक ने मानवतावादी पक्ष को सर्वोपरि रखते हुए युद्ध एवं सीमाओं की ज्वलंत समस्या के हल रखे हैं, जो वैश्विक जरूरत है। रूस और यूक्रेन युद्ध की पृष्ठभूमि को सामने रखकर भारतीय विद्यार्थियों को उपन्यास का पात्र बनाया है, जिनके माध्यम से शान्ति का संदेश दिया है।

हमें इस पुस्तक को प्रकाशित करने में इसलिए भी प्रसन्नता हो रही है कि इसमें सिर्फ घटनाओं, चुनौतियों और मुश्किलों को ही स्थान नहीं दिया है; बल्कि उसके जन्मदाता विचार या दृष्टिकोण को आधार बनाया गया है। जहाँ से सारे उन्माद पैदा होते हैं और जहाँ से वे शांत हो सकते हैं, उस मूल स्रोत की बात कही गई है। उन अर्थों में भी उपन्यास विश्व के लिए उपयोगी और कल्याणकारी है कि, आग की तरफ जा रही दुनिया को बचाने के लिए रास्ता बदल देने का जिम्मेदारों से आह्वान है। निश्चित रूप से उपन्यास इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि आज इस बात को पुरजोर तरीके से कहने वाले की जरूरत है।

ओमप्रकाश नवगोत्री
प्रकाशक

लेखक की ओर से...

विश्व का जहाज डूबने को है, और सब अपने-अपने केबिन बचाने में लगे हुए हैं। क्या इस स्थिति में जहाज बच सकता है?

पूरी दुनिया युद्ध और सीमाओं के जाल में फँसकर छटपटा रही है। विश्व निरन्तर विनाश की ओर बढ़ता जा रहा है। अशान्ति के इस दौर में, यह उपन्यास, विश्व शान्ति का एक अनूठा विकल्प प्रस्तुत करता है।

प्रयोगवादी इस उपन्यास की सफलता और असफलता कोई मायने नहीं रखती। न ही मुझे इसके श्रेय की अभीप्सा है।

मेरा प्रयास युद्ध उन्मूलन की व्यवहारिक संकल्पनाओं को खोजकर प्रस्तुत करना है।

रूस यूक्रेन लड़ाई की पृष्ठभूमि तो मात्र एक बहाना है, इस उपन्यास के माध्यम से, विश्वशान्ति के कुछ बुनियादी उपायों को विश्व पटल पर रखना ही एकमात्र उद्देश्य है... और... वही, आपके हाथों में है।

शेष निःशेष सुधी पाठकों पर...

लेखक
राजकुमार चन्दन
पता : एल.आय.जी. 185,
जवाहर नगर, देवास (म.प्र.)
email: rajkumarchandan@gmail.com

वर्ल्ड पीस फोरम के हीरो
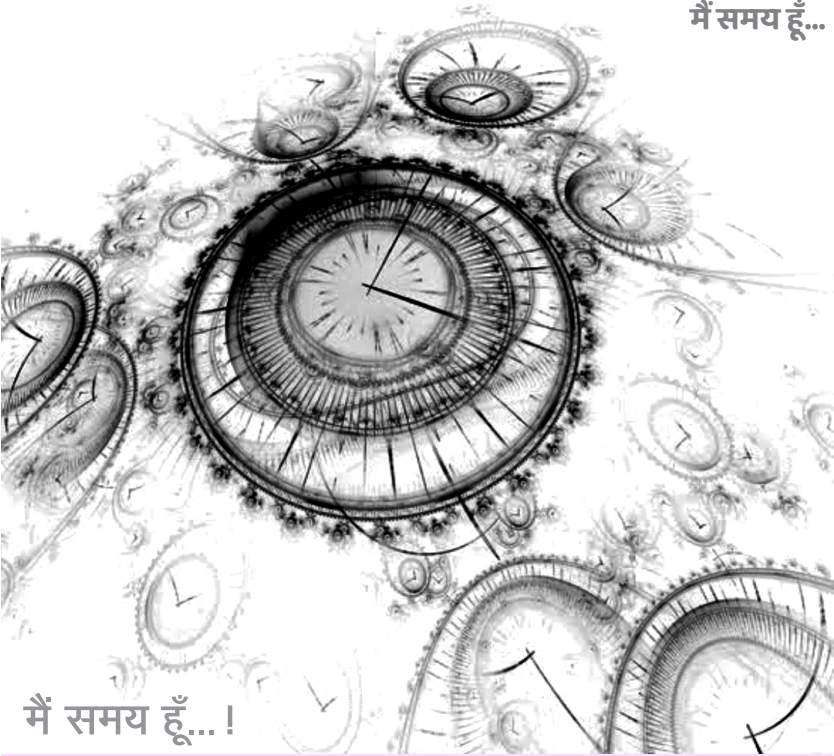
मैं समय हूँ... !

मैं समय हूँ...! सृष्टि के निर्माण का साक्षी। मैंने सौरमण्डल, तारे तथा कई ग्रहों को बनते-बिगड़ते देखा है। मैं, सब जगह पहले भी था, अभी भी हूँ... और आगे भी रहूँगा। पृथ्वी के जीवों की उत्पत्ति और विनष्टि का मैं साक्षी हूँ।

मैंने, पृथ्वी पर मानव की क्रमिक उत्पत्ति को भी देखा है। वानर वंश के समकक्ष एक प्रजाति, जिसे मानव कहा गया... जो बुद्धि के बल पर, पृथ्वी के असंख्य अन्य प्राणियों से अधिक शक्तिशाली बन गई। इस प्राणी ने खरबों जीवों पर अधिकार करके, पृथ्वी पर अपना एक अनूठा संसार रच लिया।

मनुष्य ने अन्य प्राणियों से अलग अपने लिए घर, परिवार, समाज, और राज्य बनाए। उसकी दिव्य चेतना ने परमात्मा के घर (मन्दिर) का निर्माण भी किया। अपार शक्ति-साधनों को निर्मित कर वह पृथ्वी पर, सम्राट की तरह रहने लगा। किन्तु उसकी बुद्धि अहंकार से ग्रसित हो गयी। उसने सदुपयोग की अपेक्षा, दुरूपयोग का मार्ग चुन लिया। उसके मिथ्या अहंकार ने मनुष्य समाज को नस्ल, जाति, धर्म, राज्य जैसे सैकड़ों खण्डों में

बाँट दिया। इन्हीं भेदों ने उसके दुर्भाग्य का मार्ग खोल दिया। अब उसकी समस्त ऊर्जा भय, अशान्ति व रक्तपात में बहने लगी। युद्ध, अशान्ति तथा लोभ के मानसिक रोग से वह ग्रसित हो गया।

सृष्टि ने मनुष्य को बुद्धि दी, परमात्मा तक पहुँचने के लिए, किन्तु वह पशुता की यात्रा पर निकल पड़ा। उसे अपने सब धर्म याद रहे, बस मनुष्यता का धर्म याद नहीं रहा। भ्रम व अहंकार को उसने जीवन का गौरव बना लिया।

पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक प्राणी का पहला धर्म है– सृष्टि के नियमों का पालन करना, जैसे सूर्य अपनी परिधि में रहकर, प्रकाश देता है। सभी ग्रह अपनी अपनी परिधि में कर्तव्य का पालन करते हैं, यह उनका धर्म है।

जैसे दीपक का धर्म प्रकाश प्रदान करना है। पशु का धर्म पशुता है। ऐसे ही मनुष्य का धर्म मनुष्यता है, किन्तु मनुष्य ने इस धर्म का पालन ठीक से नहीं किया। सृष्टि के समस्त नियमों को तोड़कर, उसने अपने अलग नियम बनाए। उसने परमात्मा को भी अपने अपने हिसाब से बाँट लिया। **यहीं से इस सौभाग्यशाली प्राणी की दुर्भाग्यपूर्ण की कहानी प्रारम्भ होती है। जिसका लेखक भी वह स्वयं ही है।**

मैं, मानव की उत्पत्ति पर यह सोचकर प्रसन्न था, कि पृथ्वी पर यह बुद्धिमान मनुष्य, प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ होगा। खरबों अन्य प्राणियों को शान्ति व सुरक्षा प्रदान करेगा, क्योंकि उसमें बुद्धि है, किन्तु हुआ इसके विपरीत। वह सभी प्राणियों का घोर शत्रु सिद्ध हुआ। उसने सभी जीवों को संकट में डालकर स्वयं को सम्राट बना लिया।

मैं समय, ...!

सम्पूर्ण मानव जाति को सचेत करने आया हूँ। अभी भी अवसर है, अहंकार व उपद्रव को त्यागकर... वह शान्तिपूर्ण जीवन यापन के उपायों की खोज करें, अन्यथा सम्पूर्ण मानव जाति का विनाश हो जाएगा। मिथ्या अहंकार की अग्नि में सब भस्म हो जाएगा। इसके अतिरिक्त पृथ्वी की खरबों प्रजाति नष्ट करने का, कलंक का भी मनुष्य पर ही होगा।

वह इस भ्रम में भी न रहे कि, उसके न रहने से पृथ्वी सूनी हो जाएगी। किसी के होने अथवा न होने से सृष्टि को कोई फर्क नहीं पड़ता। यहाँ कई

प्रजाति आयी और विदा हो गयी। पृथ्वी को क्या फर्क पड़ा?

मनुष्य नहीं होगा, तब भी सूर्य प्रतिदिन उदित होगा। समुद्र की लहरें यूँ ही उठती रहेंगी। हवाएँ ऐसे ही चलेंगी, फूल इसी तरह खिलते रहेंगे।

मैं साक्षी हूँ... जब पृथ्वी पर मानव नहीं था, तब यह अधिक सुन्दर व स्वस्थ थी। मानव ने उसके स्वरूप को कुरूप कर, तंत्रों को अस्तव्यस्त कर दिया। मनुष्य न होगा, तो पृथ्वी पर अधिक शान्ति होगी। अन्य प्राणी अधिक सुरक्षित ढंग से रह सकेंगे। मानव के उपद्रव से अन्य जीवों सहित... पेड़, पौधे, नदी, समुद्र, पहाड़ सब अशांत हैं।

मैं, सृष्टि का सहायक होने के नाते, मनुष्य जाति को सचेत करने आया हूँ।

यदि अभी भी मनुष्य ने, मनुष्यता के धर्म का पालन नहीं किया, तो उसकी विनष्टि सुनिश्चित है।

हाँ..! यदि मनुष्य सम्भलना चाहे तो, एक अवसर है... उसे अतीत की समस्त भूलों को सुधारकर, एक संतुलित जीवन की खोज करनी होगी। मस्तिष्क में चल रहे उपद्रव को शान्त करना होगा।

सृष्टि, बड़ी उदार है। वह मनुष्य को दिव्यतापूर्ण जीवन जीने का एक अवसर और प्रदान करना चाहती है। मैं सन्देश वाहक हूँ।

मैं, सृष्टि की ओर से.... सबका मार्गदर्शन करने आया हूँ। यद्यपि मेरे सन्देश व संकेतों को, वे ही समझ पाएँगे, जिनमें मनुष्यता अभी भी जीवित है। शेष मानवों को समझने में अड़चन होगी।

जो मेरा मार्गदर्शन चाहते हैं, जीवन के उपद्रव से मुक्ति चाहते हैं... वे सब मेरे साथ आ सकते हैं...

मैं उस क्षेत्र में ले चलता हूँ, जहाँ मनुष्य का अहंकार युद्ध के लिए हुँकार भर रहा है। यह पृथ्वी का यूरोप खण्ड है। बड़ा सुन्दर क्षेत्र है। इसमें रूस व यूक्रेन नामक राष्ट्र भी हैं।

यूक्रेन में भारतीय द्वीप सहित, अन्य द्वीप के शिक्षार्थी, चिकित्सा विषय का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। **इस सुन्दर भूमि पर रूस तथा यूक्रेन... अहंकार से वशीभूत होकर... युद्ध करने पर उतारू हैं।**

मैं समय...

इसी युद्ध भूमि से आधुनिक पात्रों, दृश्यों व घटनाओं में ढलकर एक कथाकार के रूप में, सबका मार्गदर्शन करूँगा। मूल रूप से... अस्तित्व का सन्देश, प्राणियों तक पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा।

मेरे संकेत व संदेशों को आत्मसात करने से, सम्पूर्ण प्राणियों का कल्याण होगा। समस्त कष्टों का नाश तथा पृथ्वी पर... सुख, समृद्धि व शान्ति का उदय होगा। **तुम सृष्टि की तरह उदार... निष्पक्ष और कोरे मस्तिष्क से मुझे पढ़ोगे, तो सरलता से मेरे संदेशों को समझ पाओगे...**

मैं, हर सम्भव आज की भाषा में ही समझाने का प्रयत्न करूँगा.....

सबसे पहले यूक्रेन की खूबसूरत राजधानी कीव में ले चलता हूँ।

कीव मेडिकल यूनिवर्सिटी के होस्टल में, एक भारतीय छात्रा हिमानी रहती है।

मैं इसी नायिका के माध्यम से, कथा को आरम्भ करता हूँ.....

मैं समय हूँ...!
हे मानव! तुझे हर प्रकार से समझाता चलूँगा.... बस तू मुझे किताब समझकर पढ़ता चल...

युद्ध की आहट

सुबह सुबह हिमानी ने रूम की खिड़की खोली, तो वह धूप से नहा गई। उसका रोम-रोम जैसे खिल उठा। बादलों के बीच किरणों की छनती हुई धूप में, वह कीव शहर की खूबसूरती देख रही थी। ऐसा लगता था, जैसे वह सपनों के शहर में आ गई हो। ऊँची-ऊँची इमारतें, कहीं बर्फ की झलक, कहीं हरियाली तो कहीं चटक रंगों के फूल। ऐश, बर्च, एल्म, तथा पाइन के सुन्दर ऊँचे पेड़। ऐसे सुहाने मौसम में उसका मन अपने आप तरंगित हो उठा। पिछले 3 दिनों से बर्फ गिर रही थी। माइनस 2 डिग्री टेंपरेचर की ठंड के बाद, आज की धूप बड़ी सुखद लग रही है।

खिड़की से जब उसने बाहर देखा, तो कीव शहर का वैभव से भरा दृश्य मोह रहा था। हॉस्टल से दो सौ मीटर की दूरी पर एक पोंड (तालाब) था, जो रात में चाँद की तरह लग रहा था। जनवरी से मार्च के बीच जब बर्फबारी होती, तब उसमें बर्फ जम जाती थी। दूर से वह किसी बर्फ के कटोरे के समान दिखाई देता था।

हिमानी बड़ी देर तक उसे निहारती रहती थी। फिर उसकी नजर अपने

आप आसमान की ओर उठ जाती। आसमान में बादलों से छनकर आती सूरज की किरणों को वह ध्यान से देखती रहती। आकाश की नीली गहराइयों में, बादलों की सफेद टुकड़ियाँ, मुलायम किरणों की लालिमा, परिंदों का आता-जाता काफिला, मन को मोह लेता है।

आकाश को देखकर हिमानी को असीम शान्ति का अनुभव होता है। उसे लगता है, जैसे वह अस्तित्व को देख रही है, जो ईश्वर का ही प्रतिबिम्ब है। किसी ने सच कहा है-सृष्टि को प्रेम की नजर से देखो, तो परमात्मा और बुद्धि की नजर से देखो तो केवल सृष्टि।

यूक्रेन 24 अगस्त 1991 को सोवियत रूस से स्वतंत्र हुआ तो, कीव उसकी राजधानी बना। यह यूक्रेन का सबसे बड़ा और खूबसूरत शहर है। इस शहर का सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व है। यह एक आध्यत्मिक शहर भी है। इसीलिये यहाँ सेन्ट एन्ड्रूज के स्टेच्यू दिखाई पड़ जाते हैं। वे यहाँ के बड़े सन्त हुए हैं। इस शहर में प्रिसेंस ओल्गा का स्टेच्यू व राष्ट्रनायक सिरिल की विशाल प्रतिमाएँ भी आकर्षण का केन्द्र हैं। यहाँ की खूबसूरती और शानदार जीवन शैली लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

कीव को हीरो सिटी का दर्जा प्राप्त है। 1941 में नाजियों ने इस शहर को चारों तरफ से घेर लिया था, तब कीव के लोगों ने कड़ा मुकाबला किया था। सोवियत रूस से यह सम्मान उसी बहादुरी के रूप में मिला था। सामान्यतः यहाँ के आम लोग साहसी, संघर्षशील, शिक्षित व उन्नत हैं।

कीव का प्राकृतिक सौंदर्य, परम्परागत संगीत और नृत्य, मन को खूब लुभाता है। लोग खाने-पीने के बहुत शौकीन हैं। शहर के होटल्स, कैफे, रेस्टोरेंट तथा मैकडॉनल्ड्स में हमेशा रौनक बनी रहती है।

हिमानी, पिछले 5 वर्षों से यहाँ रह रही है। वह भारत के मध्यप्रदेश की रहने वाली छात्रा है, उसका कीव मेडिकल यूनिवर्सिटी में एमबीबीएस का यह अंतिम वर्ष चल रहा है। होलविस्का स्टेट हॉस्टल के नवें फ्लोर पर वह रहती है। हॉस्टल में लगभग 570 स्टूडेंट्स हैं, जिनमें 85% भारतीय हैं।

इस कैम्पस में तीन बिल्डिंग्स हैं, जिनमें अलग-अलग देशों के स्टूडेंट्स रहते हैं।

हॉस्टल की 'ए' बिल्डिंग में इंडियन के साथ ही चीन, भूटान, पाकिस्तान,

और बांग्लादेश के स्टूडेंट्स हैं। इंडियन मेस है। हॉस्टल वार्डन एक रशियन है, जो सन्त वृत्ति का बड़ा भला आदमी है। यहाँ एक लाइब्रेरी है, इसके हेड गोपाल जी हैं, जो भारतीय मूल के हैं।

हिमानी के साथ उसकी दो रूम पार्टनर है। ईशा थापा, जो नेपाल के काठमांडू की रहने वाली है। ईशा बोलती बहुत ज्यादा है, लेकिन दिल की बहुत साफ है। दूसरी पार्टनर है जया गुरुंग, जो थोड़े गम्भीर मिजाज की है और भूटान के थिम्पू के एक कस्बे की रहने वाली है। पास के रूम में सायना व अलीशा रहती है, ये पाकिस्तान और बांग्लादेश की हैं। दूसरी तरफ भारत, हर्ष, और अवि का रूम है। लगभग 4-5 वर्षों से ये एक साथ रह रहे हैं। इनमें एक-दूसरे के प्रति गहरी मित्रता है। **हिमानी बुद्धिमान, साहसी, संस्कारवान एवं प्रतिभाशाली छात्रा है। वह कीव यूनिवर्सिटी में भारतीय स्टूडेंट्स की रिप्रेजेंटेटिव भी है। अतः हॉस्टल में उसे सबका ध्यान रखना पड़ता है। हालाँकि इनमें अधिकतम भारतीय हैं, जिनके बीच परस्पर गहरा सम्बन्ध है। एक दूसरे की परेशानी में सब साथ खड़े रहते हैं। चुनौतियों का सामना मिलकर करते हैं। इनमें दोस्ती का इतना गहरा प्रेम है, कि इनके बीच देश, धर्म और सीमा आड़े नहीं आती।**

जया और ईशा का ब्लाइंड स्पोर्ट हिमानी को और मजबूत बना देता है।

4 से 5 महीने बाद उसे डॉक्टर की डिग्री मिलने वाली है। यही सोचकर यह वह रोमांचित हो जाती है, क्योंकि यहाँ तक पहुँचने के लिए उसने एक बड़ा संघर्ष किया है।

हिमानी के पिता भारत में अध्यापक थे, जो अब रिटायर हो गए हैं। माँ बहुत ही सरल स्वभाव की गृहिणी है। माता-पिता धार्मिक वृत्ति के हैं, अतः हिमानी को वेद, पुराणों का संस्कारगत ज्ञान प्राप्त है। उनका सपना था कि, बेटी डॉक्टर बनकर लोगों की सेवा करे, किन्तु आर्थिक स्थिति बहुत ठीक नहीं थी, इसलिये भारत सरकार की स्कॉलरशिप तथा पिता के बैंक लोन की मदद से वह यहाँ तक पहुँच पाई थी। छोटी बहन मानसी, जो अभी आठवीं में पढ़ रही है, हिमानी को उसके कॅरियर की चिंता भी बनी रहती है। हालाँकि उसे संतोष है। कुछ ही महीनों में डॉक्टर बनने जा रही है, अब वह अपने माता-पिता को आराम देकर उनका सपना पूरा कर सकती है।

हिमानी अभी भी आकाश को देख रही थी, उसकी विशाल नीली गहराईयों में वह खोई हुई थी, कि अचानक उसे भारी भरकम गड़गड़ाती आवाज ने चौंका दिया। उसने देखा... मेन रोड पर बख्तरबंद गाड़ियाँ, टैंक और सैनिकों का काफिला जा रहा है। उसपर यूक्रेनी मार्क दिखाई दे रहा है। सेना की हलचल देखकर उसके मन में सिरहन सी दौड़ गई।

उसे याद आया, पिछले कुछ महीनों से यूक्रेन-रशिया के बीच तनाव का माहौल बना हुआ है। अपने-अपने हितों को साधने में दोनों देश अपनी जिद पर अड़े थे। नाटो इसका तीसरा पक्ष है, जो यूक्रेन के साथ में खड़ा था। निरंतर इनके बीच तनाव बढ़ता ही जा रहा है। शायद ये हलचल उसी तनाव का हिस्सा है।

यह सब देखकर उसे अजीब सा डर सताने लगा। स्थिति कब, कितनी बिगड़ जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। उसने सोचा.... **पृथ्वी पर केवल आदमी ही ऐसा प्राणी है, जो अपनी मौत का सामान खुद इकट्ठा करता है। इतनी खोजों के बाद भी आदमी शान्ति से रहने की खोज नहीं कर पाया।**

क्या समस्याओं का हल, आपसी समझ बनाकर नहीं कर सकते?

आप जंग शुरू तो कर सकते हैं, लेकिन उसे खत्म नहीं कर सकते। युद्ध किसी भी समस्या का हल नहीं, फिर भी इन्सान युद्ध करता है।

पूरी दुनिया आँखें बंद करके चल रही है। उसे मंजिल पर पहुँचना है, तो आँख तो खोलना ही पड़ेगी।

यदि मनुष्य पशुओं की तरह ही लड़ता है, तो फिर उसे मनुष्य होने का गर्व छोड़ देना चाहिए।

आज का दिन पूरा व्यस्तता में रहा। रात कब हो गयी, पता ही नहीं चला। डिनर के बाद हिमानी को नींद की खुमारी आने लगी थी, लेकिन सोने से पहले उसकी आदत डेली डायरी लिखने की थी। अतः वह कसमसाकर डेली डायरी लिखने बैठ गयी। हिमानी ने डायरी उठाई और लिखना शुरू किया....

सबसे पहले उसने आज का विचार लिखा -

'स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।"

- लोकमान्य तिलक

उसके बाद उसने लिखा..... आज हम सब कीव के फ्रीडम स्क्वेयर घूमने गए। बहुत बड़ा स्क्वेअर (चौराहा)। इसके चारों तरफ विशालकाय इमारतें। स्क्वेअर का मुख्य आकर्षण, वहाँ लगी स्वतन्त्रता देवी की विशाल प्रतिमा है। एक बहुत ऊँचे गोल स्तम्भ पर स्वतन्त्रता देवी की यह प्रतिमा यूक्रेन की शान मानी जाती है।

स्क्वेअर के सामने एक विशाल सेन्ट्रल पार्क है। यहाँ आने वाले दर्शक इसी पार्क में बैठकर मनोरंजन करते हैं। युद्ध की आशंका से आज यहाँ भीड़ कम है। इस स्क्वेअर पर आने से स्वतन्त्र होने की गरिमा का अहसास अपने

आप होता है।

पशु-पक्षी, कीट-पतंगा या कोई भी प्राणी हो, स्वतन्त्र रहने की चाह सबमें होती है। हर प्राणी स्वतन्त्र रहना चाहता है, लेकिन स्वतन्त्र रहने का अर्थ आवारगी नहीं है। स्वतन्त्र होने का अर्थ है आत्म अनुशासन, खुद पर खुद का अनुशासन, जो स्वयं को संभालकर रखता है।

स्वतन्त्रता का आधार सहअस्तित्व है। जिस प्रकार से आकाश में, ग्रह-तारे, पिंड सब स्वतन्त्र हैं। लेकिन सब अपनी-अपनी परिधि में रहते हैं। सौर मंडल का पूरा एक परिवार है। कोई किसी के लिए रुकावट नहीं बनता। और उन सबके बीच में गहरा सम्बन्ध भी है। सब हिलमिलकर परिवार की तरह अपना काम करते हैं। तभी तो सृष्टि की इतनी बड़ी व्यवस्था चलती है।

पृथ्वी पर वसुधैव कुटुम्बकम् की कल्पना सौरमण्डल के परिवार का ही प्रतिरूप है।

सृष्टि के नियम अटल हैं। वे कभी बदलते नहीं, अतः पृथ्वी पर जीने के लिए हर प्राणी को सृष्टि के सिद्धान्तों पर ही जीना चाहिए।

- हिमानी

मैं समय हूँ...!
पुस्तक तो एक बहाना है, यूँ समझ तू मुझे ही पढ़ रहा है।

इस्कॉन मन्दिर

आज संडे का दिन था। इसलिए हिमानी और उसकी मित्र मंडली इस्कान मंदिर दर्शन के लिए निकले थे। हॉस्टल से लगभग 300 मीटर की दूरी पर रायजीन स्क्वेयर के बस स्टॉप पर वे खड़े होकर, बस का इंतजार करने लगे। 56 नंबर की बस आज अपने निर्धारित टाइम से 5 मिनट लेट आयी। जैसे ही बस खड़ी हुई, सबसे पहले ईशा चढ़ी, उसने अपना यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स कार्ड मशीन में पुश किया और सीट पर बैठ गयी। वैसे ही जया और हिमानी बैठ गयी। यहाँ छात्राओं के लिए बस सुविधा फ्री है। फिर अवि ने मशीन में सिक्के डाले, और बैठ गया। इसी प्रकार से सब बैठ गए।

यूक्रेन में लगभग 52 इस्कॉन मंदिर हैं। 30 से अधिक इसके धर्मार्थ मिशन हैं, साथ ही लगभग 40,000 अनुयाई हैं।

इस देश में योग की शाखाएँ भी चलती हैं, यूक्रेन का वासुदेव योग संघ और अष्टांग योग क्लब, योग की शिक्षा देने वाले बड़े संगठन हैं। सहज योग एक ध्यान की विधि है, जो मानव जीवन को उन्नत करने का प्रयास करती है।

कीव में योग के दो मुख्य केंद्र हैं- वज्र और इंडिया क्लब। ये सिटी सेंटर में स्थित हैं। कीव में ही यूक्रेनियन ऑफ योग स्कूल की कई स्थानों पर शाखाएँ भी हैं।

इस्कॉन मंदिर में हिमानी पिछले 4 वर्षों से दर्शन, पूजन के लिए अक्सर आती रहती है। मंदिर के प्रभुजी भी भारतीय मूल के हैं। हिमानी से भली भांति परिचित हैं। जब भारतीय स्टूडेंट जाते हैं, तो वे बड़े खुश होते हैं। इन्हें बैठाकर जीवन दर्शन का ज्ञान प्रदान करते हैं। हिमानी उनके अमृतवचनों से बहुत प्रभावित है।

लगभग 40 मिनट सफर करने के बाद गाड़ी इस्कॉन मंदिर के सामने आकर रुकी। हिमानी, जया, ईशा, भारत, हर्ष और अवि सभी उतर गए, इनके साथ फिरोज और वांग शी भी थे।

हिमानी ने मंदिर को देखा, तो उसका मन प्रफुल्लित हो गया। इस्कॉन मन्दिर दुनिया में लगभग एक जैसे ही हैं। वही तीन बड़े-बड़े भवन, सुन्दर परिसर। उसे यहाँ का हर दृश्य बहुत लुभाता है। आसपास की हरियाली, मन को मोह लेती थी। मंदिर प्रांगण का पार्क बड़ा ही खूबसूरत बना हुआ है। मेंपिल, ऐश और पाईन के पेड़.. क्यारियों में रोज़, जैस्मीन, लीली, ट्यूबरोज के रंग बिरंगे फूल। उनकी मोहक गंध तथा आध्यात्मिक वातावरण, मन को असीम शान्ति देते हैं।

मंदिर में ज्यादातर यूरोपीय भक्तगण रहते हैं, जो कृष्ण भक्ति में लीन होकर भजन गाते हुए नृत्य करते दिखाई देते हैं। कुछ भक्त एकांत में ध्यान की

अवस्था में शांत बैठे हुए हैं।

थोड़े समय पश्चात सभी मंदिर की सीढ़ियों के सामने पहुँच चुके थे। सभी ने हाथ पैर धोए। हिमानी केबिन से पूजा की बास्केट लेकर आई, और... सब मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ गए। मन्दिर का यह एक बड़ा हॉल था, जिसके अंतिम भाग के मध्य में राधा-कृष्ण की मूर्ति स्थापित है। ये प्रतिमा बड़ी ही सुंदर और सजीव दिखाई पड़ रही है।

हिमानी जया ने पूजा अर्चना की, पुष्प चढ़ाए, प्रार्थना की। फिर हॉल के एक साइड जाकर ध्यान की अवस्था में बैठ गयी, यही अनुसरण उसके साथियों ने भी किया।

लगभग 15 मिनट प्रभु स्मरण के पश्चात प्रभुजी (पुजारी) के कक्ष की ओर पहुँचे। मंदिर के साइड से लगा हुआ प्रभुजी का कक्ष था, जिसके बाहर वे आसन लगाकर शांत अवस्था में बैठे थे। प्रभुजी भारतीय मूल के थे और यहाँ के मुख्य पुजारी (प्रभुजी) थे। भारतीय छात्रों को देखकर उन्होंने कहा-

आओ बच्चों... बैठो... हिमानी सहित सभी ने उनके चरण स्पर्श किए। थोड़ी ही देर के पश्चात वे इनके पास आकर बैठ गए।

प्रभुजी ने हिमानी से पूछा - कैसी हो बेटी?

हिमानी ने कहा - आपकी कृपा से मैं ठीक हूँ।

कुछ पल शान्त रहने के पश्चात वह फिर बोली - कुछ प्रश्नों के हल प्राप्त करने की जिज्ञासा है... प्रभु जी!

प्रभुजी - पूछो बेटी... क्या पूछना है?

हिमानी- मनुष्य और पशु में क्या अंतर है प्रभुजी?

प्रभु जी कुछ देर शांत रहे फिर बोले - **पशु पाश में बँधा है, इसलिए वह परतंत्र है, मनुष्य पाश मुक्त है, इसलिए वह स्वतंत्र है। दोनों प्राणियों में केवल विचार का अंतर है...। पशु लड़ता है, या भाग जाता है, उसके पास बीच का मार्ग नहीं है, किन्तु मनुष्य के पास इन दोनों के बीच का मार्ग भी है। पशु का जीवन मूर्छा का जीवन है और मनुष्य का का जीवन चैतन्यता का।**

हिमानी - फिर इतना बुद्धिमान मनुष्य भी पशुओं की तरह युद्ध क्यों करता है?

प्रभुजी - **केवल बुद्धि होना पर्याप्त नहीं है, बुद्धि पदार्थ की खोज कर सकती है, परमात्मा की नहीं। परमात्मा की खोज तो हृदय से प्रारम्भ होती है... चैतन्यता के बिना जीवन मूर्छित है। मिट्टी के सुंदर बुझे हुए, दीपक के समान है... मनुष्य युद्ध नहीं करता, युद्ध उसका अहंकार करता है।**

हिमानी ने फिर प्रश्न किया - दुनिया में लोग रात दिन शास्त्र पढ़ते हैं, फिर भी मूर्छा में क्यों जीते हैं?

प्रभुजी विचार करते हुए बोले - **लोग मूर्छा में रहकर यदि शास्त्र पढ़ते हैं, तो वे शास्त्र नहीं पढ़ते, शास्त्र में वे स्वयं को पढ़ते हैं। इसलिये मनुष्य को उनका पूरा लाभ नहीं मिलता। फिर जो स्वयं को नहीं पढ़ता, उसका शास्त्र पढ़ना या न पढ़ना बराबर है...।**

मूर्छित व्यक्ति अत्यधिक अहंकारी व क्रोधी होते हैं। इनकी मूर्छा ही उपद्रव का कारण बनती है। आज का मनुष्य भी नींद के नशे में स्वर्ग की सैर कर रहा है।

हिमानी - तो क्या वह सत्य को नहीं जानता?

प्रभुजी - **सत्य को जानना इतना सरल नहीं है। उसे जान लेना ही मनुष्य की परम अवस्था है। सत्य को समझने के बाद, फिर कुछ जानने को शेष नहीं रहता...। सत्य कभी अलग-अलग नहीं होता। किन्तु यहाँ तो पूरी पृथ्वी पर सबके अपने अपने सत्य हैं... बस यही उसकी मूर्छा है। यहीं से मानव के सभी विकार जन्म लेते हैं। यही कारण है कि, संसार में प्रत्येक व्यक्ति का विचार, एक दूसरे के विपरीत खड़ा है। सत्य कभी विपरीत नहीं होता है....।**

ईशा ने कहा- कुछ समझ में नहीं आया प्रभुजी।

कुछ पल प्रभुजी मौन रहे, फिर बोले- तुमको थोड़ा सरल तरीके से समझाने की कोशिश करता हूँ। इस उदाहरण से तुम समझ सकती हो।

यूनान में एक महान खगोलविद हुआ। उसका नाम था क्लॉडियस टॉलोमी। उसने 140 ईस्वी पूर्व एक खोज की थी। खोज में उसने पता लगाया कि सौरमण्डल का केंद्र पृथ्वी है और सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है।

टॉलोमी उस समय यूनान का महान खगोलविद था। अतः इसे पूरी दुनिया ने स्वीकार किया और विश्व के लिए यह सत्य हो गया। दुनिया यह मानती रही कि, सूर्य पृथ्वी के चक्कर लगाता है।

लगभग 17 सौ वर्षों तक सूर्य पृथ्वी के चक्कर लगाता रहा...। फिर 1514 के बाद कोपरनिकस ने इस सिद्धांत को सिरे से उलट दिया। उसने ये सिद्ध किया कि, सूर्य पृथ्वी के चक्कर नहीं लगाता, बल्कि पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है। कई और वैज्ञानिकों ने भी इस सिद्धान्त को मान्यता दी। फिर क्या था, अब पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है। पहले दुनिया के लिए वह सत्य था। अब दुनिया के लिए यह सत्य है। वास्तव में सत्य क्या है, ये किसी को पता नहीं... आगे फिर कोई नई थ्योरी आ जाएगी, तो दुनिया के लिए वह सत्य हो जाएगा। आदमी जितना जानता है, उसके लिए उतना ही सत्य है।

साधारणतः लाखों लोग जिसे सत्य मानते हैं, उसे आदमी सत्य समझने लगता है, किन्तु जरूरी नहीं कि वो सत्य हो। इसलिए किसी का भी सत्य मान लेना आसान है। क्योंकि मान लेने में कोई दिक्कत ही नहीं है। किसी ने कहा कि यह सत्य है, तो मान लिया, कहाँ दिक्कत है। लेकिन वास्तव में, सत्य को जानना, समझना हो, तो वह आसान नहीं है।

ऐसे में मनुष्य को क्या करना चाहिए? यह प्रश्न भारत का था।

प्रभुजी बोले- अपनी भीतरी समझ को विकसित करना चाहिए। वही सत्य तक ले जाता है।

विश्व में सुख, समृद्धि और शान्ति कैसे आ सकती है? अवि जो अब तक चुप बैठा था उसने पूछा।

इस अशान्त भौतिक दुनिया में सुख, समृद्धि और शान्ति से जीने का केवल एक ही मूल मन्त्र है- **वसुधैव कुटुम्बकम्....**

अवि - क्या वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना ऐसे युग में सम्भव हो सकती है?

प्रभुजी - **बिल्कुल सम्भव है। संयुक्त राष्ट्रसंघ वसुधैव कुटुम्बकम् का ही एक रूप है। किन्तु वह अशुद्ध रूप है। यदि वह पूर्ण शुद्ध हो जाये, तो दुनिया में शान्ति व समृद्धि आ सकती है।**

इसी बीच हिमानी ने अपने बैग से साधना कुंज पत्रिका निकाली और प्रभुजी को भेंट कर चरण स्पर्श किये। प्रभुजी ने आशीर्वाद दिया, फिर हिमानी ने कहा, अब हमें आज्ञा दीजिए प्रभुजी। थोड़ी ही देर के पश्चात सभी स्टूडेंट्स हॉस्टल की ओर निकल पड़े।

रात 10.30 बज रहे थे। हिमानी को सोने से पहले डेली डायरी लिखना थी। जया और ईशा अपने अपने बेड पर सो गए। अतः हिमानी ने डेली डायरी निकाली और उसे लिखने बैठ गयी। डायरी में वह सबसे पहले किसी महापुरुष का सद्विचार लिखती थी। फिर अपना आज का अनुभव। उसने मोबाइल उठाया उसमें सद्विचार ढूँढा और लिखा -

भूमि मेरी माता है, और मैं पृथ्वीपुत्र हूँ
- अथर्व वेद

हिमानी ने यह सद्विचार अपनी डायरी में लिखा। थोड़ी देर वह सोचती रही, फिर आगे उसने लिखना शुरू किया- अथर्व वेद का यह वाक्य कितना श्रेष्ठ है। इसमें कितने गहरे विचार हैं, जिसमें भूमि को माता माना गया है और स्वयं को उसका पुत्र। इसमें वसुधैव कुटुम्बकम् का गहरा संदेश छुपा है।

पृथ्वी पर रहने वाला मनुष्य यदि इस वाक्य को समझ ले, तो युद्ध और उपद्रव हमेशा के लिए दूर हो सकते हैं।

युद्ध से बचने के ऐसे कई मंत्र पृथ्वी पर मौजूद हैं, लेकिन आज का आदमी इगो के नशे में इतना चूर है, वह इस बीमारी का इलाज करना ही नहीं चाहता। इलाज करना तो दूर, बीमारी को बढ़ाने में अपनी शान समझता है। युद्ध के लिये उतावला है। हथियारों के निर्माण में पागल हो रहा है। जो देश हथियार बना सकते हैं, वे उसका व्यापार कर रहे हैं और जो बना नहीं सकते, वे खरीद रहे हैं। हथियारों की होड़ मे पागलों की तरह दौड़ रहे हैं।

इसमें सबसे बड़ा दोष वैज्ञानिकों का दिखाई देता है जिन्होंने सबकुछ समझकर भी परमाणु हथियारों को बनाया। मुझे प्रसिद्ध वैज्ञानिक थामस अल्वा

एडिसन की बात याद आती है, उन्होंने लिखा है कि **–मुझे इस बात पर गर्व है, कि मैंने जीवन में एक भी हथियार का आविष्कार नहीं किया।**

वैज्ञानिकों को इस बात का तो अफसोस होना ही चाहिए, कि सदियों की लाखों खोजों के कारण इस सुन्दर विश्व की निर्माण हुआ है, उसे परमाणु की एक खोज मिनटों मे नष्ट कर दे, तो ऐसी खोज का क्या मतलब? अब खोज इसकी होना चाहिए कि परमाणु हथियार समाप्त कैसे हो?

आने वाले समय में एक बात तो स्पष्ट दिखाई दे रही है, कि पृथ्वी पर या तो परमाणु बम रह सकते हैं या हम, दोनों एक साथ नहीं रह सकते। मनुष्य सौभाग्यशाली है, कि यह फैसला भी उसके हाथ में है, दोनों में से कौन रहेगा?

नीचे हिमानी ने अपने साइन किये। डायरी बन्द की। फिर मेन लाइट का स्विच ऑफ किया और सो गयी।

संकट के बादल...

धीरे-धीरे हिमानी की चिन्ता बढ़ती जा रही थी। हर दिन रूस और यूक्रेन के बीच तनाव गहराता जा रहा था।

रशिया ने यूक्रेन के तीन तरफ लगभग डेढ़ लाख सैनिकों का जमावड़ा कर लिया था। इसके साथ ही कई विनाशकारी हथियार भी डिप्लॉय कर दिए। इससे यूक्रेन में भारी उथल-पुथल का माहौल बन गया। पूरे देश में आक्रोश व भय नजर आ रहा है। कहीं ये स्थिति युद्ध में न बदल जाए। यही सोचकर उसकी चिन्ता बढ़ रही थी।

यूक्रेन, नाटो की सदस्यता चाहता है। रशिया को यह किसी कीमत पर मंजूर नहीं था। यूरोपीय यूनियन तथा नाटो यूक्रेन के साथ खड़े हैं। इस कारण रूस और ज्यादा आक्रामक हो गया। रूस की डेढ़ लाख सेना ने यूक्रेन को तीन तरफ से घेर रखा है। उत्तर में बेलारूस, दक्षिण में काला सागर, क्रीमिया और पूर्व में रूस पहले से ही वह मौजूद है। नाटो ने भी पोलैंड, हंगरी और रोमानिया में अपनी सैन्य शक्ति बढ़ा दी। अमेरिका यूक्रेन की हर तरह से मदद को तैयार दिखाई पड़ता है। बस यही रूस को मंजूर नहीं है। रूस कई बार यूक्रेन को धमकी दे चुका है कि, अगर वह नाटो की तरफ जाएगा, तो इसके गम्भीर परिणाम भुगतने होंगे। स्थिति बड़ी नाजुक बन गयी है। यदि संभल नहीं पाई तो विकराल रूप ले सकती है।

एक तरफ रूस महाशक्तिशाली देश है। उसके साथ चायना, उत्तरी कोरिया, ईरान जैसे कई बड़े देश खड़े दिखाई देते हैं, तो दूसरी तरफ सुपरपॉवर

अमेरिका सहित नाटो के 30 देश हैं। यह टकराव विश्व की महाशक्तियों के बीच भी हो सकता है।

यूरोप में ऐसी बिगड़ी हुई परिस्थिति विश्वयुद्ध का रूप भी ले सकती है। परमाणु के युग में विश्वयुद्ध का मतलब है...महाविनाश!

हिमानी ने जब इन परिस्थितियों पर विचार किया, तो उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई। उसे लगा कि, जितनी जल्दी हो सके, अपने देश चले जाना चाहिए। बाहर के सभी स्टूडेंट्स भी अपने देश लौटने को चिंतित थे, किंतु उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था, कि वे क्या करें। वे यूनिवर्सिटी से मांग कर रहे थे, कि उन्हें ऑनलाइन क्लासेस की परमिशन दी जाए, जिससे वे अपने देश में जाकर पढ़ाई कर सकें। बिना परमिशन के स्टूडेंट जा नहीं सकते थे, क्योंकि यूनिवर्सिटी के मानक नियमों के अनुसार कोई भी चूक होने पर, उनपर फाइन किया जा सकता था।

हिमानी के मन में बार-बार एक ही सवाल गूँज रहा था, कि **युद्ध के बजाय इंसान शान्ति से रहने का तरीका क्यों नहीं खोज लेता? यदि नहीं खोज सकता, तो फिर उसकी सारी खोजें बेकार हैं.. उसके विकसित होने का कोई अर्थ नहीं है।**

हिमानी को याद आया कि, मम्मी ने आते वक्त उसके बैग में एक पुस्तक रखी थी **'मैं समय हूँ...'** और कहा था कि -जब भी टाइम मिले यह जरूर पढ़ना। इसमें युद्ध और सीमा समस्याओं के हल हैं। और विश्वशान्ति के मंत्र भी हैं। इस पुस्तक के साथ ही मम्मी ने **'साधना कुंज'** नाम की अध्यात्मिक

पत्रिका भी रख दी थी, जिसे वह प्रभुजी को भेंट कर चुकी थी।

हिमानी पुस्तक तो ले आयी थी, किंतु अभी तक उसने, इन्हें खोलकर नहीं देखा था। फिर उसे माँ की कही बात याद आती है- **जीवन के अँधेरे में पुस्तक दीपक के समान काम करती है। इसे पढ़ने वाला कभी नहीं हारता। पुस्तक से सच्चा और कोई मित्र नहीं....।**

हिमानी का मन बड़ा विचलित था। चिंताओं से ध्यान हटाने के लिए इसे पढ़ने का मन हुआ। उसने अलमिरा खोलकर एक बैग उठाया, फिर उसे खोला, ऊपर का सामान हटाकर पुस्तक निकाली और बैग रख दिया। ईशा उसे देख रही थी उसने पूछा -

कौन सी बुक है ये?

उसने कहा -इंडियन राइटर की है '**मैं समय हूँ...**'। वह फिर बोली- मम्मी ने कहा था, इसे एक बार जरूर पढ़ना।

ईशा ने एक नजर पुस्तक पर डाली, फिर बेकार सा मुँह बनाकर बोली- इतने एडवांस जमाने में भी लोग पुस्तक पढ़ रहे हैं और अपने काम में लग गयी।

हिमानी पुस्तक लेकर बैठ गई, उसने पुस्तक को ध्यान से देखा, फिर उसे पढ़ने लगी। सबसे पहले लेखक के विचार पढ़े। फिर प्रस्तावना...

धीरे-धीरे अब उसकी जिज्ञासा बढ़ने लगी... उसे लगा कि इस पुस्तक को पढ़ना चाहिए... और वह पुस्तक पढ़ती चली गई...

उसने पढ़ा, **दो देशों के बीच नफरत के कारण**-अहंकार की भावना, दूसरे से श्रेष्ठ होने की भावना का प्रदर्शन अहंकार का ही रूप है, जो श्रेष्ठ है उसे प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं होती। उसकी श्रेष्ठता तो खुशबू की तरह स्वतः फैलती है। किन्तु जो अतिरिक्त प्रदर्शन करता है, वह बहुत गहरे में दूसरे को निम्न बताने की घोषणा करता है। यहीं से नफरत का जन्म होता है। इस अहं से राजा हो, रंक हो या फकीर... कोई नहीं बच पाता।

अहंकार के कई कई रूप हैं। यह 99% लोगों में होता है। मनुष्य से मनुष्य के बीच जो भेद हैं, वह सब अहंकार के ही भेद हैं। मनुष्य को श्रेष्ठ और ज्ञानी या बड़ा होने का अहंकार पकड़ ही लेता है। जो दोनों देशों के बीच नफरत का कारण बनता है।

सामान्यतः मनुष्य भ्रम में ही जीता है। भ्रम में जीने का अर्थ है - **झूठे**

विचारों के अधीन होकर जीना। आदमी जितना है, स्वयं को उससे ज्यादा समझना। या फिर जितना है, उससे कम समझना। यही भ्रम है। आदमी जितना है, उतना ही समझे तो कोई भ्रम नहीं है। भ्रम या तो अहंकार पैदा करता है या डर। दोनों ही स्थिति विनाश का कारण बनती हैं। पड़ोसी देश अक्सर कन्फ्यूजन में ही जीते हैं। जिससे नफरत पैदा होती है।

यदि लोगों की भावना नकारात्मक हो, तो हर काम आपको उल्टे दिखाई पड़ते हैं। हर चीज में बुराई नजर आने लगती है। यही नजरिया झगड़े का कारण बन जाता है। हर अच्छे व्यक्ति को बुरा आदमी पूरा गलत लगता है और हर बुरे व्यक्ति को अच्छा आदमी गलत। यही भावना दो पड़ोसी देशों में प्रेम खत्म कर देती है।

●

मैं समय हूँ... !
तुझे तेरी ही भाषा में समझा रहा हूँ... बस तू ऐसे ही मुझे पढ़ते जा...

प्रेमी आकाश...

सुबह उठते ही हिमानी की नजर घड़ी पर पड़ी। 6 बजकर 20 मिनट हो चुके थे। आज उसकी नींद थोड़ी देर से खुली। आँखें मलकर उठते हुए, सबसे पहले उसने खिड़की खोली। खिड़की खोलते ही वह सूरज की रोशनी में नहा गई। सुबह की इस रोशनी में बाहर का नजारा बड़ा खूबसूरत दिखाई दे रहा था। पेड़ों के बीच ऊँची-ऊँची इमारतें। उनके सामने गार्डन बड़े आकर्षक लग रहे थे।

धीरे धीरे उसकी नजर आकाश की ओर उठीं। विशालतम नीला आकाश, बिल्कुल शान्त। जितना विराट, उतना ही गहरा, झुका हुआ, जैसे अभिमान वह जानता ही नहीं। आसमान में कहीं-कहीं बादलों का काफिला घूम रहा था। बादलों से छनकर आ रही सूरज की किरणें, अलग-अलग दिशाओं में फैलकर बड़ा सुन्दर दृश्य बना रही थी। पक्षियों के आते जाते झुण्ड इस मन्ज़र को और भी दिलकश बना रहे थे।

हिमानी को आकाश देखना बहुत पसंद था। जब भी वह तनाव में होती थी, तब ऊपर जाकर आकाश को देखती रहती। उसे देखते-देखते, उसी में खो जाती थी। उसके बाद वह बड़ा रिलैक्स महसूस करती थी।

जैसे फूल की तरह खिल गयी हो। भारत में भी वह अपने घर की छत पर अक्सर आकाश को देखा करती थी। जाने क्यों, हिमानी को आकाश अपनी ओर आकर्षित करता था। ऐसा लगता था, जैसे उसे वह अपनी ओर खींच रहा हो।

फिर अचानक हिमानी का ध्यान भंग हुआ। उसे लगा, जैसे किसी ने कान के पास चुटकी बजाई। उसने देखा, ईशा उसके पास खड़ी थी। वह उलाहना मारते हुए बोली

- हो गया महारानी अपने लवर का दीदार... कि अभी जी नहीं भरा। आज तैयार नहीं होना है क्या?

- तू हमेशा पागलों जैसी ही बात मत किया कर। हिमानी उससे बोली।

इस बीच जया जो, मोबाइल पर कुछ देख रही थी बोल पड़ी

- ईशा तो सिर्फ पागलों जैसी बात करती है लेकिन तू तो आकाश के पीछे बिल्कुल पागल हो गयी है।

ईशा ने हिमानी से फिर कहा- चल छोड़ अपने लवर को, तैयार हो जा... बहुत काम करने हैं। हिमानी ने ईशा को गुस्से भरी नजर से देखा और बाथरूम

की ओर चल पड़ी। ईशा खिड़की के पास आयी, फिर आकाश को देखते हुए बोली- यार मैं भी तो देखूँ, इस स्काई में ऐसा क्या दिखता है, इस इंडियन महारानी को।

जया गुस्से में बोली- सुबह सुबह दिमाग मत खा... तू भी तैयार हो जा।

- आज बिल्ली कित्ता भाव खा रही है..... कहते हुए ईशा बाथरूम की ओर चली गई।

- क्यों रे, बिना लड़े तुम्हारा खाना हजम नहीं होता?

अचानक दरवाजे से आवाज आयी। यह सायना थी, इन तीनों की सहेली, जो पाकिस्तान के रावलपिंडी की रहने वाली है। इसका मेडिकल में चौथा साल चल रहा है। सायना इनकी अच्छी सहेलियों में से एक थी, इसलिए ज्यादातर वह इनके पास आती रहती थी। असाइनमेंट ये सब मिलकर करते थे। इतने में हिमानी कुछ सामान लेने फिर वापस आ गयी।

सायना अन्दर आकर बैठते हुए हिमानी से बोली - यार आज असाइनमेंट तैयार करना है। मेरा डायग्नोसिस वाला चैप्टर अभी भी पूरा नहीं हुआ। तूने कर लिया क्या?

हिमानी लापरवाही से बोली - कर तो लिया, पर मैं दुश्मन देश की लड़की को तो बिल्कुल नहीं दूँगी।

इसपर सायना बोली - सोच ले, इस दुश्मन देश का मूल पानी भी भारत का ही है। महँगा पड़ेगा।

अब हिमानी की तरफ से जया बोली - भारतीय पानी पीकर भी तुझमें अक्कल नहीं आयी।

इस पर सायना ने कहा - ओए... नखरे मत कर... अक्ल गयी घास चरने.... फिर उसने हिमानी से कहा- ला नोटबुक दे यार! तैयार भी होना है...।

हिमानी ने उसे नोटबुक देते हुए कहा - काश..! हमारी दोस्ती की तरह भारत और पाकिस्तान भी मिलकर रहते...।

इस पर सायना भी गम्भीर हो गयी बोली- अगर ऐसा होता तो हमसब बहुत आगे होते... मैं ऊपर वाले से दुआ करुँगी, कि तेरी विश जल्दी पूरी हो जाए।

हिमानी ने उसे कॉपी दी और वह लेकर बाहर चली गई। कुछ बोली

नहीं। शायद ज्यादा इमोशनल हो गयी थी। हिमानी सोचने लगी कि, वाकई ऐसा हो जाए तो समृद्धि में हम सबसे आगे निकल सकते हैं। क्योंकि हमारी पॉवर आपसी लड़ाई में ही खर्च हो जाती है। सोचते हुए वह वापस अंदर चली गयी।

जया कमरे में अकेली रह गयी। अचानक उसकी नजर उसी पुस्तक **मैं समय हूँ...** पर पड़ी, जो हिमानी के तकिए के पास पड़ी थी। शायद उसने पढ़ते-पढ़ते यहीं छोड़ दी। जया ने फोन रख दिया और उसे देखने लगी। उसने खोलकर देखा, तो सामने चैप्टर था- दो देशों के बीच, पड़ोसी धर्म का सिद्धान्त।

उसने यूँ ही अनचाहे उसे पढ़ना शुरू कर दिया....

अक्सर शहर या गाँव में, अलग-अलग धर्मों के लोग पड़ोसी होते हैं। विपरीत धर्म या नस्ल के होने के बाद भी वे, मिल-जुलकर साथ रहते हैं। एक दूसरे के दुःख, सुख में काम आते हैं। एक दूसरे के घर आते-जाते हैं। उत्सव मनाकर साथ खाते-पीते हैं। पहला बीमार हो जाए तो, दूसरा हॉस्पिटल ले जाकर देखभाल करता है, वहीं दूसरा बीमार हो तो यही पहला करता है। हर संकट में पड़ोसी साथ खड़ा होता है।

वे अपना अपना ही कमाते और खाते हैं, किन्तु एक दूसरे के प्रति सद्भावना और सहयोग का फर्ज़ निभाते हैं। प्रेम के इसी रिश्ते का आधार पड़ोसी धर्म का सिद्धान्त है।

हालाँकि दोनों के रहन, सहन भाषा, धर्म और संस्कृति भिन्न होती है। किसी को कुछ पसन्द है, तो किसी को कुछ। इतने विपरीत करणों के बाद भी आपसी समझ बनाकर, एक दूसरे के साथ प्रेम पूर्वक रहते हैं।

इसके विपरीत जो पड़ोसी धर्म का पालन नहीं करते, वे बहुत छोटी-छोटी बात पर लड़ते रहते हैं। रातदिन की अशान्ति में उनका घर नर्क बन जाता है। वे कभी भी उन्नति नहीं कर पाते। क्योंकि उनकी पूरी शक्ति लड़ने या सुरक्षा में खर्च होती रहती है।

ठीक यही सिद्धान्त दो पड़ोसी देशों के बीच में भी लागू होता हैं। एक दूसरे के प्रति सद्भावना रखना, एक दूसरे की प्रगति पर खुश होना। संकट के समय एक दूसरे के काम आना। **दोनों देश यदि पड़ोसी धर्म निभाकर चलते हैं, तो दोनों की तरक्की होती है। यदि नहीं चलते हैं, तो दोनों लड़कर अपनी शक्ति बर्बाद करते हैं।**

चैप्टर पढ़ते-पढ़ते जया सोच में पड़ गयी कि, वाकई दो देश यदि पड़ोसी धर्म का ईमानदारी से पालन करें, तो दोनों ही प्रोग्रेस करेंगे। उनके बीच युद्ध की स्थिति कभी नहीं बन सकती। पड़ोसी धर्म का सिद्धांत पूरी दुनिया के लिए बड़ा उपयोगी है। इसे हर देश को ईमानदारी से निभाना चाहिए।

वह सोच में डूबी हुई थी, कि हिमानी नहाकर आ गयी। उसने जया के हाथ में पुस्तक देखकर पूछा - कौन सा चैप्टर पढ़ रही है?

-पड़ोसी धर्म का सिद्धांत..... जया ने कहा... इस पुस्तक का हर चैप्टर एक मास्टर की है।

इतने में ईशा आ गयी। बोली- ओय बेबो, केवल दस मिनट बचे हैं। यह सुनकर जया भी चौक गयी। वह भी उठी और तैयारी में जुट गई।

▼

आज 23 अप्रैल का दिन था। हिमानी ग्रुप लंच करके मेस से लौट रहे थे। सेन्ट्रल हॉल के पास आते ही उनकी नजर डिस्प्ले बोर्ड पर पड़ी। यह सेन्ट्रल हॉल की बाहरी दीवार पर था। इसके एक तरफ नोटिस बोर्ड था तथा दूसरी तरफ डिस्प्ले बोर्ड।

वर्तमान में रूस-यूक्रेन के बीच काफी तनाव की स्थिति बनी हुई थी।

अतः कुछ दिनों से इस पर समाचारों की कतरनें भी लगाई जा रही थी। तनाव बढ़ने के कारण सबकी नजर डिस्प्ले पर भी होती थी, जिससे कुछ विशेष जानकारियाँ मिल जाती थी। आज भी दो खबरों की पेपर कटिंग उस पर अटैच थी। अतः सभी यहाँ रुक गए।

हिमानी ने पहले डिस्प्ले बोर्ड पर लिखा हुआ सद्विचार पढ़ा, जो लाइबेरियन गोपाल जी प्रतिदिन लिखकर अटैच करते हैं। उसके साथ ही कुछ खास खबरें भी।

हिमानी ने सद्विचार लिखा -

एक निर्देश में पूरा सार छिपा है, कि आप पड़ोसी से भी खुद की तरह प्रेम करें।

- सेंट पॉल

सद्विचार पढ़ने के बाद हिमानी ने अखबार की खबर पढ़ी। यह किसी न्यूज पेपर की कटिंग थी। शायद इसे नेट के जरिये प्रिंट निकालकर लगाया होगा।

खबर थी- रूसी सेना, यूक्रेन के दो प्रांतों लुहांस्क दोनेत्स्क (डोनबॉस इलाके) में पहुंच चुकी है। हमला कभी भी हो सकता है। इस खौफ के बावजूद यूक्रेन के लोग सामान्य जीवन जी रहे हैं। स्कूल, कॉलेज, ऑफिस और सुपर मार्केट नियमित खुल रहे हैं। लोगों का कहना है, कि उन्हें 2014 से चले आ रहे तनाव के बीच रहने की आदत है, लेकिन इस बार हालात गंभीर होने से चिंता थोड़ी ज्यादा है। राजधानी कीव में लोग अपने लिए सुरक्षित ठिकाने की व्यवस्था कर चुके हैं, ताकि हमले की स्थिति में राजधानी से निकल सकें। कीव में मिसाइल हमले की आशंका ज्यादा है। कई लोग परिजनों को दूसरे देशों में रिश्तेदारों के पास भी भेज चुके हैं। कीव में अपनी कंपनी चलाने वाले डेन्यलो ने कहा-, 'पत्नी और दो बच्चों को रिश्तेदारों के पास पोलैण्ड भेज चुका हूं। फिलहाल मैं यहीं हूं। स्थितियां बिगड़ेंगी तो मैं भी उनके पास चला जाउंगा।'

अचानक ईशा की आवाज आयी... चल, चल! कब तक पढ़ती रहेगी और ईशा ने हिमानी का हाथ पकड़कर खींच लिया। सब रूम की ओर चल दिये।

भारत का वैभव

हिमानी मोबाइल में आज की न्यूज देख रही थी। उसने पहले न्यूज का वीडियो देखा। एंकर की आवाज भी सुनाई दे रही थी-

आज 24 फरवरी के दिन, यूक्रेन के नागरिकों की सुबह बम धमाकों के साथ हुई। कीव सहित कई बड़े शहरों पर रूस ने मिसाइलों से हमला कर दिया है।

राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन द्वारा सैन्य कार्यवाही के आदेश देने के बाद, यूक्रेन के बड़े शहरों में महत्वपूर्ण ठिकानों पर मिसाइल से हमला किया गया।

रूसी सेना ने जानकारी दी, कि उसने यूक्रेन के सैन्य और हवाई अड्डों को ठिकाना बनाकर तबाह कर दिया। इसके चलते आम नागरिकों ने अपनी जान बचाने के लिए यहाँ से भागना शुरू कर दिया। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि, यूक्रेन में विसैन्यीकरण करने के लिए वहाँ एक विशेष सैन्य अभियान शुरू कर रहे हैं।

आम आदमी अपने घर छोड़कर भाग रहे हैं। अफरा-तफरी मची हुई है। कहाँ जाएँगे, कहाँ रहेंगे, उन्हें खुद पता नहीं है। वे किसी अनजान मंजिल की ओर बढ़ते जा रहे हैं। तबाही के इस खौफनाक मन्जर का वीडियो हिमानी देख रही थी।

हॉस्टल में भी खौफ पसरा था। सब घर जाने के लिए परेशान थे, लेकिन जा नहीं पा रहे थे। और आज तो युद्ध की शुरूआत हो गयी है।

यह खबर सुनकर हिमानी सोच में पड़ गयी। यहाँ कई देशों के स्टूडेंट्स

परेशान हैं। ऑनलाइन क्लासेस की परमिशन यूनिवर्सिटी ने दे दी है, किन्तु यहाँ से वे अपने देश के लिए निकल नहीं पा रहे हैं। यूक्रेन में इंटरनेशनल एयरपोर्ट बंद हो चुके हैं। अब छात्र हंगरी, रोमानिया या पोलैण्ड बॉर्डर से ही अपने देश जा सकते हैं। इन देशों में बिना वीजा के जाना सम्भव नहीं था। अतः बिना एम्बेसी की मदद के यहाँ से निकलना आसान नहीं था। इसीलिए ज्यादातर स्टूडेंट्स एम्बेसी की गाइड लाइन का इंतजार कर रहे हैं। फ्लाइट का किराया लगभग ढाई से तीन गुना महँगा हो गया था। हॉस्टल के सभी स्टूडेंट्स परेशान हैं। उन्हें आगे का रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है। इन्हीं प्रश्नों के हल ढूँढने के लिए हिमानी ने शाम 7 बजे एक मीटिंग रखी है कि, अब आगे क्या करना है?

हिमानी अपनी तैयारी पूरी कर चुकी है। सात बजने को हैं, सेंट्रल हॉल में सब इकट्ठे हो चुके हैं। आगे की रणनीति बनाने पर गाइड करने के लिए यूनिवर्सिटी के दो प्रोफेसर भी आए हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी की ओर से जरूरी सुझाव दिए। आगे के लिए पढ़ाई की व्यवस्था किस प्रकार और कैसे होगी? इस पर छात्रों को निर्देश दिए। उसके बाद छात्रों की प्रॉब्लम्स सुनने और समझने का क्रम था।

कई देशों के छात्रों ने अपनी प्रॉब्लम्स रखी। लगभग सभी का मत था कि, हमारा आगे क्या होगा?

अब हिमानी के बोलने का नंबर था। वह माइक्रोफोन के सामने आई, और बोली - यहाँ पर सभी छात्रों ने अपनी जायज समस्याएँ रखी, मैं उनका समर्थन करती हूँ। डियर फ्रेंड्स... ये सभी स्टूडेंट्स की कॉमन प्रॉब्लम हैं, जिनसे हम सब परेशान भी हैं।

हमारा आज कन्फ्यूजन से भरा है। कल क्या होगा, हमें खुद पता नहीं...

यह समस्या केवल इस हॉस्टल के स्टूडेंट्स या केवल यूक्रेन की ही नहीं है, बल्कि पूरे विश्व की यूथ जेनरेशन की है। उनके कॅरियर की है। आज यहाँ युद्ध हो रहा है... कल कहीं और हो रहा होगा..., बस देशों के नाम और प्लेस बदल जाएँगे। युद्ध कभी बन्द नहीं होते हैं। बस हम जैसे निर्दोष भटकते रहेंगे... आखिर ये सिलसिला कब तक चलेगा? क्या यूथ जनरेशन के भाग्य में केवल भटकाव ही आएगा? उन्हें शान्ति से जीने का कोई हक नहीं है?

दो देशों के बीच युद्ध चल रहा है, कुछ देशों के बीच शीतयुद्ध चल रहा है। अभी जो देश युद्ध नहीं कर रहे हैं, वे कल के लिए युद्ध की तैयारी में लगे हैं। यानि हर स्तर पर निरंतर युद्ध ही चल रहा है। तो फिर हम सबका क्या? क्या हम ऐसे ही भटकते रहेंगे?

युद्ध आदमी के अंदर दिन-रात चल रहा है। इसे शान्त करने की जरूरत है। शान्ति की कोई बात नहीं करता। हर देश हथियार जुटाने में लगे हैं। सब महाशक्ति बनने पर आमादा हैं। तो विश्व का क्या होगा...?

हिमानी बोल रही थी, तभी एक लड़के ने हाथ उठाकर कुछ कहना चाहा। यह एक चाइनीज स्टूडेंट था, इसका नाम वांग शी था। हिमानी रुक गई। शी अपनी जगह पर खड़ा होकर बोला।

- तो इसमें क्या बुराई है? यह तो सभी कर रहे हैं।

- बुराई है... **हर देश केवल युद्ध की तैयारी करेगा, तो विश्व में शान्ति कैसे रहेगी? सब एक दूसरे से युद्ध करते-करते ही मारे जाएँगे।**

वांग शी अब तक खड़ा ही था। उसने दूसरा सवाल किया।

-इंडिया भी तो हथियारों की दौड़ में सबसे आगे है?

-नहीं, इंडिया ने जरूरत से ज्यादा पॉवर कभी गैन नहीं की। अपनी

संप्रभुता की रक्षा के लिए जितनी पॉवर चाहिये, बस उतनी। रक्षात्मक शक्ति जरूरी है, किंतु जरूरत से से ज्यादा शक्ति इकट्ठा करना विश्व के लिए विनाशकारी है।

-इंडिया भी तो विश्व गुरु बनना चाहता है? वांग शी ने कहा।

हिमानी बोली- **हाँ बनना चाहता है...! लेकिन शान्ति का, ज्ञान और चेतना का। इंडिया एक बड़ा और जिम्मेदार देश है, इसलिए उसे सिर्फ अपनी नहीं, पूरे विश्व की चिंता भी है।**

भारत एक देश ही नहीं, यह चेतना का भूखंड है। यह लाखों, ऋषि-मुनियों, सन्त और बुद्धों की धरती है। हजारों वर्षो के तप और साधना की स्थली है। इस धरती में सत्य को खोजने और जानने की प्यास रही है। पूरी दुनिया जब बाहरी खोज में लगी थी, तब भारत ने चेतना की खोज की। ज्ञान का प्रकाश दिया। जो भारत की संस्कृति को भूल गए, वो जान लें, ये असतो माँ सद्गमय की चैतन्य माटी है, जिसने मानवता को सबसे अधिक मूल्य दिया, मनुष्य की सोई हुई आत्मा को जगाया है। प्रेम के फूल खिलाए हैं। सद्भाव की सुगन्ध फैलाई है। विश्व शान्ति तथा वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश दिया है। भारत, विश्व के इस अंधेरे को नष्ट कर सकता है।

वर्तमान विश्व में जब अशान्ति की लपटें उठ रहीं हैं, उसमें भारत शान्तिदूत बनकर आग को बुझा सकता है। भारत ने शान्ति की खोज की है। मनुष्य जीवन की चेतना को ऊँचा उठाने की खोज। जैसे वसुधैव कुटुम्बकम्। यानि- द वर्ल्ड इज़ फैमिली.... इसने हमेशा विश्वशान्ति का रास्ता दिखाया है।

यह सब सुनकर वांग शी भावुक हो गया। उसने हाथ ऊपर उठाकर नारा लगाया- वसुधैव कुटुम्बकम्

हॉल में सबने एक साथ कहा- वसुधैव कुटुम्बकम्

पूरा सेंट्रल हॉल फिर तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। हॉल में कई देशों के स्टूडेंट्स थे। ऐसा लगा जैसे पूरे विश्व में चेतना का उदय हुआ हो।

▼

सबसे पहले हिमानी को आज का श्रेष्ठ विचार लिखना था... भारत में म.प्र. के कवि हमसफर फेसबुक पर एक नया श्रेष्ठ विचार हर दिन डालते हैं। अतः उसने उनका फेसबुक सर्च करके आज का श्रेष्ठ विचार निकालकर लिखा-

हमें भाईयों की तरह मिलकर रहना होगा, वरना मूर्खों की तरह लड़कर सभी बर्बाद हो जाएंगे।

- मार्टिन लूथर किंग

आज का दिन मेरे जीवन के लिए एक बड़ा अजीब दिन था। मैंने इतिहास में युद्धों को भी पढ़ा था। युद्ध के विषय में बहुत जाना व सुना था। लेकिन आज **मैंने युद्ध की आहट को करीब से सुना। लोगों के चेहरों पर उसका खौफ अपनी आँखों से देखा है। बिखरते हुए जीवन का अहसास मुझे पहली बार हुआ।** आज कीव सहित कई शहरों में धमाके हुए। इन धमाकों की गूँज ने यूक्रेन सहित पूरे यूरोप को दहला दिया। परिवार टूटने लगे... अपने बिछड़ने लगे... सपने बिखरने लगे... करोड़ों लोगों का दर्द आँखों के रास्ते छलकने लगा। यह हर परिवार की त्रासदी थी।

हर आदमी की अपनी एक दर्द भरी दास्तान थी, जो तिनके-तिनके का बसा-बसाया संसार छोड़कर जा रहे थे। जाना भी है, तो कहाँ जाना है, यह किसी को पता नहीं।

मंजिल का पता हो तो सफर आसान होता है, किन्तु मंजिल का पता न हो, तो दो कदम भी चलना मुश्किल है। फिर भी चले जा रहे हैं बिना रुके। भूख एक-एक ब्रेड के टुकड़े को तरस गयी... प्यास एक घूँट पानी को। बदन थककर चूर-चूर हुआ। ठण्ड के कँपा देने वाले थपेड़े। आगे क्या होगा पता नहीं। इतनी

तकलीफ किसी दुश्मन को भी न मिले। यह दर्द भी सिर्फ वही जान सकता है, जो भोग रहा है।

सोचती हूँ, काश! ये आकाश मेरा हाथ थाम ले... क्योंकि यह जमीन अब रहने लायक नहीं रही।

दुनिया में युद्ध कहीं भी हो, कोई भी जीते या हारे उसकी कीमत पूरी दुनिया को चुकाना पड़ती है। केवल एक आदमी की सनक पूरी दुनिया के लिए त्रासदी का कारण बन जाती है।

युद्ध किसी भी समस्या का हल नहीं, एक युद्ध कई समस्याओं को जन्म दे देता है। युद्ध के खत्म होने के बाद, फिर कई मोर्चों पर वर्षों युद्ध करना पड़ता है। युद्ध करने वाले देशों की विकासयात्रा दशकों पीछे चली जाती है।

नीचे हिमानी ने साइन किये। लाइट ऑफ की और सो गयी।

हिमानी का संकल्प

रूम में ईशा रायटिंग वर्क, तो जया कपड़ों पर प्रेस कर रही है। हिमानी मोबाइल पर आज की खबरें सुन रही है।

हिमानी ने आज युद्ध की खबर देखी-

25 फरवरी, यूक्रेन के कई शहरों में धमाके हुए थे। राजधानी कीव में भी धमाके हुए। यूक्रेन में एक रूसी जेट को मार गिराए जाने से युद्ध की गम्भीरता पर मुहर लग गयी।

इतने में सायना रूम में आई। उसके हाथ में एक पैकेट था। आते ही उसने एक टेबल पर पैकेट रखकर खोला। उसमें यहाँ का प्रसिद्ध कीव केक था। दूसरे में ब्रेड, स्नैक्स और कुछ चॉकलेट्स थे। सायना ने प्लेट उठाई और प्लेट्स में ब्रेड चटनी व स्नैक्स रखे, फिर तीन प्लेट बनाकर बोली - चलो यार ब्रेकफॅस्ट करलो... कल से सब उदास बैठें हैं। रात को भी ठीक से डिनर नहीं कर पाए। इस लड़ाई ने सबको बेहाल कर दिया है....मैं तो खा रही हूँ। और खुद ने खाना शुरू कर दिया। फिर कहा - खा लो यार बहुत मजेदार है....।

इस पर जया ने प्रेस का बटन बंद किया और प्लेट लेकर खाने लगी। ईशा ने भी प्लेट अपनी ओर खींचकर स्नेक्स टेस्ट करते हुए कहा- हम्म... जायकेदार है।

हिमानी अभी भी न्यूज ही सुन रही थी। उसने जैसे कुछ सुना ही नहीं।

थोड़ी देर जया उसे घूरकर देखती रही, फिर बोली -ओय हिमू क्या कर रही है यार... खाती क्यों नहीं?

ईशा ने भी कहा- खा ले यार... पूरी जिंदगी पड़ी है, न्यूज बाद में सुन लेना।

हिमानी ने फिर लापरवाही से कहा- मुझे भूख नहीं है... तुम खा लो।

इस पर ईशा भड़क गई। उसने प्लेट रखते हुए कहा- यार ये सब क्या हो रहा है...? ये कोई तरीका है? इस तरह तो, तू पागल हो जाएगी...!

यह सुनकर हिमानी ने गुस्से में कहा – **हाँ, मैं पागल हो जाऊँगी.... दो लोगों की जिद ने करोड़ों लोगों का जीवन नर्क बना दिया...। निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं। औरतें, बच्चे, बूढ़े, जिन्होंने कुछ नहीं किया, उन्हें किस बात की सजा मिल रही है? दो देशों के ईगो की क्राइसेस पूरी दुनिया क्यों उठाये.... ? बोलते-बोलते उसकी सांसें फूल गई।**

हिमानी का यह रूप देख कर तीनों सहेली सन्न रह गई। उन्होंने इससे पहले इतने गुस्से में उसे नहीं देखा था। उसका चेहरा तमतमाकर लाल हो गया। इतनी ठंडी में भी चेहरे पर पसीने की बूंदें फूट पड़ी।

तीनों थोड़ी देर खामोश रही, फिर जया उठी। उसने पानी का ग्लास भरा और हिमानी के पास आकर ग्लास उसके मुँह से सटा दिया। हिमानी का चेहरा अभी भी क्रोध से भरा था। उसने आधा ग्लास पानी पी लिया। थोड़ी देर तीनों चुप बैठी रहीं। फिर जया बोली -

प्लीज़... टेंशन मत ले हिमानी, बीमार हो जाएगी।

हिमानी ने कहा- **मैं टेंशन नहीं ले रही हूँ, लेकिन वर्ल्ड में जो कुछ चल रहा है, वह ठीक नहीं है। केवल कुछ लोगों की ज़िद... पूरी दुनिया को तबाह करने पर तुली हुई है।**

सायना बोली- तू बिल्कुल ठीक कहती है, लेकिन हम क्या कर सकते हैं? और फिर विश्व की समस्या से हमें क्या लेना-देना।

हिमानी बोली- विश्व की समस्या से हर आदमी का लेना-देना है। यही समस्याएँ बड़ी होकर हमारे दरवाजे पर दस्तक देती हैं।

फिर ईशा ने कहा -पूरी दुनिया ऐसे ही चलती है।

हिमानी फिर कठोर शब्दों बोली- नहीं, दुनिया को ऐसे चलाया जा रहा है। अब सायना ने कहा -अरे यार बाबा आदम के जमाने से दुनिया ऐसे ही चली आ रही है।

हिमानी - **नहीं, दुनिया को ऐसे ही चलाया जा रहा है...। हर आदमी अपनी सनक को दुनिया पर थोपना चाह रहा है। उसकी नाक पर घमंड बैठा है...।**

इन्सान जैसे युद्ध करने के लिए ही पैदा हुआ है। ईश्वर ने इतनी कीमती लाइफ दी है, तो क्या सिर्फ लड़ने के लिए? जो शान्ति से रहना चाहते हैं...उन्हें शान्ति से रहने क्यों नहीं दिया जाता... ?

हिमानी के शब्द अभी भी कठोर थे।

इस पर सायना बोली- इस दुनिया में कमजोर रहकर कोई जी नहीं सकता... हीमू।

हिमानी फिर बोली- कमजोर होकर नहीं जीना है। लेकिन युद्ध में पागल होकर भी नहीं जीना चाहिए। उसमें यदि युद्ध करने की बहादुरी है तो शान्ति की संवेदना भी होना चाहिए। समझदारी, पेशेंस और इन्सानियत भी तो होना चाहिए। हर समस्या का हल युद्ध से हल करना तो पागलपन है।

-तो क्या तू दुनिया बदलेगी? ईशा ने पूछा।

-यदि युवा चाहे, तो दुनिया बदल सकती है।

थोड़ी देर शान्ति छाई रही, उसका विरोध करने की हिम्मत तीनों में नहीं थी।

जया फिर बोली -चल बता दुनिया कैसे बदल सकती है? हम तेरे साथ हैं... लेकिन यह बिल्ली जैसा मुँह बना कर मत बैठ।

हिमानी फिर बोली- नई पीढ़ी को सावधान करके, जो कुछ अतीत से चला आ रहा है, उसमें अब कुछ बदलाव की जरूरत है।

-हाँ चल आगे बोल!

-हम युवाओं को गलत धारणा के प्रति अलर्ट करेंगे, जीने के लिए केवल युद्ध ही नहीं, शान्ति भी जरूरी है।

ईशा बोली -कैसे?

हीमानी ने कहा -हम पूरे वर्ल्ड में **नो वॉर** का अभियान चलाएँगे।

सायना बोली... किस किस को समझाएँगे यार..। सब के सब तो युद्ध करने पर आमादा हैं।

जया ने कहा **-यहाँ बस जीत की जय-जयकार होती है। फिर चाहे**

वह कितने भी निर्दोष लोगों की हत्या करके जीता हो। लाखों की हत्या करने वाला दुनिया का हीरो बन जाता है। सदियों से बस.. यही तो चला आ रहा है।

हिमानी ने कहा - बस यही तो बदलना है। एक आदमी को मारने वाला हत्यारा है, तो फिर लाखों लोगों को मारने वाला हीरो कैसे? हमेशा मुट्ठी भर लोगों की सनक ने दुनिया को बर्बाद किया है।

कौन बदलेगा इसे...? सायना ने कहा।

हिमानी ने कहा - युवा पीढ़ी ही बदलेगी.... पुरानी पीढ़ी नहीं बदल सकती। उनका माइंड सेट है। वह परंपरा के हिसाब से ही चलेगी। हालाँकि उनका मार्गदर्शन जरूरी है।

सायना - पूरी दुनिया में चिंता करने के लिए बड़े-बड़े बुद्धिजीवी और फिलॉसफर बैठे हैं, केवल हम ही इसकी चिंता क्यों करें?

हिमानी - **क्योंकि, हम युवाओं को अभी पूरा जीवन जीना है, हमें नर्क में जीना है या स्वर्ग में, यह चुनाव करने का हमें पूरा हक है। अगर युवा चिंता नहीं करेगा, तो उसे हर बार की तरह विरासत में नर्क का तोहफा ही मिलेगा।**

जया ने कहा - ये बात तो बिल्कुल सही है। हर पीढ़ी को विरासत में

शान्ति मिलनी चाहिए।

शान्ति के चक्कर में भले कोई दूसरा कब्जा कर ले...? सायना ने धीरे से कहा।

इस पर हिमानी बोली - **नहीं, हमें कायर बनकर नहीं जीना है। बिल्कुल सर पर आ जाये, तो लड़ना भी है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम शान्ति और सुलह का रास्ता छोड़ दें। छोटी-छोटी बातों पर युद्ध के लिए तैयार हो जाएँ। विश्व में अब शान्ति के लिए क्रांति की जरूरत है। हर युवा को शान्तिदूत बनकर नो वॉर का संदेश देना होगा।**

ईशा बोली- बिल्कुल सही है।

- हाँ, विश्व में शान्ति की क्रांति होगी यह आवाज भारत की थी, जो दरवाजे पर खड़ा था।

हिमानी ने जोश में कहा- से नो टू वॉर।

सभी एक स्वर में बोले- से नो टू वॉर।

रात ग्यारह बज चुके थे। सोने का वक्त हो चला था। सोने से पहले हिमानी ने डेली डायरी उठाई और उसे लिखने बैठ गई।

पूरे हॉस्टल में उदासी का माहौल है। इस हॉस्टल में लगभग 12 देशों के 750 स्टूडेस अपने-अपने घर जाने को बेताब हैं, लेकिन जा नहीं सकते... कसमसाहट है। लुहान्स और डोनेस्क में रूसी हमले हो रहे हैं। चेर्नोबिल न्यूक्वियर प्लान्ट में रेडिमशन का खतरा बढ़ गया है। मौत जैसे करीब आती जा रही है। हर स्टूडेन्ट की अपनी एक उलझन भरी कहानी है। मेडिकल डिग्री में किसी को दो साल बचे हैं, किसी का एक साल और किसी किसी के कुछ महीने। मुझे तो केवल चार माह ही बचे हैं, केवल एक एक्जाम भर देना है। लेकिन जीवन की ये दूसरी एक्जाम शुरू हो गयी।

लगभग 75 हजार से अधिक स्टूडेंट्स यूक्रेन के बाहर से हैं। उनके कॅरियर का आगे क्या होगा? पता नहीं है।

बड़ी तकलीफों के साथ माता-पिता ने विदेश पढ़ने को भेजा। उनके सपने पूरे भी होंगे या नहीं। सोचती हूँ, इन्होंने किसी का क्या बिगाड़ा है?

फिर हम युद्ध का कहर क्यों भोगे? क्या हमारे सपने बारूद की आग में भस्म होने वाले हैं? क्या शान्ति से जीने का हमारा कोई हक नहीं है? प्रश्न पर प्रश्न खड़े हो रहे हैं, लेकिन उत्तर नहीं मिल रहे।

हो सकता है जंग रुक जाए या हो सकता है और बढ़ जाए। लेकिन अभी तो स्टूडेंट्स की धड़कने बढ़ी हुई हैं। **सुना है अँधेरे के बाद रोशनी जरूर आती है.....**

नो वॉर...

-हिमानी

हिमानी नो वॉर अभियान के बारे में सोचने लगी। योजना बनाते बनाते उसे कब नींद लग गयी पता ही नहीं चला।

वर्ल्ड पीस फोरम

यूक्रेन के कई शहरों में धमाके हो रहे थे। लड़ाई विकराल रूप ले चुकी थी। इस बीच पलायन का दौर भी जारी था। राजधानी कीव में भी डर बढ़ता जा रहा था। ऐसे में सभी स्टूडेंट्स सेंट्रल हॉल में इकट्ठे होकर मीटिंग कर रहे हैं।

हिमानी भारतीयों की प्रतिनिधि थी, अतः उसी ने यह कॉन्फ्रेंस आर्गेनाइज की थी। सभी स्टूडेंट्स आ चुके थे। मंच पर फॉदर जोसफ, गोपाल जी, मारिया, स्वेतलाना भी मौजूद थे। हिमानी ने शुरूआत की। वह माइक्रोफोन के पास आई और छात्रों को संबोधित कर बोली-

- गुड इवनिंग माय डियर फ्रेंड्स.....

- ...जैसा कि आप सभी जानते है कि, यहाँ सबकुछ ठीक नहीं है। युद्ध का माहौल बना हुआ है। हम सबका कॅरियर भी खतरे में है। हमारा फ्यूचर क्या होगा, किसी को पता नहीं है।

अपनी जान बचाने के लिए तो युद्ध जायज हो सकता है... लेकिन अगर युद्ध झूठे ईगो और जिद के लिए हो... हथियारों को बेचने के लिए... या अपने वर्चस्व के लिए युद्ध हो, तो वह किसी भी कीमत पर जायज नहीं हो सकता। युद्ध कोई शतरंज का खेल नहीं है, जिसे हर कोई खेलने पर आमादा हो।

यह अहं की मानसिक बीमारी है। लोग युद्ध में पागल हो रहे हैं। इस पागलपन से हमें लड़ने की जरूरत है।

पृथ्वी पर केवल आदमी ही ऐसा प्राणी है, जो अपनी मौत का

सामान खुद इकट्ठा करता है और फिर उससे अपना ही सामूहिक विनाश करता है।

ऐसे संकट के समय हमें डरना नहीं है। हौसलों से काम लेना होगा। यह हमारी परीक्षा की घड़ी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि, हम युवा हैं। वर्ल्ड की सबसे बड़ी ताकत।

युद्ध का यह उन्माद हर नेक्स्ट जनरेशन को निगल रहा है। ...काश! कि बहुत पहले दुनिया ने इस बीमारी को पकड़ लिया होता, तो आज विश्व अलग होता... भारत ने इस खतरनाक बीमारी को बहुत पहले समझ लिया था। उसने कई शताब्दियों पहले दुनिया को अलर्ट कर दिया था...वसुधैव कुटुम्बकम् का सन्देश देकर। उसने सन्देश दिया था कि, पूरे विश्व को एक परिवार समझकर रहना चाहिए।

काश, कि...! परिवार की तरह रहने की भावना को उस वक्त समझ लिया होता, तो आज विश्व इतना अराजक और अमानवीय नहीं होता।

इस पर वांग शी बोला- वसुधैव कुटुम्बकम् है क्या?

इस पर हिमानी ने कहा- वांग ने गुड क्वेश्चन किया है।

वसुधैव कुटुम्बकम् भारतीय सनातन चेतना से उपजा एक बहुमूल्य

उद्घोष है। यह सन्देश देता है कि पृथ्वी पर रहने वाले सभी इन्सान एक परि-वार की भावना से रहें...। जिस प्रकार सौरमण्डल में तारे, ग्रह, पिण्ड, एक परिवार की तरह रहते हैं। जैसे एक बड़े परिवार में सब हिलमिलकर रहते हैं। दुःख-सुख में एक दूसरे का सहयोग करते हैं। हर संकट का सामना मिलकर करते हैं। ठीक उसी प्रकार विश्व को एक परिवार समझकर रहना चाहिए। तभी सब शान्ति से रह सकते हैं।

आज विश्व का जहाज अहंकार के सागर में डूब रहा है, और हर देश केवल अपने-अपने केबिन बचाने में लगे हैं। सोचो, क्या जहाज डूबने से बच सकता है? इस जहाज को डूबने से यदि कोई बचा सकता है, तो वह है- एक परिवार की भावना।

तभी एक नाइजीरियन छात्र ने खड़े होकर नारा लगाया-

वसुधैव कुटुम्बकम्......

पूरे हॉल में नारा गूँज उठा- वसुधैव कुटुम्बकम्

हिमानी खड़ी हुई। उसने फिर कहा- सोचो, यदि विश्व ने इसे बहुत पहले समझ लिया होता तो क्या दुनिया ऐसी होती?

आज हर देश, दूसरे देश से बड़ा होना चाहता है.... दूसरों को हराने वाला देश कभी नहीं जीतता। हाँ, उसे अपनी जीत का भ्रम जरूर होता है, लेकिन अंततः एक दिन उसे भी हारना ही पड़ता है। क्योंकि, समय उसे कभी माफ नहीं करता।

यह लड़ाई इंसानों की नहीं है। इंसानों के अंदर बैठे शैतानों की है। जो ईगो के कैप्सूल में बंद हैं। छोटे-छोटे कारण, जो टेबल पर बैठकर हल हो सकते हैं, उन्हें भी उनका ईगो लड़ाई से हल करता है।

अहंकार में डूबे इन उन्मादियों को रोकना बहुत जरूरी है। यह काम सिर्फ युवा पीढ़ी ही कर सकती है। पुरानी पीढ़ी से आप ज्यादा उम्मीद नहीं रख सकते। वह तो आपको विरासत में युद्ध देकर जाएगी, क्योंकि उनकी पुरानी पीढ़ियाँ भी उन्हें विरासत में युद्ध ही सौंप कर गई है। उनका माइंड सेट है। हां, वे नई पीढ़ी को चलने का रास्ता बता सकते हैं, इसीलिए केवल उनका मार्गदर्शन लें, लेकिन इस पर चलना हमें ही पड़ेगा।

युवा चाहें, तो दुनिया में शान्ति की क्रांति ला सकता है। विश्व में

शान्ति स्थापित करने की एक ही आशा की किरण बची है और वह है न्यू जनरेशन। वही इस मानसिक रोग का इलाज कर सकती है। इसके लिए हमें तैयार रहना होगा।

-कैसे? मोरक्को की एक छात्रा अलीशा ने पूछा।

हिमानी ने कहा- **पूरी दुनिया में युद्ध के खिलाफ शान्ति का सन्देश देकर। दुनिया के बड़े और शक्तिशाली देशों से हम शान्ति की अपील करेंगे। नो वॉर का अभियान चलाएँगे।**

-क्या नो वॉर के अभियान की अपील देश मान जाएँगे? रोमानिया के एक छात्र ने पूछा।

-नहीं मानेंगे! क्योंकि वह अहंकार के नशे में चूर हैं, लेकिन पूरी दुनिया की युवा शक्ति उन्हें आईना तो दिखा सकती है। होश में आने लिए मजबूर तो कर सकती है? **हमें कम से कम यह तो संतोष रहेगा, कि हमारा नाम आग लगाने वालों में नहीं, आग बुझाने वालों में शामिल होगा।**

द होल वर्ल्ड इज़ फैमिली हमारा मकसद और विश्व शान्ति हमारा संदेश होगा।

अचानक फॉदर ने खड़े होकर नारा लगाया- **द होल वर्ल्ड इज़ अवर फैमिली।**

छात्रों ने खड़े होकर कहा- द होल वर्ल्ड इज़ अवर फैमिली।

पूरा हॉल नारों से गूँज उठा। ऐसा लगा मानो एक नई सुबह का उदय हुआ हो। आशा की किरणें फूट पड़ी।

हिमानी ने हाथ हिलाकर सबको शान्त करते हुए फिर कहा- वर्ल्ड की यूथ पॉवर को एक होना पड़ेगा। पीस फ्रेंड बनकर शान्ति के लिए काम करना होगा। इसलिये हम आज वर्ल्ड पीस फोरम का गठन कर रहे हैं और इसके माध्यम से नो वॉर का अभियान चलाएँगे। इसका हर सदस्य पीस फ्रेंड होगा। हम सब शान्तिदूत बनकर पूरी दुनिया में द वर्ल्ड इज़ फैमिली का संदेश देंगे। क्या आपको मंजूर है?

-मंजूर है। सभी बोले।

एक स्टूडेंट ने हाथ उठाकर नारा लगाया- हमारा नेता कैसा हो? पूरे हॉल से आवाज आई - सिर्फ हिमानी जैसा हो।

इस पर हिमानी ने हाथ उठाकर सब को शान्त किया और कहा -साइलेंस प्लीज़... साइलेंस...! डियर फ्रेंड्स, हमारा अभियान लीडर बनने और बनाने के लिए नहीं है। दुनिया में लड़ाई का यही तो बड़ा कारण है। हमारा अभियान वर्ल्ड पीस के लिए है, इसलिए प्लीज़ आप मुझे लीडर नहीं अपना शान्तिमित्र बनाएँ, ...और दुनिया के लिए युवाओं को शान्ति मित्र बनने का ऑफर दें, ताकि विश्वशान्ति का रास्ता खुल सके... क्या आप सब तैयार हैं?

-हाँ, हम सब तैयार हैं। सभी ने कहा।

हिमानी फिर बोली- तो आइए... **हम सब मिलकर शपथ लेते हैं, कि जब तक हमारे शरीर में सांस रहेगी, हम शान्ति के लिए काम करेंगे...। हम शान्ति के लिए जीयेंगे और शान्ति के लिए मरेंगे। हमारा युद्ध झूठे अहंकार के खिलाफ होगा... हम जिंदगी भर बहरे कानों में चीख-चीखकर शान्ति की अपील करेंगे।**

अब एक युद्ध हमारा होगा शान्ति के लिए.... नो वॉर का अभियान चलाकर। चाहे उसके लिए हमें मरना ही क्यों न पड़े। हम सब डॉक्टर हैं... अतः वह फर्ज भी निभाएँगे...। हम सभी घायल मरीजों का यहाँ रहकर इलाज करेंगे... चाहे वे रशिया के हों या यूक्रेन के सैनिक हों या नागरिक।

वर्ल्ड पीस फोरम की पूरी योजना तैयार है। जल्द ही आपके पास पहुँच जाएगी। रोज शाम को बैठते ही हैं, हर दिन इस पर चर्चा करेंगे, कहते हुए हिमानी अपनी सीट पर बैठ गयी। स्वीडन का एक स्टूडेंट मंच पर चढ़ा और उसने नारा लगाया - से नो टू वॉर....

पूरे हॉल से आवाज आयी... से नो टू वॉर....

इसके बाद वर्ल्ड पीस फोरम की योजना, गठन, उद्देश्य और उसके काम की सारी डिटेल्स हर स्टूडेंट्स को दी गयी। एक संकल्प पत्र का प्रोफार्मा भी शामिल था, जिसे फिलअप करके सबको जमा करना था। सभी ने इस एग्रीमेंट को उसी समय फिलअप कर जमा किया।

प्रोग्राम के बाद सब डिनर को चले गए।

जानती हूँ कि, मकसद बहुत बड़ा है। जो सोचा है, उसे पूरा करना आसान नहीं है। दुनिया अहंकार के नशे में चूर है। चारों तरफ नफरत की आग फैली है। आज के दौर में विश्व शान्ति की बात करने वालों को पागल समझा जाता है। ऐसे में वर्ल्ड पीस फोरम का अभियान कहाँ तक सफल होगा, मैं नहीं जानती। लेकिन, मैं समय हूँ... पुस्तक और सभी दोस्त मेरी ताकत हैं।

ऐसे में मुझे लार्जेस्ट गजल ऑफ दी वर्ल्ड का एक शेर याद आ गया-

मैंने तो कर दिया, दीया रोशन
मैं, नहीं जानता, हवा क्या है

इस शेर ने मुझे सारे सवालों का जवाब दे दिया है। अब कोई सवाल ही नहीं बचा।

कोई क्या कर रहा है, इससे हमें क्या... बस हम अपने कर्तव्य का पालन करते जाएँ।

हवा से डरकर अगर आप दीप जलाना बन्द कर देंगे... तो पूरी पृथ्वी पर अंधेरा छा जाएगा। हवाएँ अपना काम करेगी तो, दीपक अपना करेगा। सबसे बुरी बात यह होगी कि, अन्धेरा हो और आप रोशनी की तलाश भी न करें। जिन्दा आदमी वही तो है, जो अन्धेरे में रोशनी की तलाश करे। क्योंकि, अगर हम नाकामयाब भी रहे, तो ईश्वर के सामने शर्मिंदा नहीं होंगे।

मैं समय हूँ... !
मुझे समझने से पहले, अपने मस्तिष्क को विचार शून्य करना होगा... अन्यथा समझकर भी, कुछ समझ नहीं पाएगा...

वतन की तैयारी

फ्लोर के सेंट्रल हॉल में कई स्टूडेंट्स थे, जिनमें हिमानी ग्रुप भी शामिल था।

हिमानी सेंट्रल हॉल की खिड़की के पास बैठी थी। वह हॉस्टल के गार्डन को ही निहार रही थी। यहाँ रोज शाम को कई स्टूडेंट्स आकर बैठते थे। हिमानी और उसके साथी भी यहीं पर शाम का वक़्त गुजारते थे। सब मिलकर मनोरंजन करते थे, कितना अच्छा लगता था, लेकिन आज वहाँ कोई नहीं था। अटैक की दहशत के कारण सब हॉस्टल के अन्दर थे। मेपिल, ऐश और पाइन के पेड़ गार्डन की शान बढ़ा रहे हैं। डेफोडिल, रोज व लीली के रंग-बिरंगे फूल इसे और खूबसूरत बना रहे हैं। प्रकृति का इतना सुंदर नजारा देखने के बाद कोई, कितने भी टेंशन में हो... उसका मन शान्त हो जाता है।

इतनी खूबसूरत जगह के बाद भी हिमानी के चेहरे पर चिंता की रेखाएँ साफ दिखाई दे रही थी। आज यहाँ से अधिकतर स्टूडेंट्स जा रहे हैं। वे यहाँ से निकलकर पोलैण्ड बॉर्डर पहुँचेंगे, फिर वहाँ से अपने अपने देश। भारतीय स्टूडेंट्स के लिए भारत सरकार ने स्पेशल ऑपरेशन गंगा चलाया है। हंगरी,

पोलैण्ड और रोमानिया बॉर्डर पर इस ऑपरेशन के प्रतिनिधि स्टूडेंट्स का वेट कर रहे हैं। भारतीयों सहित कई और देश के स्टूडेंट्स भी धीरे-धीरे निकलते जा रहे हैं। लड़ाई शुरू होने के बाद काफी स्टूडेंट्स निकल चुके हैं। जिसको जैसे भी रास्ता मिल रहा है, वे निकलते जा रहे हैं, क्योंकि खतरा हर दिन बढ़ता जा रहा है।

हर्ष ने टैक्सी बुक कर ली थी, जो कल दोपहर 2:00 बजे हॉस्टल पहुँचने वाली थी। खतरा बढ़ने के कारण टैक्सियाँ भी बंद हो चुकी हैं। बड़ी मुश्किल से हायर रेट में उबर की एक टैक्सी बुक हो पाई है। इसलिए आज सभी के चेहरे पर रौनक थी। उदास थी, तो बस हिमानी। उसके मन में क्या चल रहा है, यह किसी को पता नहीं है। खुद हिमानी भी समझ नहीं पा रही थी, कि वह क्या करे?

ईशा हिमानी की सीट के पास ही बैठी थी। उसने ऊपर की तरफ देखते हुए कहा - थैंक गॉड, टैक्सी बुक हो गई...। अब हम घर जा सकेंगे। यह खबर सुनकर मम्मी-पापा भी बहुत खुश हो रहे हैं। सायना बोली, मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे दोबारा ज़िंदगी मिली हो।

-हाँ, और टैक्सी भी नाइन सीटर बुक हो गई, जिसमें हम सब आराम से जा सकते हैं।

कुछ सोचते हुए जया ने कहा- पर यार! जिन स्टूडेंट्स के पास पैसे खत्म हो गए हैं वो कैसे जाएँगे...? मुझे तो यह सोच कर भी दुःख हो रहा है।

सायना बोली - आज गार्डन को जी भर कर देख लेते हैं। क्या पता, फिर

आना हो, कि ना हो।

ईशा तपाक से बोल पड़ी- शुभ-शुभ बोल, अभी हमारी डिग्री बाकी है।

इस पर जया ने कहा- हिमू और मुझे तो 4 महीने बाद ही डिग्री मिलने वाली है।

सायना ने कहा- फिर एक 1 साल में मुझे इस बिल्ली के साथ रहना पड़ेगा। ईशा गुस्से से घूरते हुए बोली- क्या कहा तूने मुझे? फिर से बोल तो...? ईशा ने गुस्से में टेबल पर रखा ग्लास उठाया ही था, कि इतने में भारत हर्ष और अवि भी आकर बैठ गए।

हर्ष ने बैठते हुए कहा- सब अपना सामान अच्छे से आज ही पैक कर लेना। कल पर कुछ मत छोड़ना।

अवि बोला- मेरा मन तो कर रहा है, मैं आज ही उड़कर चला जाऊँ।

ईशा भी उपदेश देते हुए बोली- हम पोलैण्ड बॉर्डर तक जा रहे हैं, लेकिन दो टाइम का खाना, स्नैक्स, बिस्किट्स, चॉकलेट वगैरह एक्स्ट्रा रखना... बहुत जरूरी है।

भारत ने भी समर्थन करते हुए कहा- बिल्कुल, सब कुछ एक्स्ट्रा रखना है।

जया ने हिमानी से कहा- ओए! तू भी तो कुछ बोल हिमू!

हिमानी ने फिर भी कोई जवाब नहीं दिया।

इस पर सायना बोली- इतनी देर से चुप बैठी है, बता ना क्या बात है यार....? कुछ तो बोल तेरे मन में क्या खिचड़ी पक रही है... **तेरा साजन आसमान तो इण्डिया में भी तेरे साथ रहेगा? फिर क्यों दुःखी हो रही है?**

हिमानी बोली- कुछ नहीं..... चलो फॉदर से भी मिलना है। स्वेतलाना और मारिया मैडम वेट कर रही होंगी। और सब हॉस्टल में चले जाते हैं।

हिमानी ने आज डायरी में लिखा- लगभग आधा हॉस्टल खाली हो चुका है। जो बचे हैं, वे भी जाने की तैयारी में हैं। इनके पैरेंट्स इन्हें तत्काल निकल जाने की सलाह दे रहे हैं। युद्ध का डर सब पर हावी है। ऐसे में वर्ल्ड पीस फोरम का क्या होगा, कुछ समझ में नहीं आ रहा है...

लेकिन उम्मीद पर दुनिया कायम है...

– हिमानी

आज इतना ही लिखकर हिमानी सो गई।

बिछड़ने के दिन

अपने-अपने देश जाने के लिए सभी स्टूडेंट्स उत्साहित थे। जया, ईशा और सायना ने अपना सामान पैक कर लिया था। दोस्तों से मिलते मिलते वैसे भी 12:30 हो चुके थे। अब न जाने कब आना हो, इसलिए सभी एक दूसरे से भावुक होकर मिल रहे थे।

हिमानी ने मोबाइल ऑन कर आज की न्यूज पर नजर डाली...

- 28 फरवरी। यूक्रेन-रूस के पाँचवें दिन युद्ध में आक्रामकता बढ़ गई है। युद्ध के बीच बेलारूस में दोनों देशों के प्रतिनिधिमण्डल की बातचीत चल रही है। इस बीच रूसी हमले लगातार जारी हैं... बातचीत किस नतीजे पर पहुँचेगी... कहा नहीं जा सकता....न्यूज सुनकर वह उन्हीं विचारों में डूब गयी।

हिमानी ने अभी तक पैकिंग नहीं की थी। उसके मन में क्या चल रहा है, कुछ समझ नहीं पा रही थी। अतः हिमानी की पैकिंग जया और ईशा ने मिलकर कर ली। 1:00 बजे स्वेतलाना और फॉदर से मिलना था। जया ने पैकिंग के सामान की लिस्ट बनाई थी, अतः वह सामान को एक बार और चैक कर रही थी, कि कहीं कोई जरूरी सामान छूट ना जाए। इतने में उसने देखा कि, दरवाजे पर वांग शी और फिरोज खड़े हैं। उनके पीछे भारत और हर्ष भी। वांग शी अन्दर आते हुए भावुक होकर बोला- हम लोग एक दूसरे से दूर हो रहे हैं। बहुत बुरा लग रहा है। उसने हिमानी की ओर देखते हुए कहा- आइ एम सॉरी, मैंने उस दिन प्रोग्राम में इंडिया के विषय में ऐसे क्वेश्चंस किए, जो नहीं करना चाहिए थे।

हिमानी ने कहा- नो मेंशन, इससे तुम्हारा कन्फ्यूजन दूर हो गया।

फिरोज बोला- **सिर्फ वांग का ही नहीं, मेरा कन्फ्यूजन भी दूर हो गया। इंडिया की ग्रेटनेस तो मुझे अब पता चली।**

हिमानी बोली- **हाँ अगर हम सब साथ हैं, तो दुनिया में एक बड़ा बदलाव कर सकते हैं।**

ईशा ने पूछा- वांग तुम्हारी टैक्सी कब है?

वांग बोला- आज ही शाम 4:30 बजे। एंबेसी से संपर्क हो गया है।

फिरोज भावुक होकर बोला- इतने दिन हम साथ रहे...काश हमारी दोस्ती कभी न टूटे...

जया बोली - **हम सबकी दोस्ती कभी नहीं टूटेगी.....** यह सुनकर सब भावुक हो गए।

थोड़ी देर सब चुप रहे, फिर जया ने कहा - चलो चलो फॉदर से मिलना है। स्वेतलाना और मारिया मैडम भी वेट कर रही होंगी।

सभी यहाँ से ग्राउंड फ्लोर पर फॉदर के पास आ जाते हैं। वहाँ मैडम मारिया और स्वेतलाना पहले से बैठी थी। मारिया की बेटी भी थी। उन्होंने सभी छात्रों का वेलकम किया। फिर फॉदर बोले- मैं खुश भी हूँ, और दुखी भी... तुम सभी अपने-अपने देश जा रहे हो। मुझे इस बात की बहुत खुशी है। लेकिन इस बात का दुःख भी रहेगा कि, तुम्हारे जैसे स्टूडेंट्स अब नहीं होंगे... **तुम्हारी सोच, और जो ढंग है वह नायाब है... यह दुनिया में एक आशा की किरण पैदा करता है। इस सोच को कभी डूबने मत देना। यह तुम्हारे जीने का मकसद है...** गॉड तुम्हारी मदद जरूर करेगा। मेरी ओर से तुम सबको शुभकामनाएँ। मे गॉड ब्लेस यू....!

हिमानी शांत स्वर में फॉदर से बोली - मुझे आपसे कुछ कहना है।

सुनकर फॉदर बोले- यस.. यस... बोलो माय सन!

हिमानी ने कहा- **फॉदर मैं यहाँ से जाना नहीं चाहती। शान्ति का अभियान चलाकर यहीं लोगों की मदद करना चाहती हूँ....!**

हिमानी की बात सुनकर सब दंग रह गए। सभी उसे आश्चर्य से देख रहे थे। किसी को यह अंदाजा नहीं था कि हिमानी ऐसे माहौल में भी घर जाने से मना करेगी।

ईशा बोल पड़ी- फॉदर इसे समझाओ ना, इसके बाद यहाँ से निकलने

का और कोई रास्ता नहीं बचेगा...

फॉदर ने कहा- **माय डिअर सन! इतना सेंटी होने की जरूरत नहीं है। तुम सब के पास निकलने का लास्ट चांस है, इसलिए तुम सब अपने-अपने घर लौट जाओ। वहाँ जाकर भी तुम अपने मकसद को पूरा कर सकते हो....**

हिमानी ने कठोरता से कहा- **फॉदर मैंने फैसला कर लिया है, मैं यहीं रहकर डॉक्टर होने का फर्ज अदा करूँगी। घायलों का इलाज और करूँगी। अब विश्व शान्ति के अभियान की शुरुआत यहीं से होगी। मुझे आपका साथ चाहिए। क्या आप मेरे साथ हैं?**

ईशा फिर बीच में बोल पड़ी- पागल हो गई है क्या?

हिमानी ने भी चीखकर कहा- हाँ! मैं पागल हो गई हूँ।

उसने इतनी दृढ़ता से कहा कि सबकी सांसें थम गई। पूरे कमरे में स्तब्धता था छा गई। वे आश्चर्यचकित होकर हिमानी के कठोर चेहरे को देख रहे थे। थोड़ी देर सब मौन धारण किये बैठे रहे। फिर फॉदर बोले-

- मैं तुम्हारे साथ ही हूँ माय चाइल्ड.. लेकिन मैं फिर भी यही सलाह दूँगा, कि तुम अपने देश लौट जाओ, यहाँ जान को खतरा है...।

हिमानी चुप रही। उसकी कठोर मुद्रा और मौन ने सब कुछ कह दिया था। फॉदर फिर बोले - **मुझे आज समझ में आ रहा है कि, हिमालय की मिट्टी में कितनी शक्ति है और गंगा के पानी में कितना प्रेम...**

हिमानी अब बोली - **मैं... गंगा, वोल्गा और नीपर में भी वही प्रेम देखना चाहती हूँ...।**

फॉदर अपलक हिमानी को देखते रहे, फिर बोले - **मुझे तुम पर और तुम्हारे देश पर गर्व है। तुम्हारा जो भी फैसला हो, मैं आखिरी वक्त तक तुम्हारे साथ रहूँगा।**

- हम भी मरते दम तक तुम्हारे साथ हैं। मारिया और स्वेतलाना ने एक साथ कहा।

हिमानी के सभी दोस्तों को इस घटना से बड़ा सदमा पहुँचा था। उसके इस फैसले ने सबको सन्न कर दिया था। वे सब उसके नेचर से भी वाकिफ थे। उसे मनाने की हिम्मत किसी में नहीं थी, क्योंकि वह जो ठान लेती थी, वही

करती थी। सब असमंजस में पड़ गए।

अचानक भारत के मोबाइल पर नोटिफिकेशन की आवाज आई। उसने जेब में हाथ डालकर हैंडसेट निकाला। उसमें मैसेज पढ़कर बोला- टैक्सी आ चुकी है, गेट पर हमारा वेट कर रही है।

सभी स्टूडेंट्स समझ नहीं पा रहे थे कि वे क्या करें, तभी फॉदर बोले- चलो टैक्सी आ चुकी है...

स्वेतलाना ने पुश करते हुए कहा - तुम सबको यहाँ से जल्दी निकलना होगा। रात में खतरा बढ़ जाएगा।

- हिमानी के मना करने पर घर जाने का उत्साह ठंडा पड़ गया था। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या करें? ऐसी मुश्किल घड़ी में, वे कोई फैसला नहीं कर पा रहे थे। लेकिन फॉदर के पुश करने पर अनचाहे सब टैक्सी की ओर बढ़ चले। जाना सब चाहते थे, लेकिन हिमानी को छोड़कर किसी भी स्टूडेंट की यहाँ से जाने की इच्छा नहीं थी, फिर यहाँ से निकलने का यह अंतिम अवसर था। उनके माता पिता की आस थी, जो जाने को मजबूर कर रही थी, क्योंकि घर परिवार के लोग बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, इसलिए चाहे अनचाहे सभी चल पड़े।

टैक्सी के पास आते ही हर्ष, भारत और अवि ने सबके बैग डिक्की में डाले, फिर भावहीन होकर जया, ईशा और सायना को बीच की सीट पर बैठा कर खुद पीछे बैठ गए। सबके मन में उथल पुथल मची हुई थी। सब मौन थे।

हिमानी किसी से नजर नहीं मिला पा रही थी।

थोड़ी ही देर में टैक्सी स्टार्ट हुई, तो अचानक जया, नेहा और सायना टैक्सी से उतरकर बाहर आ गई। **बाहर आते ही सीधे हिमानी से लिपटकर रो पड़ी। हिमानी ने कुछ पल हिम्मत रखी, फिर वह भी फूट-फूटकर रोने लगी। ना जाने कौन सा यह रिश्ता था, कि आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। हर्ष, भारत अवि, इमरान और वांग शी भी सिसकियाँ लेने लगे। फॉदर, स्वेतलाना और मारिया की आँखें भी भर आयीं।**

अलग-अलग देशों के स्टूडेंट्स में के बीच शायद ऐसा प्यार उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। अभी भी वो रोते ही जा रहीं थी।

लगभग 5 मिनट बाद टैक्सी ड्राइवर ने हार्न बजाया और कहा- प्लीज़, हमें जल्दी करना होगा। हम जितने लेट होंगे, खतरा बढ़ जाएगा।

सबका ध्यान भंग हुआ। फॉदर मारिया और स्वेतलाना ने इनको अलग किया, फिर सभी को टैक्सी में वापस बैठाया। वे टैक्सी में रोते रोते बैठ गयीं। जैसे ही सब बैठे, ड्राइवर ने टैक्सी आगे बढ़ा दी।

हिमानी टैक्सी को जाते हुए देख रही थी। उसकी आँखों में आँसू थे। जब टैक्सी आँखों से ओझल हो गई, तब भी वह दूर तक उस रास्ते को देखती रही। फिर धीरे धीरे उसके बहते हुए आँसुओं ने रास्ते को भी धुँधला कर दिया....।

मारिया और हिमानी को लेकर स्वेतलाना अन्दर आयी। उन्होंने अपने रूम में उसको लिटा दिया। मित्रों की याद में डूबी हिमानी को, बीती सभी घटनाएँ याद आ रही थी। रोते-रोते वह कब सो गई, उसे पता नहीं चला।

मित्रता का मिलन

हॉस्टल छोड़कर टैक्सी आगे बढ़ गई। जया, सायना और ईशा तीनों बीच में बैठी थी। भारत ड्राइवर के साथ वाली सीट पर, हर्ष और अवि पीछे की सीट पर बैठे थे। सबके मन दुखी थे। **हिमानी को छोड़कर, वे जाना नहीं चाहते थे। उन्हें ऐसा लग रहा था, जैसे अपना सब कुछ छोड़ कर जा रहे हों।** पिछले 4 वर्षों में यह पहला अवसर था, जब उन्होंने संकट की घड़ी में हिमानी को अकेला छोड़ा हो। टैक्सी में इंजन की आवाज के अलावा पूरी खामोशी थी। कोई किसी से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।

गाड़ी जैसे-जैसे आगे दौड़ रही थी रास्ता पीछे छूट रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे पेड़ पौधे पीछे की ओर दौड़ रहे हों। लगभग 30 किलोमीटर चलने के बाद अब जंगल का सुनसान एरिया शुरू हो गया था।

भारत आगे की सीट पर था। उसे सामने का रास्ता दूर तक दिखाई दे रहा था। उसकी आँखें भरी हुई थी, किंतु चेहरे पर कठोरता थी। वह अपलक गुजरती हुई सड़क को देख रहा था। सुनसान सड़क पर इक्का-दुक्का वाहन भी गुजर चुके थे। उसे दिखाई दिया, दूर सड़क के बीच दो लोग खड़े हैं। गाड़ी जैसे-जैसे पास आई तो उसने देखा -एक महिला-पुरुष सड़क के बीच में खड़े हैं। साथ ही सड़क के किनारे दूर एक महिला बैठी हुई थी, उसके पास एक 11-12 वर्ष की लड़की खड़ी थी।

टैक्सी जैसे ही पास आई, उन्होंने गाड़ी को रोकने का इशारा किया, किंतु ड्राइवर ने साइड लेकर गाड़ी आगे बढ़ा दी। इस पर भारत ने ड्राइवर से कहा

-गाड़ी रोको ना?

ड्राइवर बोला - इस रास्ते पर ऐसा कई बार होगा। यदि गाड़ी रोकी तो हम वक्त पर नहीं पहुँच पाएँगे। जया भी यह दृश्य देख रही थी। उसने ड्राइवर से कहा - नहीं, पहले गाड़ी रोको!

भारत भी बोल पड़ा -रुको रुको, उस फैमिली की क्या प्रॉब्लम है पहले सुन तो लें।

दोनों ने दबाव दिया तब ड्राइवर ने गाड़ी धीरे की। इस बीच गाड़ी लगभग 200 मीटर आगे आ चुकी थी। ड्राइवर ने दूरी देखकर गाड़ी रिवर्स की। थोड़ी देर में गाड़ी फैमिली के पास आ गयी। एक व्यक्ति भारत की विंडो के पास आया। देखने में वह लगभग 70 साल का वृद्ध मालूम पड़ रहा था। तब तक भारत विंडो का ग्लास नीचे कर चुका था।

-प्लीज़ हमारी मदद करो...! उस बूढ़े की आँखों में आँसू और आवाज में याचना थी।

- क्या बात है? भारत ने पूछा।

- वह जो बैठी है, वह मेरी बेटी है। वह प्रेग्नेंट है। उसकी हालत ठीक नहीं है। उससे चला नहीं जा रहा है। प्लीज़ उसे पोलैण्ड बॉर्डर छोड़ दो। हम जीवन भर आपके अहसानमंद रहेंगे।

बूढ़ा व्यक्ति याचना कर ही रहा था कि जया, सायना और ईशा गाड़ी से उतर आई। उसके साथ ही एक-एक कर सब उतर गए। उन्होंने देखा एक महिला वहीं सड़क के किनारे बैठी है। यह दृश्य देखकर जया समझ गई और बोली- क्या आप पोलैण्ड बॉर्डर जा रहे हैं?

वह व्यक्ति जया की ओर देखकर बोला - हाँ हम पोलैण्ड बॉर्डर ही जा रहे हैं। यह मेरी बेटी है। यदि आप इसे बॉर्डर तक लें जाएँ, तो आपका बहुत अहसान होगा।

जया ने फिर कहा -तो क्या आप सब पैदल पोलैण्ड जा रहे हैं?

अब जो बूढ़ी महिला थी, वह बोली -हमारे पास पैदल जाने के अलावा और कोई ऑप्शन नहीं है। हमने कई गाड़ियों को रोका, लेकिन किसी ने गाड़ी नहीं रोकी। केवल आपकी गाड़ी रुकी है। प्लीज़ हमारी मदद करो.... कहते-कहते वह बूढ़ी महिला भी रो पड़ी। उसी बीच महिला के पास खड़ी लड़की

आकर बोली- मेरी मॉम को बॉर्डर पहुँचा दो.. प्लीज़..!

छोटी बच्ची की भावुक प्रार्थना सुनकर जया का मन भर आया। उसने लड़की से कहा- हम आपको और आपकी मॉम, दोनों को पोलैण्ड बॉर्डर ले चलेंगे... ओके...

लड़की ने कहा- **नहीं, केवल मॉम को ले जाओ, मैं दादा-दादी को नहीं छोड़ सकती। उनको साथ लेकर आऊँगी।**

लड़की की बात सुनकर सबकी आँखें भर आई। इतनी सी उम्र में जिम्मेदारी की इतनी समझ। एक पल को सन्नाटा छा गया। जया ने सायना और भारत की आँखों में देखा, मानो कोई निश्चय ले रहे हों, जया ने फ्रेंड्स को एक तरफ आने का इशारा किया। फिर पाँचों थोड़ी दूर जाकर विचार विमर्श करने लगे, कुछ देर बात करने के पश्चात लौटकर आये, फिर भारत ने कहा - चलिए, आप सब बैठिए।

तब बूढ़े व्यक्ति ने कहा- नहीं हम आपको डिस्टर्ब करना नहीं चाहते, आप तो बस मेरी डॉटर को छोड़ दीजिए। हमारी फिक्र मत कीजिये, हम...

- इस पर जया बूढ़े व्यक्ति को समझाते हुए बोली- फॉदर हमारे पास दूसरी गाड़ी है, हम थोड़ी देर के बाद दूसरी गाड़ी में आ जाएँगे.... आप सभी इसमें जा सकते हैं....

भारत बोला- हम दोनों भी आपके साथ चलेंगे, उसने हर्ष की तरफ इशारा करते हुए कहा।

- यह सुन बूढ़े की आँखों में चमक आ गयी। उसे लगा जैसे कोई फरिश्ता मिल गया हो। बूढ़ा थोड़ी देर चुप रहकर इन्हें देखता रहा, फिर उसने पूछा

- कौन से देश से हैं आप?

- इस पर जया ने कहा - मैं भूटानी, ये नेपाली वो पाकिस्तानी, और ये दोनों इंडियन....यूँ समझिये हम सब इंडियन आयलैंड से हैं।

बूढ़ा भावुक होकर बोला- **हिमालयान एन्ड इंडिया इज़ ग्रेटेस्ट कंट्री.... थैंक यू.... गॉड ब्लेस यू ऑल!**

जया ने भी पूछ ही लिया- फॉदर आप यूक्रेनियन हैं?

फॉदर ने कहा- आइ एम स्वीडिश एण्ड माय वाइफ इज राशियन।

जया ने टैक्सी का दरवाजा खोलकर माँ बेटी और बच्ची को बीच की

सीट पर बैठाया। भारत ने बूढ़े व्यक्ति को आगे बैठाया, हर्ष और खुद पीछे की सीट पर बैठ गए। गाड़ी चलती इससे पहले वह बच्ची उतरकर फिर जया के पास आई। उसकी आँखें आँसुओं से भरी थी। वह बहुत ही भावुकता से बोली थैंक्यू दी...!

यह देख कर जया की आँखों में आँसू भर आए। उसने लड़की को गले लगाया और कहा- तुम दादा-दादी को ही नहीं, मॉम को भी ले जा रही हो, ...अब तो मुस्करा दो....?

जया की बात सुनकर लड़की ने मुस्कराने की एक असफल कोशिश की लेकिन उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े...

जया ने उसे वापस बिठाकर दरवाजा बंद कर दिया। उसे बेस्ट ऑफ लक कहा, और धीरे-धीरे गाड़ी आगे बढ़ गयी।

जया, ईशा, सायना और अवि जाती हुई गाड़ी को देखते रह गए।

ईशा भावुक होकर बोली -मुझे ऐसा लगा, जैसे आज हमने इंसान होने का फर्ज अदा किया।

सायना बोली- बिल्कुल! इंसान का वजूद, इंसानियत के बिना कुछ भी नहीं।

अवि भी बोल पड़ा- यह हमारे लिए गर्व के पल हैं। **मुझे हिमानी के रुकने पर बहुत गुस्सा आ रहा था, लेकिन अब समझ में आया कि वह अपनी जगह बिल्कुल सही थी।**

ईशा ने विषय बदलकर कहा- ओय, अब हम हॉस्टल कैसे चलेंगे?

जया ने कहा- मुश्किल से एक किलोमीटर के बाद सिटी एरिया है, वहाँ तक पैदल चलेंगे। फिर वहाँ से कुछ ना कुछ मिल ही जाएगा। चारों हॉस्टल की तरफ पैदल चल पड़े।

हिमानी की आँख खुली, तो सबसे पहले उसने घड़ी की ओर देखा, पाँच बजकर बीस मिनट हो रहे थे। अचानक वह उठ गई, क्योंकि बहुत लंबे समय तक वह सो चुकी थी। अभी वह आँखें मल ही रही थी कि स्वेतलाना अंदर

आई उसने कहा - जाग गई हिमानी जाओ, फ्रेश हो लो।

हिमानी बिना बोले बाथरूम चली गई। लगभग 10 मिनट में वापस आयी। तब तक मारिया भी आ चुकी थी। उसने आते ही कहा- हिमानी, तुम्हें तुम्हारा रूम दिखा देते हैं, तुम्हारे लिए एक गुड न्यूज भी है।

हिमानी ने चलते चलते नर्वस होकर पूछा- क्या?

स्वेतलाना ने कहा- तुम खुद ही चल कर देख लो!

पास के ही दो रूम छोड़कर वे 14 नंबर के सामने आकर खड़े हो गए। स्वेतलाना ने कहा- यह तुम्हारा नया रूम। पहले अपने रूम में तुम जाओ। हिमानी ने दरवाजे को पुश किया और रूम में दाखिल हो गई। जैसे ही अंदर आई तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गयी। वह आश्चर्य भरी नजरों से जया, ईशा, सायना और अवि को देख रही थी। शी और फिरोज भी बैठे थे।

हिमानी ने सबको आश्चर्य से देखा और बोली -अरे, तुम लोग गए नहीं वापस क्यों आ गए?

इस पर ईशा ने कहा - तुझे छोड़ कर कैसे जा सकते हैं!

फिर जया बोली एक बार तुझे छोड़ भी दें, लेकिन तूने जो संकल्प लिया है, उसे अधूरा छोड़कर हम नहीं जा सकते थे।

हिमानी ने चिंता करते हुए कहा- लेकिन यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है। तुम्हें चले जाना चाहिए। सबके मम्मी-पापा इंतजार कर रहे हैं....

वांग शी ने कहा- **और तुम्हारे मम्मी पापा इंतजार नहीं कर रहे क्या?**

इस पर हिमानी ने कहा- संकल्प मैंने लिया है तो उसे मुझे ही पूरा करने की जिम्मेदारी भी मेरी ही है। तुम्हें अपने घर चले जाना चाहिए... वहाँ रहकर भी तुम अभियान में मदद कर सकते हो।

इसपर सायना बोली- **अब यह संकल्प केवल तुम्हारा नहीं रहा, पूरी दुनिया के युवाओं का है।**

हर्ष बोला -और इसे पूरा किए बिना हम यहाँ से नहीं जा सकते।

हिमानी झुँझलाकर बोली- लेकिन इसमें जान भी जा सकती है, तुम समझते क्यों नहीं!

- समझ में तो हमें अब आया है। विश्व की शान्ति के लिए यदि जान भी चली जाए तो इससे बड़े गौरव की बात क्या होगी। जया ने उत्तर दिया।

शी ने नारा लगाया - द वर्ल्ड इज़ फैमिली।

सबने एक स्वर में कहा- द वर्ल्ड इज़ फैमिली।

हिमानी ने डायरी खोली, उसमें सद्विचार लिखा-

प्रेम को हटा लें, तो यह पृथ्वी कब्रस्तान बन जाएगी।

- राबर्ट ब्राऊलिंग (प्रसिद्ध, कवि)

अब हिमानी ने डायरी लिखना शुरू किया-

सच ही कहा है- प्रेम से बढ़कर इस पृथ्वी पर और कोई बड़ी ताकत नहीं है।

आज का दिन मेरे लिए सबसे खास रहा। शुरू में लगा कि- जीवन खत्म हो चुका है, अब कुछ नहीं बचा। लगा जैसे हर साँस छूट रही हो, और दिल ने धड़कना बन्द कर दिया, धमनियों में जैसे खून जमता जा रहा था।

ऐसा भी लगा कि, दुनिया बहुत स्वार्थी है, लोग बस अपने लिए ही जीते हैं...दूसरों के लिए, नहीं... लेकिन मैं गलत थी, सब लोग स्वार्थी नहीं होते, वे दूसरों के लिए भी जीते हैं।

आज मुझे यह भी समझ में आया कि, प्यार में कितनी बड़ी ताकत है और इन्सान सच्चे दोस्त के बगैर कितना अधूरा है। अचानक सबकुछ लौट आया। अब दिल भी धड़क रहा है। सपनों में फिर बहार आ गयी। उम्मीदें जाग उठी हैं। दोस्त साथ हैं... तो फिर सबकुछ है... अब जीने और मरने का खौफ नहीं... मुझे पूरा यकीन है, अब हम अपने मकसद में जरूर कामयाब होंगे। वसुधैव कुटुम्बकम् पुस्तक हमारा मार्गदर्शन करेगी।

ईश्वर को धन्यवाद, जिसने मुझे इतने सच्चे और अच्छे मित्रों का उपहार दिया।

मैं अपने माता-पिता और सभी मित्रों के पेरेन्ट्स की गुनहगार हूँ... उनका बहुत दिल दुखाया है... उन सबसे हाथ जोड़कर क्षमा माँगती हूँ।

लेकिन, विश्वास दिलाती हूँ कि, हम उस अभियान पर हैं... जिसमें आप जैसे करोड़ों माता पिता का दिल टूटने से बचाया जा सके....

रेड अलर्ट

जया ने कमरे में आते ही हिमानी को कहा कि हिमू आज एक भारतीय स्टूडेंट नवीन शेखरप्पा की मौत हो गई।

हिमानी ने आश्चर्य से कहा- ओह माय गॉड...! कहाँ? कैसे?

जया बोली- वह खाना लेने के लिए होटल की कतार में खड़ा था और ब्लास्ट हो गया। उसमें उस बेचारे की मौत हो गई। बहुत बुरा हुआ!

हिमानी अफसोस में पड़ गई कि, उसने किसी का क्या बिगाड़ा था। **युद्धों में यही तो होता है। निर्दोष लोगों के हिस्से में मौत और त्रासदी आती है...**

रेड अलर्ट का सायरन बजते ही हॉस्टल में भगदड़ मच गई। यह संकट का समय था। इस प्रकार के सायरन बजने का मतलब है कि, सबको तत्काल अपना काम छोड़कर बंकर में शरण लेना है। हिमानी चैप्टर्स के नोट्स तैयार कर रही थी। जैसे ही सायरन बजा, उसने जल्दी-जल्दी बुक-कॉपी रेक में रखी। ईशा और जया कॉरिडोर से भागकर अंदर आयीं।

आते ही ईशा बोली - चल हीमू जल्दी कर।

हिमानी अपना इमरजेंसी बैग उठाते हुए बोली - अपना अपना इमरजेंसी बैग ले लो। जया ने हाँ में सर हिलाया और बैग हाथ में उठाकर उसे चेक करने लगी।

हर स्टूडेंट के पास अपना एक इमरजेंसी बैग रहता था, जिसमें वॉटर बॉटल, खाने की सामग्री, चार्जर, एक जोड़ कपड़े, दवाइयाँ और कुछ इमरजेंसी सामान रहता था। बंकर में कब तक रहना पड़े, कुछ कहा नहीं जा सकता।

इसलिए सभी स्टूडेंट्स को इमरजेंसी बैग तैयार रखना पड़ता है। बैग में रखे हर सामान के मल्टीपल यूज के तरीकों की ट्रेनिंग दी गयी थी। यह बैग सुरक्षा की दृष्टि से भी बहुत उपयोगी था। ईशा ने बैग कँधे पर टाँगते हुए कहा- -जल्दी कर जया।

हिमानी दरवाजे तक आ गयी और कहा- चल।

तीनों कमरे के बाहर आ गई। कॉरिडोर पार कर वे लिफ्ट की तरफ बढ़ीं, उन्होंने देखा लिफ्ट, बिज़ी थी।

वे कुछ पल रुकीं- फिर हिमानी ने कहा- ज्यादा वक्त गँवाने के बदले हम सीढ़ी से ही चलते हैं।

सायना तत्काल चलते हुए बोली- चलो...

अब वे तीनों सीढ़ियाँ उतरने लगीं। कई और स्टूडेंट भी सीढ़ियों से नीचे जा रहे थे। तीनों नाइन्थ फ्लोर पर थीं। इतना उतरना आसान नहीं था। लेकिन वे उतरती चली जा रही थी। अब सांसें भी फूलने लगी थी, लेकिन इससे ज्यादा चिंता जान बचाने की थी। वे जल्दी से जल्दी बंकर में पहुँच जाना चाहती थी, ताकि अपनी जान बचा सके। बाहर कभी भी, कहीं भी, ब्लास्ट हो सकता था। इसी कारण पूरे हॉस्टल में अफरा तफरी मची थी। यह तीसरी बार था, जब स्टूडेंट्स को बंकर में शरण लेना पड़ रही थी।

तीनों ही जल्दी जल्दी सीढ़ीयाँ उतरने लगीं। वे सात फ्लोर उतर चुकी थी। दो और बाकी थे। फूलती हुई साँसों के बीच, सायना ने कहा- यार ये इतने ऊपर हमें रूम क्यों दिया हैं? मेरी तो जान ही निकल...

उसका वाक्य भी पूरा नहीं हुआ और उसका पैर सीढ़ी से फिसल गया। वह गिरी, लेकिन गिरते ही हिमानी ने उसे सम्भाल लिया...।

सायना बोली- थैंक्यू,... तूने सम्भाल लिया, नीचे चली जाती...

लेकिन यह क्या...?

सायना को सम्भालते, सम्भालते अब हिमानी का पाँव फिसला, और उसका सर दीवार से टकरा गया। तत्काल जया और सायना ने उसे पकड़ लिया। सायना घबराकर बोली- तुझे कुछ हुआ तो नहीं...?

हिमानी सर को सम्भालते हुए बोली- कुछ नहीं।

सायना फिर बोली- थैक गॉड कि, तुझे चोट नहीं लगी।

अब जया ने उसके सर को अंगुलियों से टटोलते हुए कहा- अरे तुझे तो ब्लड निकल आया है। सायना ने जल्दी से इमरजेंसी बैग से दवाई निकाली।

हिमानी को सीढ़ी पर बैठाया, और दवाई लगाकर बैंडेज लगा दिया।

जया ने कहा- थैंक गॉड.. थोड़ी सी ही लगी है... अब बिल्कुल आराम से उतरो...। दोनों हिमानी को संभालकर सीढ़ियाँ उतरने लगीं। आखिर जैसे तैसे तीनों बंकर तक पहुँच ही गयी।

बंकर ग्राउण्ड फ्लोर के ठीक नीचे था। एक बहुत संकरे गलियारे से उन्हें गुजरना था। यह इतना संकरा था, कि सिर्फ एक व्यक्ति ही जा सकता था। गलियारे के सामने पहुँचकर उन्होंने थोड़ी देर रुककर सांस ठीक की। फिर एक के पीछे एक तीनों बंकर में घुस गयी। गलियारे में दो मोड़ आते थे। उसके बाद एक बहुत बड़ा हॉल, जिसमें लोहे के बहुत मोटे मोटे पिलर्स एक से डेढ़ फीट मोटे गार्डर्स लगे थे। बंकर की दीवार सख्त थी। दीवार के साथ चारों और लकड़ी की बैंचेस लगी हुई थी। नीचे फ्लोर पर मेट बिछी थी। इसके ईस्ट साइड में दो किचन तथा वेस्ट साइड में वॉशरूम थे। लास्ट साइड खाली पड़ी थी। किचन में खाने के सामान का स्टॉक हमेशा रहता था। बंकर की छत भी बड़ी मजबूत दिखाई दे रही थी, जो किसी भी प्रकार के नुकसान को झेल सकती थी।

हिमानी यूक्रेन में लगभग साढ़े पाँच वर्षों से थी, उसने इसके बारे में सिर्फ सुन रखा था, कभी देखा नहीं था। उसने कभी कल्पना भी नहीं कि थी, कि यहाँ

भी छुपना पड़ सकता है। इसे देखकर बड़ा अजीब सा महसूस होता है। बंकर यूँ तो साफ सुथरा था, किंतु सीलन से भरा हुआ था। इसमें एक अजीब किस्म की स्मेल आती रहती थी, जो हिमानी को बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। लेकिन क्या करें, सुरक्षा के लिए तो रहना ही था। थोड़ी ही देर में ज्यादातर स्टूडेंट्स बंकर में पहुँच चुके थे। हॉस्टल वार्डन भी आ चुके थे। अफरातफरी के बीच, स्टूडेंट्स अपनी-अपनी जगह ढूँढकर बैठ गए।

हिमानी और उसके फ्रेंड्स भी बैठ गए। सायना ने हिमानी से फिर पूछा- तुझे दर्द तो नहीं हो रहा ना?

हिमानी बोली- नहीं, अब बिल्कुल ठीक है।

फॉदर पास की ही बैंच पर बैठे थे। थोड़ी देर के बाद वे खड़े हुए और बोले- साइलेंस प्लीज़... सभी स्टूडेंट्स आ चुके हैं? कोई हॉस्टल में तो नहीं रह गया है?

उन्हें यकीन हो गया, कि सब आ गये हैं, तो वे फिर बोले- हमारे शहर पर खतरा है। कभी भी, कहीं भी ब्लास्ट हो सकता है, इसलिए आपसे जब तक न कहा जाए, तबतक आपको यहीं रहना है। कब तक रहना है, यह कोई नहीं जानता, किंतु जब तक सेफ सिग्नल नहीं मिलता, हम सबको यहीं पर रहना होगा.... लेकिन डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। हम कुछ मुश्किलों के बीच यहाँ सेफ रह सकते हैं.... **मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि, संकट की यह घड़ियाँ जल्द दूर हों, जिससे हम सब बंकर के बाहर निकलकर आजादी से अपना काम कर सकें।**

इतना कहने के बाद फॉदर बैठ गए। बंकर में खामोशी छा गई। सबके चेहरे पर खौफ दिखाई दे रहा था, फॉदर जोसेफ बिल्कुल शान्त दिखाई दे रहे थे। वह एक ईसाई हैं। बड़ी सफेद दाढ़ी और सफेद ड्रेस, ऊपर से उनकी गंभीर पर्सनालिटी बहुत ही आकर्षक लगती थी। यहाँ की नौकरी से पहले वे ओडिशा में एक चर्च की सेवा में थे। यही कारण था कि वे, पूरी तरह से धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति हैं। इसलिए उन्हें सब सम्मान से फॉदर ही कहते हैं। रशिया और यूक्रेन की लड़ाई का उन्हें बहुत दुःख था। वे शान्ति के पक्षधर थे, पूरे विश्व में वे शान्ति चाहते थे।

लगभग एक घन्टा हो चुका था। पूरे बंकर में मौन पसरा था। हिमानी के

मन में बार-बार कई प्रश्न उठ रहे थे।

हर बात को लेकर देश युद्ध करते क्यों है? क्या वे समस्या को टेबल पर नहीं सुलझा सकते? क्या युद्ध के अलावा इनके पास और कोई विकल्प ही नहीं है?

ऐसे कई प्रश्न उसे विचलित किये जा रहे थे। आखिर उसने फॉदर से पूछ ही लिया- फॉदर यूक्रेन और रशिया की लड़ाई क्यों हो रही है?

फॉदर कुछ पल चुप रहे फिर गहरी सांस लेकर बोले- **यह सिर्फ लालच, जिद और ईगो की लड़ाई है। पूरी दुनिया इसी जाल में उलझ कर बेबस है।**

हिमानी ने कहा- क्या टेबल पर बैठकर दोनों प्रॉब्लम सॉल्व नहीं कर सकते? निर्दोष लोगों की जान लेना जरूरी है?

फॉदर ने हिमानी की आंखों में झांका। फिर कहा- **नहीं कर सकते... क्योंकि प्रॉब्लम्स जमीन पर नहीं है... प्रॉब्लम्स दिमाग में है.... इंसान के पास ऐसी कोई समस्या नहीं, जिसका इलाज न हो, लेकिन वह करना नहीं चाहता.... उसका ईगो हर्ट होता है.... उसके दिमाग में निरन्तर युद्ध चलता ही रहता है।**

थोड़ी देर हिमानी चुप रही उसने फिर पूछा- मतलब दुनिया में युद्ध ऐसे ही होते रहेंगे?

- हाँ.. जब तक नई पीढ़ी को विरासत में युद्ध के बदले शान्ति नहीं मिलती। जबतक इतिहास क्रूरता का गौरवगान बन्द नहीं करता। तबतक युद्ध ऐसे ही चलते रहेंगे। ये रशिया-यूक्रेन तो एक बहाना है। पृथ्वी पर युद्ध किसी न किसी रूप में जारी रहता है।

- तो क्या इसका कोई हल नहीं है? हिमानी ने पूछ ही लिया।

फॉदर ने फिर कहा- हल तो बहुत हैं, लेकिन आदमी करना नहीं चाहता।

फॉदर की बातें सुनकर हिमानी किसी गहरी सोच में डूब गयी।

पृथ्वी पर वसुधैव कुटुम्बकम् की कल्पना ऐसे ही नहीं कि गयी है। यह विनाश से बचने का एक सुरक्षा कवच है। यह संरचना सौरमण्डल के परिवार से ली गयी है, जो पूरी तरह सच है। इसलिए दुनिया में जीने के लिए हर इंसान को सृष्टि के सिद्धान्तों पर ही जीना चाहिए।

लगभग 5 घण्टे बाद सेफ सिग्नल मिला और सब अपने-अपने रूम में चले गए।

हिमानी से जया ने पूछा डिस्प्ले बोर्ड पर आज क्या सद्विचार था? हिमानी ने कहा- एक चीनी कहावत थी - **जो दो खरगोश के पीछे भागता उसे एक भी नहीं मिलता।**

सायना बैठी-बैठी सुन रही थी, उसने चिढ़ते हुए कहा- क्या सद्विचार सद्विचार लगा रखा है। ये भी कोई सद्विचार है।

डायरी लिखना, कोट्स लिखना ये सब पुराने जमाने के काम हैं। क्या होता है इससे?

हिमानी थोड़ी देर उसे घूरकर देखती रही, फिर बोली-तुझे कार चलानी आती है?

सायना ने कहा- नहीं आती है, पर इससे कार का क्या सम्बन्ध है?

अगर तुझे कार चलाना नहीं आती और तू चलाएगी तो क्या होगा?

अरे यार! एक्सीडेंट हो जायेगा, और क्या? पर इससे कोट्स का क्या लेना-देना?

हिमानी बोली- करेक्ट... जिस तरह सीखे बगैर कार नहीं चलाई जा सकती है। ठीक उसी तरह जीवन को समझे बगैर उसे जीया नहीं जा सकता। जो समझे बगैर जीता है, उसे जीवन घसीटना पड़ता है।

सायना ने कहा- ओय... सिर के एक मीटर ऊपर से जा रही है....थोड़ी नीचे आ... फिलासफर मत बन... सीधी बात कर...

हिमानी बोली- **यूँ समझ ले, कि जीवन भी एक कार की तरह है। इसको चलाने वाला भी एक्पर्ट ड्राइवर हो तो मंजिल तक आसानी से पहुँच जाता है....**

सायना झुंझलाकर बोली- अरे यार! तो इसका कोट्स से क्या कनेक्शन है?

हिमानी ने उसे शांत करते हुए कहा- ये जो सद्विचार होते हैं... ये आदमी को जीवन की गाड़ी चलाने में एक्सपर्ट बनाते हैं। सद्विचार आदमी को सही दिशा देकर मजबूत बनाते हैं।

अब जया ने सायना से कहा- पागल, अच्छे विचार जीवन के सफर में मील के पत्थर की तरह होते हैं। जो हर वक्त हमें रास्ता दिखाते हैं..... समझ गयी बच्ची...?

सायना जया से अकड़कर बोली- ओय... तू क्यों टाँग फसा रही है...? इतनी बुद्धू भी नहीं हूँ, जितनी तू समझ रही है।

जया ने कहा - अच्छा, तो तेरा सिक्स्थ सेंस कहाँ गया था अभी?

फिर जया को मुँह चिढ़ाते हुए, सायना कमरे से बाहर निकल गयी।

मैं समय हूँ...!
यदि मुझे समझ लिया, तो फिर कुछ समझने की आवश्यकता नहीं होगी...

पलायन का दर्द

आज पलायन के संकट की खबरों और स्टोरीज से पूरा डिस्प्ले बोर्ड भरा हुआ था। अलग अलग एजेंसीज की खबरें और स्टोरीज बोर्ड पर हेंग थी।

हिमानी ग्रुप लंच के लिए जा रहा था। लेकिन उन्होंने फैसला किया कि, पहले खबरें और स्टोरीज पढ़कर वे लंच को जाएँगे। अतः सभी खबरें पढ़ने लगे। हिमानी ने सबसे पहले नोटिस बोर्ड पर लगा श्रेष्ठ विचार पढ़ा, फिर खबरें पढ़ने लगी....

रूस ने फिर दागीं हाइपरसोनिक मिसाइलें।

अजोवसागर तट पर स्थित बंदरगाह शहर मारियापॉल को रूसी सैनिकों द्वारा घेर लिया गया है। स्थानीय अधिकारियों ने कहा है कि- घेराबंदी में सैकड़ों लोग मारे गए हैं। उनमें से कुछ को सामूहिक दफनाया गया है। समाचार एजेंसी ने बताया कि, रूस ने रविवार को काला सागर और कैस्पियन सागर में जहाजों से क्रूज मिसाइलों द्वारा यूक्रेन पर हमला किया।

इन खबरों को पढ़ने के बाद अब हिमानी पलायन की एक स्टोरी पढ़ने लगी।

पलायन का दर्द...

औरतों बच्चों की तस्करी की आशंका

यूनिसेफ प्रवक्ता ने बताया कि यूक्रेन छोड़कर जाने वाले हर 10 में से 9 बच्चे वह महिलाएँ हैं। इसके मद्देनजर नए अनजाने माहौल में मानव तस्करों का शिकार बनने के खतरे के प्रति आगाह किया गया है। जेन्स एल्डर ने कहा कि, करीब एक सप्ताह पहले तक मुख्य सीमा पर बड़ी संख्या में लोग खड़े हैं। राजधानी, व शहरों के नाम की आवाज लगा रहें हैं। और लोग उन बसों में चढ़कर जा रहे हैं। ये सच है कि, इनमें सहयोग करने वाले भी होते हैं लेकिन, सब सहयोग करने वाले नहीं होते। ऐसे माहौल में तस्करी का व्यापार बढ़ जाता है। यूक्रेन और उसके पड़ोसी मुल्कों में तस्करी गिरोह तेजी से सक्रिय हो गए हैं। युद्ध की आड़ में वे अपने करोबार को बढ़ाते जा रहे हैं।

युद्ध के पहले दिन से ही हिमानी लगातार समाचार पढ़-सुन रही थी। वह सोच रही थी, **लाखों लोग अपना घर-संसार छोड़कर जा रहे, अपनों से बिछड़ रहे हैं। परिवार बिखर गये... घर उजड़ गये। महिला बच्चे और बूढ़ों के दर्द की लाखों अनकही कहानियाँ हैं, जो युद्ध के उन्माद में दफन हो हो जाती हैं। कभी-कभी लगता है, कि इंसानों से ज्यादा शान्त तो जानवर दिखाई देते हैं।**

कलतक जो इमारतें आसमान छू रही थी, आज वो केवल मलवे में तब्दील हो चुकी हैं। जिन स्कूलों में शिक्षा का प्रकाश था, अब वो अंधेरे में गुम हो गयी। खेल मैदान, स्टेडियम, जिम, अस्पताल सब तबाह हो गये हैं। बची है, तो केवल अमानवीय कालिख। यह एक अंतहीन दर्द भरी कहानी है।

युद्ध का परिणाम जो हो, सो हो, लेकिन इस युद्ध ने, विश्व में कई और युद्धों को जन्म दे दिया है, जो समय आने पर ऐसा ही विकराल रूप धारण करेंगे।

युद्ध करने के लिए सबके पास अपनी वजह, तर्क इतिहास की कहानियाँ हैं। तो किसी के पास युद्ध करने की मजबूरी भी। **सबके पास युद्ध करने की अपनी-अपनी कहानी है लेकिन उन लाखों कहानियों का क्या, जो केवल एक युद्ध से पैदा होती हैं?**

एक और खबर पर हिमानी की नजर पड़ी। एक स्वयंसेवक ने बताया कि, जब आप बहुत थक चुके हो, आस-पास कोई दोस्त ना बचा हो, न ही आपके पास पैसे और अन्य कोई साधन बचा हो, तब आप वह सब करने को तैयार हो जाते हैं जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

शरणार्थियों की त्रासदी कोई एक प्रकार की नहीं हो सकती। उन्हें कई-कई प्रकार की मुश्किलों से गुजरना पड़ता है। पोलैण्ड, यूके, जर्मनी के साथ ही अन्य जगहों पर लोगों ने शरणार्थियों के लिए अपने अपने घर के दरवाजे खोल दिए। इनमें से अधिकतर अच्छी मंशा से ऐसा कर रहे हैं। लेकिन दुर्भाग्य से सभी की मंशा एक सी नहीं होती। हमें सोशल मीडिया पर एक यूक्रेनी महिला का पोस्ट मिला जो अब जर्मन जा चुकी है। यहां जिस शख्स ने उसके लिए कमरे का इंतजाम किया। पहचान पत्र के कागजात दिलाये और यह कहा कि, वह उनका घर मुफ्त में साफ कर दे। इसके बाद इस शख्स ने आपत्तिजनक मांगें रखना शुरू कर दिया। लेकिन जब उन्होंने इससे इंकार कर दिया, तो उस शख्स ने इन्हें सड़क पर फेंक दिया। वारसा में मानव तस्करी के खिलाफ काम करने वाले एनजीओ स्ट्राडा की चीफ एक्जीक्यूटिव आईरिना डेविड ने बताया कि- इस तरह की कहानियां आम हैं। **हम सब किशोरों को जानते हैं, बेशक असुरक्षित महसूस करते हैं। उन्हें स्वीकार्यता और पहचान चाहिए। वह शरणार्थी हैं और घर दोस्तों से काफी दूर हैं, तो उनका शोषण आसान हो जाता है।**

अक्सर युद्ध में इस प्रकार के लोग भी सक्रिय हो जाते हैं और मजबूर लोगों का फायदा उठाने की कोशिश करते हैं।

मानव अधिकार समूह चाहते हैं, सरकार उन लोगों की रक्षा करे, जो अपनी जान बचाने के लिए भाग रहे हैं, उन्हें सुरक्षा की जरूरत है।

हिमानी खबरें पढ़ती जा रही थी।

बच्चों पर पड़ सकता है त्रासदी का बुरा असर

बहुत छोटे बच्चों को समझ नहीं आ रहा है कि, उनकी जिन्दगी अचानक सिर के बल कैसे उलट गयी? वे सामने आई परेशानियों को महसूस कर रहे होंगे, किन्तु उनके मन में एक प्रश्न जरूर उठता होगा, कि आखिर इन हालातों में मेरा क्या कसूर है?

पढ़ते-पढ़ते हिमानी की आंखें भर आई। वह सोच रही थी कि, यह त्रासदियाँ सिर्फ निर्दोष लोगों के हिस्से में ही क्यों आती हैं।

उसे याद आया कि, इस वक्त स्वेतलाना मैडम से उसे जरूरी काम से मिलना था। अतः उसने पढ़ना छोड़ा और वह स्वेतलाना मैडम के रूम की ओर निकल पड़ी... बाकी सब लंच के लिए चले गए।

भविष्य का भटकाव

वीडियो चैनल पर कुछ भारतीय छात्रों के पलायन की स्टोरी का वीडियो था, जिसे हिमानी देख रही थी।

वीडियो चल रहा था। एंकर की आवाज आ रही थी....।

रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच फँसे भारतीय छात्र लगभग 20,000 से अधिक थे। इनमें से कई छात्र पोलैण्ड, हंगरी और रोमानिया के रास्ते से बाहर निकले। अत्यधिक ठण्ड बर्फबारी के बीच, भूख से लड़ते हुए पैदल चलकर इन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इसके बाद भारत सरकार, ऑपरेशन गंगा के तहत सभी छात्रों को सकुशल स्वदेश लेकर आयी। बहुत कम उम्र में बड़ी कठिन परीक्षा देकर ये छात्र स्वदेश लौटे थे। इन छात्रों का भविष्य क्या होगा? पता नहीं। आइए! जानते हैं ऐसे स्टूडेंट्स की कुछ छोटी छोटी दास्तान.....

- खार्कीव के बंकर में छिपे गोपीकृष्णन का कहना है कि, हम पूरे 7 दिन बंकर में छुपे हुए थे। बहुत साल पहले बने ये बंकर धूल और सीलन से भरे थे। हिटिंग का भी कोई जरिया नहीं था। बाहर बर्फ गिर रही थी और तापमान -2 डिग्री था। बाहर धामकों की आवाज आ रही थी।

- 19 साल के बालाकुमार ने पैदल ही लंबी यात्रा की। वेटर्निटी साइंस का यह स्टूडेंट लवीव से निकला तो चलता ही गया। उसने पैदल ही तीन अलग-अलग बॉर्डर से निकलने की कोशिश की। इसके बाद यह यूक्रेनियन अधिकारियों की मदद से निकल पाया।

युद्ध की त्रासदी के बीच लौटे हर भारतीय स्टूडेंट की अपनी एक दर्द भरी

कहानी थी। इनमें- **भोपाल** की युक्ता वर्मा, गुँजन कुशवाह, प्रियांशु तिवारी, सृष्टि सोनी, आकांक्षा सिंह, विवेक पटेल, अनूप पचौरी, दीपांशु विश्वकर्मा, अवनी मुद्‌गल, प्राची मिश्रा (बाग मुगालिया), **देवास** की शिवानी प्रजापति, हर्ष ठाकुर, बागली के विकास राणा। **इन्दौर** की आर्या सोनवणे, खुशी शर्मा, प्रणव राय, ममता पाटीदार, कशिश चौधरी, प्रियांशु गौतम, श्रेयासिंह, प्रणव राय, विनीता नरूला, हर्षल मीणा, शुभम जिराती।

विदिशा के हर्षित दुबे, अंशुल देशमुख। **उज्जैन** की अनुष्का यादव, शिवानी शर्मा, प्रभव परमार, विनीता मूसले। **रतलाम** की खुश्बू कुरैशी। **बुरहानपुर** की यूबेद खान। **छतरपुर** का उत्कर्ष दुबे। पिपरिया का नीलेश होड़ाऊ। **सतना** का ऋषभ श्रीवास्तव, वैशाली श्रीवास्तव। **बालाघाट** की प्रगति ठाकरे। **बिलासपुर** का नीलेश जायसवाल। **ग्वालियर** का प्रतीक चौधरी, काकुल जाट, रवि कुमार।

गुना का पहरूवा आरोन, अनिल धाकड़, रोहन गुप्ता, पीयूष सक्सेना, अलीशा खान। **राघोगढ़** का कुलदीप धाकड़, **सीधी** का शुभम, **छत्तीसगढ़** का निलेश, **भिलाई** की ईशा, शम्शी, फिरदोस, अदिति जैसे हजारों विद्यार्थियों की कहानी कुछ इस प्रकार थी-

हम सब माइनस 5 से 10 डिग्री के बीच बुरे हालात में 20 से 50 किलोमीटर पैदल चलकर बॉर्डर तक पहुँचे। नींद और भूख से लड़ते रहे, अनेक प्रकार की समस्याओं के बीच बंकरों में छुपकर रात गुजारी, कई दिनों से सोये नहीं। ऐसी अनेक परेशानियों के बाद यह सब बॉर्डर तक पहुंचे, लेकिन बॉर्डर पार करने के बाद इनकी परेशानी का अंत हो गया। ऑपरेशन गंगा के माध्मय से यह सभी स्टूडेंट्स सकुशल भारत पहुँच गए।

मोरक्को का 19 वर्षीय जॉनसन निप्रो मेडिकल यूनिवर्सिटी का छात्र है। वो कहता है कि, मैं बहुत पशोपेश में हूँ। अभी मैं एक सार्वजनिक स्थान पर हूँ और दूतावास की कार्रवाई का इंतजार कर रहा हूँ।

मिस्त्र, ट्यूनीशिया, नाइजीरिया और मोरक्को के छात्रों का एक ग्रुप, जो ट्रेन के टर्मिनल के बाहर खड़े बातें कर रहा था, उन्होंने एक त्रासदी भरी यात्रा का हाल बताया। अब वे अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं कि, आगे क्या होगा?

घाना की टीना 21 वर्षीय निप्रो मेडिकल यूनिवर्सिटी की स्टूडेंट 2019 से निप्रो में रह रही है। उसने कहा- मैं काफी अकेला महसूस कर रही हूँ। मेरे लिये ये अबतक का सबसे बुरा वक्त है। मैं घर जाना चाहती हूँ।

- जहोनी के रेलवे स्टेशन पर बहुत भीड़ थी। अपने सामान के साथ बैठी भारतीय शहर चेन्नई की वैष्णवी एक स्त्री रोग विशेषज्ञ बनना चाहती है। वैष्णवी निप्रो शहर में चिकित्सा का अध्ययन कर रही है। वो एक बड़े समूह के साथ निकलकर आई थी। उसका यह अंतिम वर्ष था। वह बोली- अब यहाँ से जाना पड़ रहा है। फ्यूचर में क्या होगा कुछ पता नहीं।

- 21 साल का माइकल, जो ब्रिटेन का रहने वाला था। तीन साल से मेडिकल की पढ़ाई कर रहा है। इसे अन्य देश के छात्रों के साथ लवीव के लिये बस से निकलना है। फिर वहाँ से पोलैण्ड बॉर्डर। वह अपने घर वाले जो मैनचेस्टर में रहते हैं, से नियमित सम्पर्क में है। वह दुःखी है उसका कहना है, कि अभी मुझे सिर्फ घर जाना है.... आगे जो होगा देखा जाएगा...

हिमानी लैपटॉप पर फोरम की गतिविधियों का फीडबैक ले चुकी थी। अब सोने से पहले उसने डायरी उठाई और लिखा -

पलायन एक ऐसी त्रासदी है, जिसका कोई उपाय नहीं। दर्द की यह कहानी शुरू तो हो जाती है, लेकिन खत्म नहीं होती...।

हर बिछड़ने वाले का अपना एक किस्सा होता है और हर किस्से में छुपा दर्द... दर्द भी ऐसा, जिसकी कोई दवा नहीं। जिसे कोई मरहम ठीक नहीं कर पाता।

पृथ्वी पर कहीं भी युद्ध हो... बसा हुआ घर-परिवार छोड़ने का सिलसिला उसके साथ चलता है। नर्क की यह ऐसी त्रासदी है, जो निर्दोष लोगों के हिस्से में आती है। महिला, बच्चे, अपाहिज और बूढ़े इसके आसान शिकार होते हैं। शरणार्थी मनुष्य कम, सामान ज्यादा नजर आते हैं।

दुनिया में भलाई बहुत है, लेकिन बुराई उससे भी ज्यादा है। जो लोग युद्ध में मारे जाते हैं, वे हर त्रासदी से मुक्त हो जाते हैं, किन्तु जो बच जाते हैं, उसका जीवन मरने वाले से कहीं बदतर हो जाता है। उन्हें रोज मरना पड़ता है।

क्या आप ऐसी ट्रेन में सफर करना पसन्द करेंगे, जिसका आपको पता नहीं कि, वह कहाँ जा रही है? नहीं ना...? किन्तु युद्ध के पलायन करने वाले को ऐसी ही ट्रेन में बैठना पड़ता है।

आदमी कितना भी विकसित हो जाए। उसके कपड़े और भाषा ही बदलती है। उसकी आदिम फितरत कभी नहीं बदलती। पशुता छाया की तरह उसके साथ चल रही है। आज भी आदमी के थोड़े से गुस्से में दर्जनों जानवरों के रूप देखने को मिल जाते हैं। शक्ति और क्रूरता के आगे नतमस्तक होकर सारी दुनिया इसे भाग्य मान लेती है।

.......तो बस! यही उसका भाग्य बन जाता है।

वसुधैव कुटुम्बकम्

युद्ध की विभीषिका बढ़ती जा रही थी। हॉस्टल में अब लगभग 20% स्टूडेंट्स ही बच गए थे। ऐसा लगता है, कि जो रह गए हैं, ये अब जाना नहीं चाहते हैं, सभी वर्ल्ड पीस फोरम का हिस्सा बनकर काम करने को संकल्पित हैं। हिमानी ने सबको अलग-अलग काम बाँट दिये हैं।

वर्ल्ड पीस फोरम का कारवाँ बढ़ता जा रहा था। अब इस फोरम को साधनों की मदद भी मिल रही थी। कई देशों के द्वारा फोरम की सरहाना की गई थी। प्रतिक्रिया के सैकड़ों मैसेज हर दिन आते, जिनमें 90% उत्साह बढ़ाते, तो दस प्रतिशत अपोजिट भी होते थे।

फॉदर जोसफ ने यूनिवर्सिटी से एक बस की मांग की थी, अतः यूनिवर्सिटी ने कुछ समय

के लिए एक बस व्यवस्था पूरी कर दी थी। इसके साथ ही फॉदर ने ईंधन की व्यवस्था भी करवा ली थी। फँसे हुए नागरिकों को यह बस बॉर्डर तक छोड़ने का काम कर रही थी। स्वेतलाना मैडम ने एक बड़ी टवेरा गाड़ी अस्थाई तौर पर फोरम को सौंप दी थी। कम्प्यूटर लेब भी तैयार हो चुकी। बंकर में इमरजेंसी वॉर्ड की तैयारी हो चुकी है। 40 वॉलेंटियर पास भी बन चुके हैं, जो कहीं भी आ-जा सकते हैं।

बचे हुए स्टूडेंट्स रात दिन फोरम के काम में लगे हुए थे। लेकिन काम से निपटकर शाम को वे एक प्रोग्राम जरूर करते थे। आज भी शाम सात बजे का प्रोग्राम शुरू होने वाला है। कुछ स्टूडेंट्स आ चुके, कुछ आ रहे हैं। सेंट्रल हॉल में इस समय हर दिन रौनक बढ़ जाती है। थोड़ी ही देर में सब इकट्ठा हो जाते हैं।

हिमानी ने कार्यक्रम शुरू करते हुए कहा कि, आज का यह कार्यक्रम बहुत ही वेल्युबल है, क्योंकि आज का विषय वही है, जो हमारे फोरम का मोटो है। यानी वसुधैव कुटुम्बकम्... द होल वर्ल्ड इज़ फैमिली.... सरप्राइज ये था, कि आज इसकी डिटेल गोपाल जी समझाएँगे.... तो मैं श्री गोपाल जी से निवेदन करती हूँ, कि वे मंच पर आएँ और वसुधैव कुटुम्बकम् की बारे में डिटेल में समझाएँ....

गोपाल जी अपनी सीट से उठकर मंच पर आए और उन्होंने बोलना शुरू किया-

वसुधैव कुटुम्बकम्

वसुधैव कुटुम्बकम् का उल्लेख महाउपनिषद सहित कई ग्रंथों में मिलता है। यह संस्कृत के ग्रंथ हितोपदेश से स्पष्ट रूप से प्रकाश में आता है। हितोपदेश के रचयिता नारायण पण्डित माने जाते हैं। यह संस्कृत शिक्षण का पहला ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ में पक्षियों के माध्यम से जीवन उपयोगी सन्देश दिया गया है।

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

(महा उपनिषद्, अध्याय 6, मंत्र 71)

इसका अर्थ है, यह अपना मित्र है और यह नहीं। इस तरह की गणना

छोटे चित्त वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों की तो (सम्पूर्ण) धरती ही परिवार है।

जिस प्रकार सौर मण्डल का अपना एक परिवार है। पृथ्वी के विभिन्न प्रकार के तन्त्र एक परिवार के रूप में काम करते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी के प्राणी भी एक परिवार के रूप में हैं।

इसमें वसुधैव कुटुम्बकम् की बात कही गयी है, जिसका मूल आशय है, विश्व को एक परिवार समझना। एक परिवार समझने मात्र से कई-कई समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाता है। भले ही विभिन्न देश या राज्य अलग अलग रहते हैं, किन्तु उनमें एक परिवार की भावना हो तो वह ईर्ष्या, द्वेष, व घृणा को समाप्त करती है।

वर्तमान में दुनिया के हर देश एक दूसरे पर निर्भर है। कोई भी देश केवल अपने पर निर्भर नहीं रह सकता है। दुनिया बहुत छोटी हो गयी है। विश्व एक महानगर का रूप लेता जा रहा है। एक दूसरे के व्यापारिक सहयोग बिना कोई भी देश आगे नहीं बढ़ सकता। पूरा विश्व एक परिवार का रूप लेता जा रहा है।
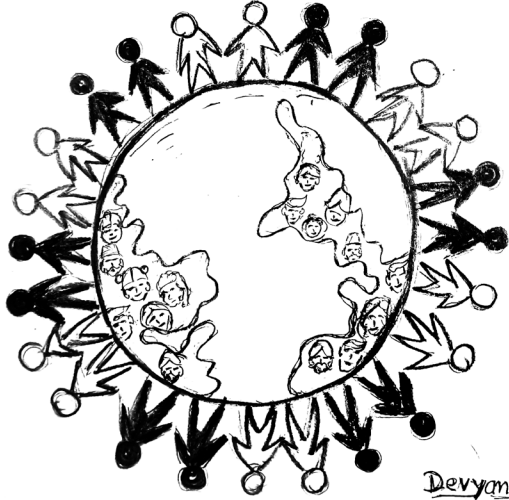
जिस प्रकार परिवार में सभी मिलकर रहते हैं, एक दूसरे की भावनाओं का ध्यान रखते हैं, हर दुख-सुख में एक दूसरे के काम आते हैं। ठीक उसी प्रकार विश्व में परिवार की भावना रहना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्रसंघ वसुधैव कुटुम्बकम् का ही एक रूप है, किन्तु यह अशुद्ध रूप है। इसमें कुछ ऐसे नियम हैं, जो परिवार के सिद्धांत के विपरीत हैं, इसलिये यह पूरी तरह सफल नहीं हो पाया। विश्व में संयुक्त राष्ट्रसंघ

बहुत श्रेष्ठ उद्देश्य को लेकर बना, लेकिन कुछ देशों ने अपने स्वार्थ के कारण इसके पवित्र उद्देश्य की दिशा ही बदल दी।

मनुष्य ने प्रारम्भ से विश्व को एक परिवार समझा होता, तो यह दुनिया, आज की दुनिया से बिल्कुल अलग होती।

मनुष्य समाज सैकड़ों खण्डों में विभाजित होने से बच जाता। इतने विकारों का जन्म नहीं होता। न ही पृथ्वी पर इतने युद्ध होते। भय और संप्रभुता का संकट उतना नहीं होता, जितना आज है। विश्व में बाजारवाद की जगह, परिवारवाद होता। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना मनुष्य को प्रेम के एक सूत्र में सहेज कर रखती है।

यद्यपि परिवार में एक दूसरे के विपरीत विचारों के सदस्य भी होते हैं, उनमें मतभेद भी होता है, किंतु **मनभेद** नहीं होता। परिवार की भावना उन्हें बाँधकर रखती है। यही सूत्र उसकी सुख-समृद्धि का द्वार होता है। जो सदस्यों के बीच एक दूसरे के मतभेदों दूर करता है। जिस तरह परिवार का अंग होकर भी हर सदस्य की अपनी स्वतंत्र संप्रभुता होती है। ठीक वैसी ही वैश्विक भावना संपूर्ण जनमानस के बीच होनी चाहिए, जिसमें सम्पूर्ण विश्व के नागरिकों का समग्र विकास हो सके।

वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांत

वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना कई शताब्दी पहले कर ली गई थी। यह संकल्पना पृथ्वी पर एक नैसर्गिक समझ की खोज थी। पूरा विश्व यदि एक परिवार की भावना से जीवन यापन करता, तो उसकी सुख-समृद्धि के द्वार खुल जाते। यह समझ, वैज्ञानिकों की सभी खोजों से भी ज्यादा मूल्यवान है। हर देश एक दूसरे के काम आएँ, एक दूसरे की भावना का आदर करें, मिलजुलकर समृद्धि के पथ पर आगे बढ़े। जिस प्रकार एक संयुक्त परिवार सुख-समृद्धि एवं शान्ति की संजीवनी होता है, ठीक उसी प्रकार संयुक्त वैश्विक परिवार भी संजीवनी बन सकता है। विश्व का प्रत्येक व्यक्ति सुखी और संपन्न हो सकता है।

विश्व बंधुत्व की भावना का विकास

एक वैश्विक परिवार की भावना से, सामाजिक सद्‌भाव और विश्व बंधुत्व की भावना का विकास होता है। प्रतिशोध, लोभ तथा अधिपत्य की

भावना कम होती है। वर्तमान में विश्व जिस नफरत की आग में झुलस रहा है, वह सामूहिक विनाश की तैयारी है। इसमें शान्ति के फूल नहीं खिल सकते। मनुष्य से मनुष्य के बीच शत्रुता नहीं, प्रेम की सुवास चाहिए।

सुख-समृद्धि का समग्र विकास

वर्तमान में कोई देश बहुत ज्यादा गरीब है और कोई बहुत ज्यादा अमीर। किसी देश के पास आवश्यकता से अधिक भूमि, शक्ति और संसाधनों का अंबार लगा है, तो किसी देश के पास भोजन, मकान की मूलभूत सुविधाएँ भी नहीं है। कुछ देशों के पास आवश्यकता से अधिक भूमि है, और कुछ देशों के पास बहुत कम। कहीं बहुत ज्यादा संसाधन हैं, तो कहीं बिल्कुल नहीं। यदि एक वैश्विक परिवार की भावना होती, तो इस प्रकार की सैकड़ों विसंगतियाँ नहीं होती। प्रकृति के संसाधनों का समान रूप से, सभी मनुष्य उपयोग करते। गरीबी और अमीरी के बीच इतनी बड़ी खाई नहीं होती। वर्तमान में जो देश अमीर हैं, वे और अमीर होते जा रहे हैं और जो गरीब हैं, वे और गरीब हो रहे हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना सुख-समृद्धि एवं समानता का समग्र विकास करती है।

वैश्विक अखंडता की भावना

वर्तमान विश्व में मनुष्य खंड-खंड में विभाजित है। प्राणियों में मनुष्य जितना शक्तिशाली था, उतना ही शक्तिहीन हो गया है, निरन्तर वह हजारों हिस्सों में बँटता चला जा रहा है। आपस में बँटकर मनुष्य की पूर्णता समाप्त गई। खंडित होती व्यवस्था ही उसके जीवन की सबसे बड़ी बाधा बन गयी। मनुष्य के अस्तित्व पर वर्तमान में जितना संकट है, उतना पहले कभी नहीं था। सृष्टि का नियम है कि, अंश कभी पूर्ण से बड़ा नहीं हो सकता। पूर्ण गया तो समझो, अंश भी गया। मनुष्य जाति को यदि ऊँचा उठना है, तो उसे पूर्ण होना पड़ेगा।

प्रेम और शान्ति का विस्तार

वर्तमान विश्व में हाहाकार मचा हुआ है। छल, कपट द्वेष, अहंकार और नफरत की आग हर तरफ जल रही है। मनुष्य, मनुष्यता की तरह रहना ही भूल गया है। वह धीरे-धीरे पशुओं के जीवन की शैली में ढलता जा रहा है। उसमें मनुष्यता का बोध निरन्तर कम हो रहा है। यह उसके सामाजिक विखंडन का परिणाम है। मनुष्य ने मनुष्य से भेद करके, अपने दुर्भाग्य की कहानी स्वयं लिख ली। **वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना प्रेम और शान्ति का विस्तार करती है।**

सद्भावना से मनुष्यता फलती फूलती है।

विनिमय का सिद्धांत

परिवार की भावना विनिमय के सिद्धांत को संतुलित रूप से आगे बढ़ाती है। विनिमय वस्तु का, प्रेम का, सद्भावना और संस्कृति का। ऐसा विनिमय जो मनुष्य को, मनुष्यता के शिखर तक ले जाता है। **संतुलित विनिमय मनुष्य के अभावों को दूर कर देता है और समृद्धि के द्वार खोल देता है। अतीत की भूलों को सुधारकर, निरन्तर उनमें सुधार करते रहना आवश्यक है। अन्यथा वही भूलें आगे चलकर सत्य लगने लगती हैं। इससे पहले कि ये पूरी दुनिया नर्क में बदल जाए, सम्भलने का एक अवसर बचा है। वसुधैव कुटुम्बकम् का बीज मंत्र, जो विश्व को विनाश से बचा सकता है। पृथ्वी पर स्वर्ग का द्वार खोल सकता है।**

धन्यवाद....

कहते हुए गोपाल जी बैठ गए। पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा।

हिमानी फिर मंच पर आकर बोली- श्री गोपाल जी ने वसुधैव कुटुम्बकम् की बड़ी सुन्दर व्याख्या की है। अतः हम सब उनके आभारी हैं। वास्तव में यही एक मंत्र है, जो दुनिया के डूबते हुए जहाज को बचा सकता है।

कल हम सुबह ग्यारह बजे अभियान के लिए यहीं पर इकट्ठा हो रहे हैं। आज का प्रोग्राम समाप्त होता है। बेस्ट ऑफ लक...

थोड़ी ही देर में सब अपने अपने रूम में चले जाते हैं।

ऑपरेशन गंगा

आज डिस्प्ले बोर्ड पर कुछ खबरें और अभियान से जुड़ी हुई सूचनाएँ लगी थी। हिमानी आज का विचार पढ़ रही थी, किन्तु ईशा जोर-जोर से बोलकर न्यूज पढ़ने लगी....

रूस यूक्रेन के बीच बीते 13 दिनों से युद्ध जारी है। हर दिन यह लड़ाई भयंकर रूप लेती जा रही है। इसमें सैकड़ों की मौत हो चुकी है। युद्ध ने एक भीषण त्रासदी को जन्म दे दिया है। नागरिक अपनी जान की रक्षा के लिए पलायन को मजबूर हैं। संयुक्त राष्ट्र की शरणार्थी संस्था (यूएनएचसीआर) के मुताबिक सिर्फ 10 दिनों के अंदर ही 15 लाख लोग यूक्रेन छोड़ने को मजबूर हो गए हैं। इसे दूसरे विश्व युद्ध के बाद से अब तक का सबसे तेजी से बढ़ता हुआ शरणार्थी संकट बताया जा रहा है।

इसमें से सबसे ज्यादा शरणार्थी पोलैण्ड पहुंचे हैं। इन लाखों शरणार्थियों में हजारों भारतीय छात्र भी हैं। भारत सरकार यूक्रेन सीमा के साथ साथ उसके सीमावर्ती क्षेत्रों से भारतीय छात्रों को निकालने की कोशिश कर रही है। लेकिन अब तक यूक्रेन के अलग-अलग शहरों से सीमा तक का सफर तय करने वाले छात्रों के लिए यह सफर बेहद खतरनाक है....

न्यूज पढ़ते पढ़ते जया ने ईशा को रोका और बोली.... चुप कर... दूसरों को भी तो पढ़ने दे...

फिर जया बोली- दो दिन पुरानी न्यूज पढ़े जा रही है..... ये आज की न्यूज देख... ऑपरेशन गंगा पूरा हो चुका है। भारत सरकार ने सभी इंडियन

स्टूडेंट्स निकाल लिए हैं...जरा ये पढ़....

तब ईशा **ऑपरेशन गंगा** पढ़ने लगी...

रूस और यूक्रेन की लड़ाई के बीच, यूक्रेन में फँसे भारतीयों के लिए भारत सरकार ने ऑपरेशन गंगा चलाया। इसके अन्तर्गत भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने चार केबिनेट मंत्रियों श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, श्री किरण रिजिजू, पूर्व जनरल श्री वी.के. सिंह तथा श्री हरदीपसिंह पुरी को विशेष दूत के रूप में पोलैण्ड, रोमानिया, हंगरी और स्लोवाकिया की बॉर्डर पर भेजा। जहाँ से ऑपरेशन हैंडल करके भारतीय नागरिकों को स्वदेश सकुशल लाया गया।

20 हजार से अधिक स्टूडेंट/नागरिक यूक्रेन में फँसे थे। आपरेशन के लिए भारतीय वायुसेना को मार्च 2022 में सम्मिलित किया गया था। इसके अन्तर्गत कई फ्लाइट्स के जरिये भारतीय स्टूडेंट्स को लाया गया।

सूमी में फँसे लगभग 600 स्टूडेंट्स को निकाला गया। इसमें रेडक्रॉस की की भी मदद ली गई। सूमी शहर में भारतीय स्टूडेटस का यह दूसरा और आखिरी अभियान था। स्वदेश लौटे भारतीय छात्रों ने भारत सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया। इस ऑपरेशन से 22 हजार से अधिक नागरिकों का रेस्क्यू किया गया। भारतीय नागरिकों को सकुशल स्वदेश वापसी में आपरेशन गंगा अभियान 100% सफल रहा। भारतीय छात्रों के लिए इस अभियान ने संजीवनी का काम किया।

आजादी से अब तक विदेशों में फँसे भारतीयों के नागरिकों को स्वदेश लाने के लगभग तीस अभियान भारत सरकार द्वारा चलाये जा चुके हैं। इनमें सबसे बड़ा एअर लिफ्ट ऑपरेशन था, जिसमें 488 नॉनस्टॉप फ्लाइट के जरिए एक लाख 70 हजार लोगों को निकालकर स्वदेश लाया गया था।

अब ईशा ने वहां लगी एक और न्यूज पढ़ी। युद्ध में फंसे नागरिकों को रेडक्रॉस निकाल रही थी।

रेडक्रॉस बहुत पुरानी संस्था है। 1863 में जेनेवा (स्वीट्जरलैंड) में इसकी स्थापना हुई थी। इसकी स्थापना हैरी ड्यूरेंट ने की थी। इसलिए 8 मई को ड्यूरेंट के जन्मदिन पर रेडक्रॉस दिवस मनाया जाता है। इस संस्था की स्थापना के पीछे की घटना यह है कि, दो देशों आस्ट्रिया और फ्रांस के बीच सुल्फेरियन युद्ध हुआ था। उसमें भयंकर रक्तपात हुआ। दोनों ही देशों के घायल सैनिक तड़प रहे थे। कोई देखने वाला नहीं था। तब हैरी ड्यूरेंट ने दोनों ही देशों के सैनिकों को संभालकर उनका उपचार व सहयोग किया। उनका यह मानना था, कि **घायल सैनिक किसी भी देश का हो, है तो इंसान। इस तरह वे किसी भी देश के घायलों की मदद करने लगे और इस तरह रेडक्रॉस की नींव पड़ गई। वर्तमान मनुष्य जाति को संकट से बचाने में ऐसे ही अंतरराष्ट्रीय, सार्वभौमिक संगठनों की आवश्यकता है।** कुछ ऐसे ही युद्ध से बचाने के अंतर्राष्ट्रीय संगठन भी होना चाहिए, जो केवल युद्धों को रोकने के लिए ही काम करें। सिर्फ ऐसे ही संगठन दुनिया को बचा सकते हैं।

हिमानी आगे पढ़ते पढ़ते रुक गयी। जया उसे बुला रही थी। अतः हिमानी रूम की ओर चल पड़ी।

पूरी खबर पढ़कर ईशा बोली- सारे स्टूडेंट्स जा चुके हैं, सिर्फ वर्ल्ड पीस फोरम के स्टूडेंट्स बचे हैं।

ईशा की बात काटकर हिमानी बोली- वर्ल्ड पीस फोरम के स्टूडेंट्स खुद अपनी मर्जी से नहीं गए... उन्होंने अपनी रिस्क पर सेवा संकल्प का फार्म भरा है।

तब सायना बोली- बाद में हम सबको प्रॉब्लम्स तो नहीं आएगी?

हिमानी ने कहा- **हम अपने देश की ओर से दुनिया को शान्ति का पैगाम देने निकले हैं... इसलिये कल की चिन्ता नहीं करना चाहिए।**

जया बोली- हमारा संकल्प इतना छोटा नहीं है... हम दुनिया की भलाई के लिए शान्ति का संकल्प लेकर खड़े हुए हैं...

हिमानी बोली- और हमें उम्मीद है.... **दुनिया आज नहीं तो कल, हमारे संकल्प के साथ खड़ी होगी...** इस पर पीछे से भारत की आवाज आई- बिल्कुल! यही समय की पुकार है।

हिमानी ने आज डेली डायरी में लिखा कि लगभग 90 प्रतिशत स्टूडेंट्स यूक्रेन से अपने-अपने देश लौट चुके हैं। सरकार की मदद से भारतीय स्टूडेंट्स भी अपने घर सुरक्षित पहुँच गये हैं। युद्ध का दायरा बढ़ता ही जा रहा है। अब यूरोपीय यूनियन खुलकर यूक्रेन को हथियारों की तथा आर्थिक मदद कर रही है। अमेरिका पहले से ही यूक्रेन के पक्ष में खड़ा है। इसीलिए लड़ाई जटिल होती जा रही है। दोनों देशों की लड़ाई पूरी दुनिया के देशों को प्रभावित कर रही है।

भारत की नीति दुनिया में शुरू से ही तटस्थ रही है। वह सदा शान्ति का पक्षधर रहा है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दोनों ही देशों से युद्ध बन्द कर शान्ति की अपील भी की। भारत चाहता है कि, दोनों ही देश आपसी बातचीत से ही समस्या का समाधान ढूँढें।

मायाजाल

हिमानी लैपटॉप पर अपना काम कर रही थी। जया फ्री बैठकर उसी के काम को देख रही थी। अचानक उसने कहा- हीमू मुझे तेरी फेवरेट बुक का एक चैप्टर पढ़ना है। कौन-सा चैप्टर पढ़ूँ?

हिमानी बोली- इसके सभी चैप्टर्स यूनिक हैं... कोई सा भी पढ़ ले.... **अगर यह पुस्तक नहीं होती, तो शायद हमारा अभियान भी नहीं होता।** इसी बुक से तो हम इंस्पायर हुए हैं। जया पेज पलटकर देख रही थी... उसके सामने जो चैप्टर आया, तो हिमानी ने कहा- यही पढ़ ले, एकदम यूनिक है.... ध्यान से पढ़ना... जया ने चैप्टर पढ़ना शुरू कर दिया......

सीमाएँ, पानी पर खींची लकीर...

पृथ्वी तो पूरी एक ही है। केवल आदमी ने अपने छोटे-छोटे हितों की पूर्ति के लिए उसे बाँटना आरंभ कर दिया। उस पर लकीरें खींचना शुरू किया। एक लकीर पर दूसरी, दूसरी पर तीसरी। और फिर वह खींचता चला गया। पिछले दस हजार वर्षों में मनुष्य की ज्यादातर शक्ति लकीरें खींचने या उसे मिटाने में खर्च हुई।

शायद, मनुष्य को मालूम नहीं था, कि आगे चलकर वह इसी जाल में फँसने वाला है। जिस सीमा को वह अपनी रक्षा और सुविधा मान रहा है, वह मौत का जाल बन जाएगी। सर्वाधिक मौत इन्हीं लकीरों के कारण होती हैं। लकीरों का जाल बुनने वाला आदमी अब खुद जाल में फँसकर छटपटा रहा है।

सीमाएँ दिन-रात मनुष्य का खून पीती हैं। उपद्रव, घृणा और युद्ध इन्हीं रेखाओं की कोख से जन्म लेते हैं, आदमी इन रेखाओं को कसकर पकड़ता जा रहा है। जिसे वह जीवन रेखा समझता है, सबसे ज्यादा मौत उसी के कारण होती हैं। **सीमा कभी स्थायी नहीं होती। न ही कोई राज्य स्थायी होता है। समय की धारा के साथ वह बदलता रहता है।**

खरबों वर्षों से जमीन का टुकड़ा तो वही है, केवल उसका भौतिक आकार और नाम बदलता जाता है। पृथ्वी के किसी एक टुकड़े ने लाखों वर्षों में कितने रूप और नाम बदले होंगे, इसका हिसाब लगाना मुश्किल है।

सीमा के रूप में खींची गई लकीरें, पानी पर खींची गई लकीरों से ज्यादा कुछ नहीं है। यह एक मायाजाल की तरह है। ये रेखाएँ दिनरात किसी नर्तक की भाँति नृत्य करती हैं। वास्तविकता तो यह है कि, यह सब हमारे मानसिक पटल पर खींची गई हैं, जो मनुष्य को दिन-रात भ्रमित करती हैं, कभी विजय के नाम पर, कभी पराजय के नाम पर, कभी मालिक के नाम पर तो कभी गुलाम के नाम पर। आदमी भ्रम में जीता है। वह सोचता है, भले ही मैं अमर नहीं हूँ पर मेरा नाम तो अमर रहेगा।

यह सब मन को समझाने का खेल है। मान लीजिए आपका एक

प्लाट है। आज आप उसके मालिक हैं। कल उसका मालिक कोई और था, परसों कोई और। उसके पहले कोई और मालिक रहा होगा। आने वाले कल में इसका मालिक कोई और होगा। इस तरह इस प्लाट पर आप आज मालिक होने का दावा करते हैं, आपसे पहले भी लाखों दावे किए जा चुके होंगे और आने वाले समय में भी ऐसे ही दावे किए जाते रहेंगे।

जमीन का टुकड़ा तो वही है, बस मालिकों के नाम बदलते जाते हैं। क्या यह कुछ समय के लिए, अपने मन को मालिक बनाने का धोखा नहीं है? अगर हम इस प्लाट के तथाकथित मालिकों का हिसाब लगाएँ तो शायद पूरा जीवन ही गिनती में निकल जाएगा।

एक भी तख्ती का मालिक, इस टुकड़े को अपने साथ ले जाने में सफल नहीं हुआ है। जमीन तो वही है, बस, मालिक उसमें दफ्न होते चले गए।

दुनिया के सभी सम्राट एक दिन धरती की ऊपरी परत बन जाते हैं। जिन्हें रौंदकर लाखों लोग चलते फिरते हैं। विश्व को जीतने का सपना देखने वाला सिकंदर उसी मिट्टी में ही दफ्न होकर खाली हाथ गया। अपने साथ एक इंच टुकड़ा भी नहीं ले जा सका। पृथ्वी के 22 प्रतिशत हिस्से को जीतने वाला चंगेज खान, उसी मिट्टी में खाक हो गया।

ठीक इसी तरह सीमाएँ भी हैं, जो सदैव नृत्य करती हैं। ये कभी स्थिर व स्थाई नहीं रहती, बस, आदमी को भ्रमित करती हैं, जिसके कारण मनुष्य निरंतर संघर्ष करता है, मरता है, मारता है। **ये लकीरें कई सभ्यताएँ निगल गयी। वर्तमान सभ्यता भी इन्हीं के कारण विनाश की कगार पर है। हमें समझना पड़ेगा कि, लकीरें तो मनुष्य की रचना हैं, किंतु मनुष्य सृष्टि के परम की रचना है।**

मनुष्य की वास्तविक भूमि तो पूरी पृथ्वी ही है, क्योंकि सभी ग्रहों में केवल पृथ्वी पर ही जीवन है। देश, राज्य, सीमाएँ तो सब परिवर्तनशील हैं। आज है, कल नहीं। आज एक राज्य का नाम एक्स है तो कल वाय हो जाता है। आज जो सीमा है, कल कुछ और सीमा हो जाती है। सीमाएँ लहरों की तरह, बनती-बिगड़ती हैं। समय के साथ सब बदलता जाता है।

हम केवल पिछले तीन सौ सालों की स्थिति ही देखें, तो इतना बदलाव हुआ है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

1867 से पहले **अलास्का** का मालिक रूस था, अब **अमेरिका** है। **फ्लोरिडा** राज्य 1819 के पहले स्पेन का था, अब **अमेरिका** का है। प्लाट वही है, बस मालिक बदल गया। **पोलैण्ड** अतीत में एक विशाल **पोल साम्राज्य** था। फिर उसका अस्तित्व समाप्त हो गया। 125 वर्षों के पश्चात प्रथम विश्वयुद्ध में वह पुनः विश्व के मानचित्र पर अस्तित्व में आया। **हांगकांग**, चीन ने **ब्रिटेन** को 99 वर्ष के लिए पट्टे पर दे दिया था। इतने समय के लिए हांगकांग का मालिक कोई और हो गया। आधे **आयरलैंड** का मालिक **ब्रिटेन** है और आधा आयरलैंड स्वतंत्र देश हो गया। **इंडोनेशिया** पर **डचों** का अधिकार था, जो आज नहीं है। **कोरिया**, **चीन** और **जापान** के अधिकार में था, आज स्वतंत्र है। **क्यूबा** का मालिक कभी **स्पेन** था।

1830 के पहले दुनिया को जीतने का सपना देखने वाले सिकंदर के **ग्रीस** का मालिक **तुर्क** था। सिकंदर का यही ग्रीस, जो सर्वाधिक धन, वैभव का प्रतीक था, अब वह वैभव नहीं रहा। आज का **चेकोस्लावाकिया** द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले **जर्मनी, आस्ट्रिया** और **हंगरी** के हिस्से का क्षेत्र था। **वियतनाम, बेल्जियम, ट्यूनिशिया, अल्जीरिया** का मालिक कभी **फ्रांस** था। और आश्चर्य की बात यह है कि 1861 के पहले **फ्रांस** का मालिक **रोम साम्राज्य** था। **ब्राजील** पर **पुर्तगालियों** का हक था। जमीन का टुकड़ा वही है, बस मालिकों की नेम प्लेट धूप-छाँव के खेल की तरह बदलती गई। **तख्त और तख्तियाँ बदलती जाती हैं**। 1951 से पहले **लीबिया, इटली** की मिल्कियत था। 1961 से पहले **सीरिया** पर **आटोमन साम्राज्य** के मालिक की तख्ती थी, फिर **फ्रांस** और उसके बाद **अरब गणराज्य** की चढ़ गयी।

1947 से पहले लगभग ढाई सौ वर्षों तक **भारत** पर **ब्रिटेन** की तख्ती थी। आज दुनिया के सबसे बड़े देश **रूस** पर **जारों** का मालिकाना हक था। सुपर पॉवर देश **अमेरिका** पर पहले **ब्रिटेन** का मालिकाना हक था। **केमरून** पर **जर्मनी** की तख्ती थी। कई देश ऐसे भी रहे जिन पर दो-दो, तीन-तीन देशों के मालिकों की तख्ती लगती रही। जैसे 1960 से पहले **सोमालिया** में **ब्रिटिश** और **इटली** की तख्ती रही।

यह तो मात्र पिछले 300 वर्षों के थोड़े से उदाहरण हैं। पिछले हजारों वर्षों से यही होता आया है। जमीन तो वही है, बस उस पर मालिक की

तख्तियाँ बदलती चली गई। ऐसा लगता है जैसे मनुष्य जाति की पूरी चेतना सीमाओं और उसके मालिकाना हक की तख्ती पर ही केंद्रित रही।

रेखाओं की तरह नाम भी बदलते रहे

जिस तरह सीमाओं की रेखाएँ बदलती रहती हैं, उसी तरह स्थान और देशों के नाम भी बदलते रहते हैं। पृथ्वी पर जो दिखाई देता है, वह कुछ भी स्थायी नहीं है। विश्व की सबसे ऊँची चोटी वाला **हिमालय** भी कभी **टेथिन नाम का सागर** था, आज वह हिमालय पर्वत है। उसका **एवरेस्ट** शिखर पृथ्वी का सबसे ऊँचा शिखर है। इसे भी 1830 के पहले **'फिफ्टीन'** कहा जाता था। भारत के महा सर्वेक्षक रहे, जार्ज एवरेस्ट के नाम पर इस चोटी का नाम **माउंट एवरेस्ट** हो गया।

कल जो **मेसोपोटानिया** था, आज **इराक** है। मेसोपोटानिया अर्थात, दो नदियों के बीच की भूमि। इसी तरह **फारस** अब **ईरान** के नाम से जाना जाता है। अतीत का **गौल** वर्तमान में **फ्रांस** कहा जाता है। आज जिसे हम **इजराइल** कहते हैं उसका पुराना नाम **फिलिस्तीन** था और अब उसे **पेलेस्टाइन** कहा जाता है। कल का **मिस्त्र** आज **इजिप्ट** के नाम से जाना जाता है। अतीत का **श्याम** आज का **थाईलैंड** हो गया। **म्यांमार** का नाम पहले **ब्रह्मा** हुआ करता था। **अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश** पहले **भारत** ही था। **कंबोडिया** पहले **इंडोचायना** का हिस्सा था। **ताईवान (थाईवान), फारगोस द्वीप** था। **इंडोनेशिया** का जन्म ही द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ। कल का शक्तिशाली साम्राज्य **आस्ट्रिया** कई भागों में विभक्त हो गया। **कोलंबिया** का नाम **कोलंबस** के नाम पर पड़ा। इसके पहले वह अस्तित्व में ही नहीं था। **तुर्की** जो कभी विशाल साम्राज्य था, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद छिन्न-भिन्न हो गया। **युगोस्लाविया** का जन्म प्रथम विश्वयुद्ध के बाद हुआ। **आटोमन साम्राज्य** का एक भाग अब **सीरिया** के नाम से जाना जाता है। सौ साल पहले **अरब** बहुत **गरीब** मुल्क था, किंतु आज वह बहुत **अमीर** है। इसी तरह **भारत** पहले **आर्यवृत्त** के नाम से जाना जाता था।

परिवर्तन का यह रूप समुद्र की लहरों के समान बदलता है। जिसकी सीमा और आकार बदला, वह एक नया नाम स्वतः ले लेता है। शहर हो या देश परिवर्तन उनकी प्रकृति है। शहर भी ऐसे कई हैं, जो समय के साथ बदलते

चले गए। जैसे- **मस्कवा** नदी पर बसा एक छोटा सा गांव विश्व में **मास्को** के नाम से जाना जाता है। **सिन** नदी के किनारे बसे **पेरिस** का फ्रांसीसी नाम पारी है। **टेम्स** नदी के किनारे का एक छोटा सा गाँव **लान्दिनियम** आज **लण्डन** हो गया। दुनिया के जो महानगर हैं, अतीत में ये छोटे-मोटे गाँव ही रहे हैं। **ह्वांग फू** नदी के किनारे बसा दो हजार मछुआरों का गाँव अब **शंघाई** के नाम से जाना जाता है। यह आज सर्वाधिक जनसंख्या वाला महानगर है। 1823 के पहले **शिकागो** अस्तित्व में ही नहीं था। उसे एक गाँव के रूप में बसाया था। 11वीं सदी का एक छोटा सा गाँव **येदो** आज **टोकियो** के नाम से प्रसिद्ध है। **न्यूयार्क** 1609 में अटलांटिक महासागर के तट पर बसा एक छोटा सा कस्बा था। अब इसे **न्यूयॉर्क सिटी** के नाम से जाना जाता है।

पृथ्वी पर ऐसे कई शहर या राज्य हैं, जिनके नाम और रूप कई-कई बार बदले हैं।

स्थानों में जैसे-जैसे परिवर्तन होते हैं, **सीमाओं में परिवर्तन होता है और सीमाओं का परिवर्तन उपद्रव खड़ा करता है। सीमाएँ जब भी बदलती हैं, लाखों लोगों की मौत का कारण बनती हैं। युद्ध इन्हीं की कोख से पैदा होते हैं। हजारों वर्षों से ये रेखाएँ खरबों मनुष्यों का खून पी चुकी हैं।**

मनुष्य बनकर जीना है, तो एक सीधी सी समझ बनाना ही होगी कि जो मनुष्य और मनुष्यता के शत्रु हों, उन कारणों को पृथ्वी से विदा कर देना चाहिए।

जया ने चैप्टर पढ़ने के बाद हिमानी से कहा- यह पुस्तक बहुत अ अच्छी है, इसे और भी लैंग्वेजेस में पब्लिश होना चाहिये।

हिमानी बोली - हां, यह काम भी हमारे अभियान में शामिल है।

मैं समय हूँ... !
अंश कभी पूर्ण से बड़ा नहीं हो सकता,.. भेद समाप्त किए बिना, मनुष्य की पूर्णता सम्भव नहीं है। अतः निर्मल भाव से मुझे पढ़ता चल...

यदि सीमाएँ न होतीं...

आज हमानी पूरे दिन लैपटॉप पर नो वॉर के अभियान में जुटी रही। दिनभर फीडबैक तथा जरूरी निर्देश देने के काम में पूरा दिन निकल गया, ऑनलाइन क्लासेस भी शुरु हो गई थी, अतः अब उसे थोड़ा हेडेक होने लगा था।

स्टूडेंट्स शाम को गार्डन में इकट्ठे होकर कुछ न कुछ नया सेलिब्रेट करते थे। गीत संगीत, डान्स, चुटकुले, कहानी, कविता, अभिनय सबकुछ होता था। सेलिब्रेशन में नाइन्थ फ्लोर का क्रेज था। इस हॉस्टल में 85% स्टूडेंट्स इंडियन थे। **ज्यादा संख्या होने के कारण कीव यूनिवर्सिटी में भी भारतीयों की एक खास पहचान थी।** हर सन्डे को सब मिलकर बैठते और कुछ न कुछ स्पेशल क्रिएटिविटी करते थे। ऐसा वे पिछले कई सालों से कर रहे हैं।

आज भी सन्डे था। 6 बज रहे थे। लेकिन सबके चेहरे पर उदासी थी। हर स्टूडेंट्स किसी अज्ञात उलझन में डूबा हुआ था। आज क्विज सेलिब्रेशन का कार्यक्रम था, जो पिछले सन्डे को ही घोषित कर दिया था। यह कार्यक्रम आज हॉल में करना पड़ा रहा है, क्योंकि बाहर खतरा था।

ए और बी फ्लोर के स्टूडेंट्स इकट्ठे हो चुके थे, लेकिन आज वातावरण में उत्साह की कमी साफ दिखाई दे रही थी। कारण स्पष्ट था, रशिया और यूक्रेन के बीच लड़ाई। स्टूडेंट्स के मन में तरह तरह की शंकाएँ जन्म ले रही थी। आज वे इस उम्मीद से भी इकट्ठे हुए थे कि, तनाव से थोड़ा ध्यान बँट जाए।

हाल में कमींनदान (हॉस्टल वार्डन) फॉदर जोसफ भी आ चुके थे। उनके साथ स्वेतलाना भी आई थी, जो हॉस्टल की वक़्तोंश (रिसेप्शनिस्ट) थी। हर बार कोई एक व्यक्ति कार्यक्रम की योजना बनाकर उसे आर्गेनाइज़ करता था। आज के प्रोग्राम की रूप रेखा भारत ने बनाई थी, अतः उसने खड़े होकर प्रोग्राम शुरू करते हुए कहा- गुड़ इवनिंग माय डियर फ्रेंड्स...

यूक्रेन में संकट है। चारों ओर अफरातफरी मची हुई है। कई शहरों पर धमाके हो रहे हैं.... लाखों लोग अपना घर छोड़कर जा रहे हैं.... ऐसे माहौल में हमारा प्रोग्राम करना ठीक नहीं है..... लेकिन हम अपनी परेशानी कुछ समय के लिये दूर हो सके... और मुस्कराकर परिस्थितियों का सामना कर सकें.. इसलिए आज न चाहकर भी यहाँ इकट्ठे हुए हैं।

इस प्रोग्राम के चीफगेस्ट फॉदर एवं स्वेतलाना मैडम हैं। हम सब उनका वेलकम करते हैं। प्रोग्राम फॉदर ही डिसाइड करेंगे कि, आज हम किस सब्जेक्ट पर बात करें। प्लीज़, वेलकम फॉदर...

फॉदर जोसफ एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। यहाँ से पहले कई वर्षों तक उन्होंने कीव के एक चर्च में सेवाएँ दी थी। सर पर कैप, बड़ी सफेद दाढ़ी उनके व्यक्तित्व को आकर्षक बनाती थी। उन्होंने खड़े होकर कहा-

माय डियर सन.... हालात बिगड़े हुए हैं। लेकिन हमें हिम्मत से काम लेना होगा। **हर परेशानी का इलाज एक मुस्कराहट है। इसलिए परेशानी का हल भी हमको मुस्कराते हुए ही ढूँढना होगा।** आज का प्रोग्राम तो हो, लेकिन मैं चाहता हूँ, कि अभी दुनिया में जो हालात बने हुए हैं, उसके सम्बन्ध में ही कुछ बात हो जाए। क्या आपको मंजूर है?

सभी स्टूडेंट्स ने कहा- हाँ, ...हमें मंजूर है।

आज मैं आपको एक काल्पनिक सब्जेक्ट का टास्क दे रहा हूँ। कुछ क्वेश्चंस करूँगा, जिनका आपको आंसर देना होगा। ऐसे क्वेश्चंस जो आदमी की सोच को बहुत ऊँचा उठाते हैं। चाहे आप एक लाइन में आंसर दें, लेकिन

आंसर देना जरूरी है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि, **इंटरनेशनल बॉर्डर क्या होती है**, लेकिन मैं कार्यक्रम शुरु करने से पहले, इन्हें एक बार और दोहरा देना चाहता हूँ। दरअसल अन्तर्राष्ट्रीय सीमा किसी भी देश की उस सीमा को कहा जाता है, जो उसे अन्य पड़ोसी देश से स्पष्ट रूप से बिल्कुल अलग करती है। अर्थात दो या दो से अधिक देशों को अलग करने वाली रेखा को इंटरनेशनल बॉर्डर कहा जाता है। यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त होती है।

यहाँ LAC और LOC बॉर्डर को समझना होगा

LAC- यानी **वास्तविक नियंत्रण रेखा** (Line of Actual Control) जिसकी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता होती है। यह नियंत्रण रेखा एलओसी से अलग होती है। दोनों देशों के बीच जो वास्तविक सीमा सीमा रेखा होती है।

(LOC)- यानी **मानी गई नियंत्रण रेखा** (Line of Control) दो देशों के बीच आपसी समझौते के द्वारा तय की जाती है। यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए नहीं होती। केवल दोनों देशों के आपसी समझौते के रूप में होती है, जैसे भारत और पाकिस्तान के बीच मौजूदा सरहद को लाइन ऑफ कंट्रोल कहा जाता है। लगातार सीमा विवाद को देखते हुए 1948 में दोनों देशों ने आपसी सहमति से लाइन आफ कंट्रोल का निर्धारण कर लिया। हालाँकि यह आधिकारिक तौर पर सीमा नहीं होती।

फॉदर ने फिर कहा- अब मैं आपको एक ऐसा टास्क दे रहा हूँ, जिसके एक ही क्वेश्चन का सबको कम्पलसरी आंसर देना है। सबको अपनी जगह पर खड़े होकर आंसर देना है। यह क्वेश्चन बिल्कुल काल्पनिक है, लेकिन इसका आंसर रियलिटी के करीब हो.... क्योंकि यह क्वेश्चन यूनिक, क्लासिक और वेल्युबल है।

-क्या होता अगर कंट्री के बीच बॉर्डर नहीं होती तो... ?

यह सवाल ऐसा था, कि इसने सबको थोड़ी देर के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया। जब उत्तर देने के लिए कोई खड़ा नहीं हुआ तो फिर हिमानी ने आंसर दिया-

-यदि कन्ट्री के बीच कोई बॉर्डर नहीं होती, तो पूरा वर्ल्ड एक देश होता और पूरी पृथ्वी सबकी मातृभूमि होती। प्रत्येक व्यक्ति को विश्व की

नागरिकता प्राप्त होती। उसे पूरी पृथ्वी का नागरिक होने पर गर्व होता। पृथ्वी के संसाधनों पर सबका ही अधिकार होता। नागरिकों में शान्ति, प्रेम, सद्‌भाव होता और मनुष्यता ज्यादा फलती-फूलती। उसकी लाइफ की पॉवर लड़ने में कम, प्रोग्रेस में ज्यादा खर्च होती।

अब जया बोली- देश की सीमाएँ न होती तो, मनुष्य जाति का इतना पतन नहीं होता, जितना हो चुका है। मनुष्य की तुलना पशुओं से नहीं, फरिश्तों से होती।

पाकिस्तान की सायना ने कहा- परमाणु बम का अविष्यकार भी नहीं होता और न ही पूरी दुनिया बर्बादी की कगार तक पहुँचती। सभी देशों का भारी भरकम रक्षा बजट आवाम की प्रोग्रेस पर खर्च होता।

अब भारत का नम्बर था वह बोला- पृथ्वी पर गरीबी केवल युद्ध के कारण है, **युद्ध न होते तो पृथ्वी पर कोई गरीब नहीं होता। सबको अच्छी शिक्षा, अच्छी स्वास्थ्य सुविधा, अच्छा मकान और अच्छा भोजन प्राप्त होता।** कोई शोषित नहीं होता। सबके हिस्से में अच्छे जीवन यापन जितनी जमीन आती। पृथ्वी के समस्त संसाधनों पर सबका बराबर हक होता। पूरे विश्व में एक मुद्रा, एक व्यवस्था और एक कानून होता।

ईशा ने खड़े होकर कहा- **इतिहास में इतने युद्ध नहीं होते। लाखों शरणार्थी दर-दर नहीं भटकते। न ही कोई छोटा न कोई बड़ा होता। कोई सुपर पॉवर या कोई कमजोर नहीं होता। पूरे वर्ल्ड में एक कानून होता।**

अब हर्ष ने खड़े होकर कहा- यदि पृथ्वी पर देशों की सीमाएँ न होती तो आतंकवाद, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, महँगाई, विस्तारवाद, गुटबाजी, सीमा विवाद, युद्ध, बम बारूद, विनाश, अन्धी नफरत और पशुता जैसे शब्द, डिक्शनरी में ही दबकर दम तोड़ देते।

फॉदर ने मुस्कराते हुए कहा- व्हेरी गुड...व्हेरी गुड आंसर्स।

आप सभी ने जो आंसर दिए, वे क्लासिक, वेल्युबल और सही हैं। मैं आज बहुत खुश हूँ। ऐसी पॉजिटिव सोच दुनिया के कई देशों में है, लेकिन ऐसे गहरे आंसर हिमालय की मिट्टी से ही आसानी से निकल सकते हैं। वहाँ जीवन जीने का नजरिया बिल्कुल बहुत अलग है। आज का सेलिब्रेशन यादगार रहेगा।

आइ होप... दुनिया के इस अँधेरे का मुकाबला तुम, अपने विजन की रोशनी से कर सकते हो.... **दुनिया को तुम जैसे युवा की जरूरत है।** ऑल दी बेस्ट...

अब जया ने खड़े होकर पूछा- कार्यक्रम एन्ड हो, उसके पहले एक जानकारी और मैं आप लोगों को देना चाहती हूँ...

इस पर फॉदर बोले - यस माय सन! बोलो।

अब जया बोली - क्या कोई देश इस दुनिया में बिना सेना के रह सकता है?

तब वांग शी बीच में बोल पड़ा- नहीं रह सकता।

इस पर जया ने कहा - बिल्कुल ठीक, लेकिन दुनिया में ऐसे भी कुछ देश हैं, जिनके पास सरहदों की हिफाजत के लिये अपनी कोई सेना नहीं है। मतलब, नो आर्मी कन्ट्री।

तो! जानते हैं दुनिया के 5 ऐसे देश जिनके पास अपनी कोई सेना नहीं है।

वैटिकन सिटी- वेटिकन सिटी दुनिया का सबसे छोटा देश है। उसके पास किसी भी तरह की कोई सेना नहीं है। कुछ वर्षों पूर्व यहाँ नोबेल गार्ड हुआ करते थे, किंतु 1970 में इन्हें भी हटा दिया गया। अतः इस देश की सुरक्षा की

जिम्मेदारी इतालवी सेना करती है।

कोस्टारिका- मध्य अमेरिका के कैरेबियाई क्षेत्र में स्थित कोस्टारिका देश में सन 1948 के बाद कोई भी सेना नहीं है। सन 1948 में इस देश में भयंकर गृहयुद्ध छिड़ गया था, जिसके बाद इस देश ने अपनी सेना ही समाप्त कर दी। यह विश्व में बिना सेना के चलने वाला देश है। हालाँकि इस देश में आंतरिक व्यवस्था के लिए पुलिस है।

मोनेको- मोनेको दुनिया का बहुत छोटा सा देश है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि यहां 17 वीं शताब्दी से कोई सेना नहीं है। हालाँकि यहाँ छोटी-छोटी सुरक्षा टुकड़ी है, जिनमें एक राजकुमार की सुरक्षा करती है, तो दूसरी नागरिकों की। फ्रांस की सेना भी इसे सुरक्षा प्रदान करती है।

मॉरीशस- मॉरीशस भारत से लगा हुआ एक बहु सांस्कृतिक देश है। इस देश में भी सन 1968 से किसी भी प्रकार की सेना नहीं है। मॉरीशस में लगभग 10,000 पुलिस कर्मी हैं, जो आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालते हैं।

आइसलैण्ड- आइसलैंड यूरोप का सबसे बड़ा दूसरा महाद्वीप है। यह बड़े ही खूबसूरत देशों में से एक है। इस देश में भी सन 1969 से कोई सेना नहीं है। चूंकि यह नाटो का सदस्य है और इसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी अमेरिका पर है।

विश्व में ऐसे भी कई देश हैं, जिनके पास अन्य देशों की तुलना में नाम मात्र की ही सेना है। आज विश्व की अराजक होती परिस्थितियों में भी ये देश वर्ल्ड में शान्ति का सीधा संदेश देते हैं।

अब टाइम हो चुका है। आज का प्रोग्राम यहीं एन्ड करते हैं। इसी के साथ प्रोग्राम समाप्त हो जाता है और सब हॉस्टल में चले जाते हैं।

वीडियो कॉन्फ्रेंस

हिमानी हर दिन वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिये शाम 4 से 6 के बीच अभियान की फीडबैक अपडेट करती है। अभियान की सफलता के निर्देश भी देती है, और इससे जुड़ी समस्यायों का हल भी निकालती है। हर दिन एक नया एरिया होता है।

आज हिमानी उसी क्रम में पोलैण्ड, हँगरी, रोमानिया और स्लोवाकिया में चल रहे नो वॉर अभियान की फीडबैक ले रही थी। लगभग एक घण्टे 30 मिनट से यह कॉन्फ्रेंस चल रही है।

हँगरी, स्लोवाकिया और रोमानिया के पीस फ्रेंड्स से बात हो चुकी थी। इसके बाद पौलैंड का नम्बर था। अब स्क्रीन पर पोलैण्ड का मायकल दिखाई देने लगा। उसने अभियान का फीडबैक दिया।

पोलैण्ड में नो वॉर का अभियान तेजी से चल रहा है। अभी तक हम एक हजार सत्रह पीस फ्रेंड्स बना चुके हैं। ये सभी पीस फ्रेंड्स अपनी-अपनी ड्यूटी कर रहे हैं। लगभग 900 पीस फ्रेंड्स रिफ्यूजी कैम्प्स में अपनी ड्यूटी कर रहे हैं। 50 फ्रेंड्स बसों के जरिये रिफ्यूजियों को अपनी जरूरत की जगह पहुँचाने में लगातार लगे हैं। अब हिमानी ने बात काटते हुए कहा- गुड... रैली की क्या सिचुएशन है? प्रोटेस्ट कैसा चल रहा है?

मायकल फिर बोला - पोलैण्ड में नो वॉर की लगभग 19 लार्ज स्केल पर रैलियाँ हो चुकीं हैं। इसके अलावा लोकल रैलियाँ भी हो रही हैं। हमारा आइटी सेल लगातार इस अभियान में काम कर रहा है। पिछले हफ्ते उसकी

रिजल्ट रैंक हाईएस्ट थी।

यूरोप के कई एनजीओ, वर्ल्ड पीस फोरम से जुड़कर काम करना चाहते हैं। उनके प्रपोज़ल हम कल तक सैंड कर देंगे। आगे जैसा आपका निर्देश मिलेगा, वैसा करेंगे।

अब हिमानी बोली- फोरम का विचार है कि, बच्चों और बूढ़े लोगों की हेल्प के लिए एक एक्स्ट्रा ग्रुप तैयार हो, जो स्पेशली उनके लिए वर्क कर सके।

मायकल बोला- एब्सील्यूटली... इसके लिए हम हंडरेड मैम्बर्स का एक स्पेशल ग्रुप बना लेंगे।

हिमानी बोली- वेल डन... फ्रेंड... इसके अलावा आपको कोई प्रॉब्लम हो, तो प्लीज़ बताएँ....

मामकल बोला- वैसे तो कोई प्रॉब्लम नहीं है। हमें एक बस की और जरूरत थी, लेकिन एक लोकल एनजीओ ने थ्री मन्थ के लिए प्रोवाइड कर दी है... हाँ, एक एप्लीकेशन है... मोरक्को का एक पीस फ्रेंड मैम्बर है। उसकी मम्मी की तबियत बहुत खराब है। वो कुछ दिन के लिए अपने घर जाना चाहता है, साथ ही उसके पास पॉकेट मनी भी नहीं है, क्या करें...?

हिमानी बोली- उसे इमीडिएटली उसके घर भेजो, उसकी एप्लीकेशन, पासपोर्ट और बैंक एकाउंट सैंड कर दो, आज ही मनी उसके अकाउंट में डिपॉज़िट हो जायेगी।

मायकल फिर बोला- मनी की प्रॉब्लम नहीं है... वह तो फोरम के अकाऊंट में है।.. बस उसे रिलीव करने की परमिशन चाहिए... वह जल्दी वापस आ जायेगा...।

हिमानी- हमारी ओर से परमिशन है... वैसे, इस तरह के इश्यूज़ में परमिशन की जरूरत नहीं है। आप अपने लेवल पर ही सॉल्व कर सकते हैं...

माइकल- ओके...

हिमानी- उसे अगली ही फ्लाइट से घर भेज दो....

मायकल- ओके....

हिमानी बोली- ओके! गुडबाय डियर मायकल, टेक केयर... कहते हुए हिमानी ने कनेक्शन काटकर लैपटॉप बन्द कर दिया।

परमाणु बम और हम

कैसी भी परिस्थिति हो, स्टूडेंट दिनभर अपना काम करते हैं, लेकिन शाम को इकट्ठा होकर चर्चा करना नहीं भूलते। चर्चा भी स्तरीय और सकारात्मक। शायद यही उनकी एकता और संकल्प शक्ति का राज है।

आज वांग शी और फिरोज बड़े खुश दिखाई दे रहे थे था। वांग ने हिरोशिमा और नागासाकी की पृष्ठभूमि पर एक टेली फिल्म बनाई थी, जिसका नाम था 'परमाणु बम और हम'। फिरोज ने इसकी एडिटिंग की थी। आज वह प्रदर्शित होने वाली थी। हॉस्टल के सेंट्रल हॉल में शाम 7:00 बजे इसका प्रदर्शन रखा गया है। अभी छः बजकर 40 मिनट का वक्त हो रहा है। धीरे धीरे हॉल भरता जा रहा है।

वांग शी की पूरी तैयारी कर चुका था। अब उसे इंतजार है, तो केवल 7 बजने का। हिमानी ग्रुप पहले ही मदद के लिए पहुँच चुका है। लगभग सभी स्टूडेंट्स आ चुके हैं। फॉदर, स्वेतलाना मैडम, मारिया मैडम तथा गोपाल जी भी सीट पर बैठ चुके थे। 7 बजने में पाँच मिनट का वक्त बचा है।

वांग ने अब प्रोग्राम शुरू करते हुए कहा-

डियर फ्रेंड्स... आज मैं आपको हिरोशिमा और नागासाकी पर आधारित, एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाने जा रहा हूँ, जिसका नाम है परमाणु बम और हम। यह टेलीफिल्म हमने सीमित साधनों में तैयार की है, इसकी स्क्रिप्ट रायटर हिमानी है। एडिटिंग फिरोज ने की है और डायरेक्टर मैं हूँ... आइ होप कि, आपको यह पसंद आएगी।
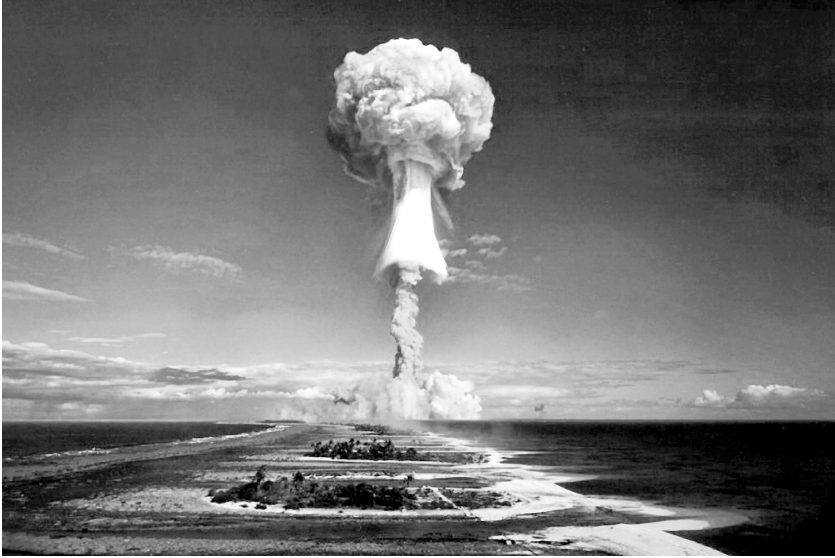
तो अब हम फिल्म शुरू करते हैं... इतना कहते के बाद लाइट ऑफ हो गयी... अँधेरा छा गया और फिर स्क्रीन पर फिल्म शुरू हो गयी...

एक खूबसूरत शहर दिखाई दिया। स्क्रीन पर लिखा हुआ आया, हिरोशिमा..... पिक्चर के साथ अब कॉमेंट्री भी शुरू हो गयी। साथ में म्यूजिक भी चल रहा है...

अगस्त 1945,

द्वितीय विश्वयुद्ध अपने अंतिम समय में चल रहा है। धुरी देशों में जर्मन, इटली हार चुके है। अमेरिका और जापान के बीच अभी भी युद्ध जारी है। जनरल मैक आर्थर की सेनाएँ उन द्वीपों तक पहुँच गई हैं, जो जापान की रक्षा कर रहे हैं। कई दिनों से अमेरिका की सेनाएँ हवाई हमले कर रही है। जापान के कई शहर बर्बाद हो चुके हैं, किंतु हिरोशिमा अभी भी सुरक्षित है।

दृश्यों के साथ साथ कॉमेन्ट्री चलती जा रही है... वांग इस शो की शूटिंग भी कर रहा है। अब स्क्रीन पर लिखा आता है-

हिरोशिमा का दर्द

6 अगस्त 1945, सुबह 8 बजकर 15 मिनट का वक्त है। हिरोशिमा के लोग उठकर अपनी दिनचर्या में व्यस्त हैं। कोई नहा रहा है, कोई चाय पी रहा

है, तो कोई नाश्ता कर अपने दिन की शुरूआत करने में व्यस्त है।

अचानक एक अमेरिकी हवाई जहाज हिरोशिमा शहर के ऊपर से धुएँ की एक लकीर छोड़ता हुआ निकल गया। प्रकाश की एक भयानक आग पैदा हुई। पूरा शहर, पलक झपकते ही धुएँ और आग की लपटों में समा गया।

यह अमेरिका द्वारा गिराया गया एक परमाणु बम था, जो हिरोशिमा के जनजीवन पर मौत बनकर टूट पड़ा... और कुछ ही पलों में सब कुछ तबाह हो गया।

अत्यंत विशालकाय ज्वाला भड़की, जिसमें सूर्य से भी तेज चमक और गर्मी थी। बहुत जोर का धमाका हुआ और आग की तेज आँधी फैल गई। पलक झपकते ही, पूरा हिरोशिमा खाक हो गया। चारों ओर आग ही आग। राख और मलवे के अतिरिक्त शायद कुछ नहीं बचा। दिल दहलाने वाले हाहाकार से हिरोशिमा का आकाश गूँज उठा।

एक ही पल में जो मौत के मुँह में समा गए, वे भाग्यशाली रहे और जो किसी कारणवश बच गए, उनकी हालत मरे हुए से भी बदतर हो गई। **एक जीता जागता शहर श्मशान में बदल गया। जिन बच्चों की बसें स्कूल के लिए रवाना हुई थी, वे बसें बच्चों सहित राख के पिंजर में बदल गई। सुबह की सैर को निकले बूढ़े, जवान, बच्चे, राख के पुतलों में ढल चुके हैं। सफाई करने वाली महिलाएँ उसी तरह राख का पुतला बन गई। जो जिस स्थिति में था, राख के पिंजर में बदल गया।**

अधिकांश पल भर में ही मर चुके। कुछ बेहोश होकर पड़े हैं। थोड़े-बहुत जो सुरक्षित स्थानों पर थे, उनका शरीर झुलस गया था, किंतु वे अपंग की तरह हो चुके हैं। बहुत कम ऐसे भी हैं, जो किसी तरह बच निकले। वे हिरोशिमा के महा श्मशान में गूंगे-बहरों की तरह अवाक् रह गए हैं। कुछ बिलख-बिलखकर रो रहे और कुछ की मानसिकता पागलों जैसी हो गई है। पूरा शहर दुर्गन्ध और धुएँ से भर चुका है। जीवित व्यक्ति क्या करे समझ नहीं आ रहा था। पूरे इलाके की वायु, जल और वनस्पति जहरीली हो गई।

थोड़े समय के बाद जिनके हाथ-पैर ठीक थे, वे एक-दूसरे की मदद करने लगे। किंतु मदद करें भी तो क्या करें? ज्यादातर वस्तुएँ जलकर राख हो चुकी थी.. न डॉक्टर... न दवाई.. न अस्पताल। घर मलवे में तब्दील हो गए।

परिवार के सदस्य खो गए... खोजें भी तो कहाँ? 1,20,000 लोग मौत के मुँह में समा गए।

दृश्य में चारों तरफ बिखरी हुई लाशें दिख रहीं हैं। मलवा, धुँआ, लाश और दुर्गंध के सिवा शहर में कुछ नहीं बचा।

बड़े भयानक सीन दिखाई दे रहे रहे हैं। कॉमेन्ट्री फिर शुरू हो गयी....

अगस्त का यह दिन, मानव सभ्यता के इतिहास का सबसे काला दिन था। हजारों वर्षों की उन्नत सभ्यता अपने ही कलंक से पीड़ित थी। यह एक डॉक्टर के द्वारा दिया गया वर्णन था, जो किसी तरह इस महाविनाश में मरने से बच गया था। हमारे युग का भस्मासुर अणुबम नामक पुस्तक में इस घटना का बड़ा मार्मिक चित्रण है। बम फूटने के बाद की कहानी कैसी होगी, इसकी हम सहज कल्पना कर सकते हैं।

मुट्ठीभर बचे हुए लोगों ने पूरे शहर में पत्तों की तरह बिखरी, अधजली लाशों को कैसे समेटा होगा, किस प्रकार उनका अंतिम संस्कार किया होगा? 'कौन तेरा और कौन मेरा' की पहचान तो अब खत्म हो चुकी थी। जीवित व्यक्ति भी मौत की ही एक कहानी था। कई महीनों तक शहर में जले हुए मांस की दुर्गंध का ही वास रहा होगा।

सीन इतने विभत्स थे, कि दर्शक स्तब्ध रह गए। उसी तरह दर्द से भरा संगीत भी चल रहा था। कॉमेंट्री फिर शुरू हो गयी...

कहानी अभी यहीं खत्म नहीं हुई। 9 अगस्त को फिर एक बम नागासाकी शहर पर गिरा दिया गया। यह बम पहले से भी भयानक था।

अमेरिका के पास तीन परमाणु बम थे। एक टेस्ट में खर्च हो गया और

दो छोड़ दिये गए। अनुमान है कि, अब उसके पास और परमाणु बम नहीं थे, नहीं तो यह कहना मुश्किल है कि, आज यह दुनिया होती भी कि नहीं। यदि होती भी तो कैसी होती, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। उस समय विश्व में केवल अमेरिका के पास ही ये परमाणु बम थे। यदि और होते तो?

पूरा परिवार नष्ट हो जाए, तो एक दुःखद अंत के बाद कहानी खत्म हो जाती है, किंतु यदि नष्ट हुए परिवार का कोई एक सदस्य बच जाए, तो उसके दुःख की एक अनवरत धारा फूट पड़ती है, जो खत्म नहीं होती। ऐसा जीवित व्यक्ति हरदिन बार-बार मरता है। ये जीवित मौत भी बड़ी त्रासदी भरी होती है। ऐसा व्यक्ति चलता-फिरता भी है, खाता-पीता भी है, लेकिन हर पल अपनी मौत का तमाशा रोज देखता है। फिर ऐसे लाखों परिवारों के साथ मौत ने तांडव किया हो तो, ऐसा लगता है कि, हम जिसे आधुनिक सभ्यता कहते हैं, वह पशु से भी बदतर है।

डार्विन ने सच कहा है कि मानव पशु का ही एक विकसित रूप है।

हिरोशिमा में गिरे बम को नाम दिया - लिटिल बॉय, जिसे एफ-बी 29 बमवर्षक विमान द्वारा अमेरिका ने जापान के शहर हिरोशिमा पर गिराया। दूसरे बम का नाम था फैटमैन, जो नागासाकी पर गिराया गया था।

हिरोशिमा पर बम गिरने के दूसरे दिन ही अमेरिका के राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन ने जापान के नाम चेतावनी प्रसारित की थी, कि यह एक नए प्रकार का बम था। इसमें वे शक्तियाँ काम करती हैं, जिनसे सूर्य को गरमी मिलती है।

दो परमाणु बम गिरने के बाद, जापान ने युद्ध विराम की घोषणा की। उस समय जापान के सम्राट हिरोहितो थे। इस घोषणा के साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध का अन्त हुआ।

युद्ध समाप्त होने के बाद जापान की जमीन पर दुनिया के वैज्ञानिक और डॉक्टरों के दल पहुँचने लगे। **उनकी खोज का विषय था- क्या हुआ, कैसा हुआ, कितना नुकसान हुआ आदि। यहाँ भी बम के नुकसान की खोज की जा रही थी, शान्ति की नहीं।**

कॉमेन्ट्री में जो कहा जाता था, वैसे वैसे सीन पर्दे पर दिखाई पड़ते जा रहे थे...

दुनिया के वैज्ञानिकों ने नुकसान का अंदाजा लगाया, लेकिन वे हिसाब

लगाने में सफल नहीं हो सके। बात सही भी है, नुकसान जो दिख रहा है, उसका हिसाब लगाया जा सकता है, लेकिन जो दिखाई नहीं दे रहा, उसका हिसाब कैसे लगाया जाए? फिर आने वाले दस-बीस वर्षों में रेडिएशन का जो नुकसान होने वाला है, उसका अनुमान कैसे लगाया जा सकता है। **मोटे तौर पर वैज्ञानिकों ने एक ही बात कही कि, आने वाली दस पीढ़ियों के बाद ही हिरोशिमा पर गिरे परमाणु बम के नुकसान का ठीक-ठीक आकलन हो सकता है।**

परमाणु बम से तीन अनोखे जहर फैलते हैं। वैज्ञानिकों ने उन तीनों जहर के नाम दिए हैं- **स्ट्रोन्शियम-90, कार्बन-14, सेशियम-137** हैं। ये जहर भी ऐसे हैं, कि दुनिया के वैज्ञानिक इसका इलाज नहीं खोज पाए हैं।

इन तीनों जहर से सनी धूल के कण आकाश में मीलों ऊपर तक फैल जाते हैं। फिर धीरे-धीरे ये कण जमीन पर आ जाते हैं। ये रेडियोएक्टिव कण कई-कई वर्षों तक जीवित रहते हैं और जिस वस्तु के संपर्क में आते हैं, उसे भी जहरीला कर देते हैं। बाकी धूल कण वातावरण की ऊपरी सतह को भेदकर 15 किलोमीटर तक फैल जाते हैं। इन्हें जमीन पर लौटने में कोई 10 वर्ष लग जाते हैं। बारिश के साथ ही ये कण धीरे-धीरे लौटते हैं। जब ये पानी में गिरते हैं, तो सारा पानी जहरीला हो जाता है। यही पानी जब पेड़ लेता है, तो पेड़ भी जहरीला हो जाता है। उसके बीज से जो पेड़ पैदा होता है, वह भी जहरीला ही पैदा होता है। यही कण हवा के जरिये पेड़ की पत्तियों पर, समुद्र की सतह पर फैल जाते हैं, पानी विशाक्त हो जाता है। मछलियाँ तथा जीव जंतु मर जाते हैं, कम असर वाले जीव जहरीले हो जाते हैं। अब इन मछलियों को जो भी प्राणी खाता है, वह इस जहर के प्रभाव में आ जाता है। फिर वह प्राणी अपने बच्चे को भी जन्म देता है, तो वे विकृत अवस्था में पैदा होते हैं। यही विनाश का क्रम वनस्पति में भी होता है। कुल मिलाकर परमाणु रेडियोधर्मिता से जल-थल और आकाश के तीनों प्राणी शिकार हुए बिना नहीं रहते।

किसी प्राणी के संपर्क में आने पर इनमें से निकलने वाली गामा नामक किरणें शरीर को भेदकर अंदर घुस जाती है, फिर शरीर के सभी सिस्टम को नुकसान पहुँचाती है। जमीन पर जब ये कण गिरते हैं तो, जमीन के अंदर उतर जाते हैं और फसलों को जहरीला कर देते हैं। जमीन की उपजाऊ शक्ति को खत्म करते हैं। मनुष्य के संपर्क में आने पर मनुष्य को भी बाँझपन का शिकार बना देते हैं। **गामा किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं, कि एक फीट मोटी सीमेंट-कांक्रीट की दीवार को भेदकर निकल जाती है। रेडियोएक्टिव डस्ट का जहर स्ट्रोन्शियम-90, प्राणियों की हड्डियों में अंदर तक घुस जाता है। हड्डियों के अंदर ही खून का निर्माण होता है। यह जहर उसके सिस्टम को नष्ट कर देता है।** इसी प्रकार दो अन्य जहर भी अलग-अलग प्रकार से प्राणियों का जीवन निगल जाते हैं।

अब बीते हुए दृश्यों का रिपीटेशन हो रहा था। कॉमेन्ट्री की आवाज चल रही थी...

आदमी यूँ तो गलतियों का पिटारा है। पृथ्वी पर जितनी गलतियाँ इसने की हैं, उतनी किसी दूसरे प्राणी ने नहीं की। आदमी ने विकास भी किया, गलतियाँ भी करता रहा और सुधार भी। विकास के साथ-साथ विनाश भी। 20 वीं शताब्दी में उसने एक ऐसी भयानक गलती कर दी, जो मानव इतिहास पर कलंक साबित होगी और उसका कोई इलाज भी नहीं है। उसने परमाणु बम बनाकर पूरी दुनिया को मौत की कगार पर खड़ा कर दिया। अब उससे बचने का, उसके पास कोई उपाय नहीं है।

पूरी दुनिया में लगभग 18 हजार परमाणु बम हैं, ये इतने विनाशकारी हैं, कि कई-कई बार पूरे विश्व को नष्ट किया जा सकता है। ऊपर से आदमी में पेशेंस कम होता जा रहा है।

अब हम पृथ्वी पर आराम से नहीं रह सकते, या तो परमाणु बम रहेंगे या हम। दोनों एक साथ चैन से नहीं रह सकते! हजारों साल का विकास परमाणु बम पल में नष्ट कर सकते हैं। अब आदमी या तो विकास कर ले या परमाणु बम बना ले।

अब अगला दृश्य बदलकर आता है... जैसे कहानी ने मोड़ ले लिया हो...

एक छोटा बच्चा जमीन पर खेल रहा है। इसने बहुत सारी वेस्ट चीजें, जैसे कंकर, काँच के टुकडे, बीज, लकड़ी, तार, जैसी कई चीजें जमा कर ली। इन्हीं चीजों से वह कुछ नया बनाने की कोशिश कर रहा है। सब चीजों को जोड़कर कल्पना से उसे कोई रूप देता है... खुश होता है... और फिर अचानक ही, क्रोधित होकर सब कुछ अपने हाथों से बिगाड़ देता है। जो कृति बनाकर उसका सुख लेना चाहिए, वही क्रोध में आकर बिगाड़ देता है। बस.. यही कहानी आदमी की भी है।

कई प्रकार की खोज कर अनेक प्रकार के प्रयत्नों से समाज को वह विकसित करता है... फिर अचानक अहंकार में क्रोधित होकर, सब कुछ तहस-नहस कर देता है। होना तो यह चाहिए कि, उसने जो बनाया है, उसे देखकर वह आनन्दित हो। यही इस सौभाग्यशाली मनुष्य के दुर्भाग्य कहानी है....

फिर, द एन्ड... लिखा हुआ आ जाता है... लाइट ऑन हो जाती है। पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठता है... बहुत देर तक तालियाँ बजती रहीं, लेकिन इतनी मार्मिक डॉक्यूमेंट्री फिल्म देखकर सब बहुत गम्भीर हो जाते हैं।

वांग शी और फिरोज को बधाई देते हुए सभी अपने रूम की ओर निकल जाते हैं।

क्या यही जीवन है ?

अभी तक के सारे काम हिमानी पूरे कर चुकी थी। लंच हो चुका था, वीडियो कॉन्फ्रेंस 4 बजे थी। हिमानी जब सोच में पड़ जाती और उसके दिमाग में प्रश्न घुमड़ते, तो वह मैं समय हूँ... पढ़ने बैठ जाती थी। उसमें उसे कई प्रश्नों के हल मिल जाते थे। उसके अभियान में यह पुस्तक गाइड का काम कर रही थी। यही सोचकर हिमानी ने पुस्तक उठाई उसका चैप्टर... **दुनिया लाशों के ढेर पर...** निकालकर पढ़ने लगी.....

पृथ्वी पर खरबों वर्षों में, खरबों प्राणी पैदा हुए और नष्ट हो गए। अनुमान है कि, धरती की इंच-इंच भूमि में दस-दस प्राणी दफ्न हैं। यदि मनुष्य की ही बात करें तो प्रत्येक वर्ग इंच भूमि में दर्जनों मानव मौत की नींद सो चुके हैं। गहराई से देखा जाए तो ये पूरी दुनिया एक कब्रस्तान है।

केवल एक ग्राम मिट्टी में जीवों की आबादी करोड़ में गिनी जा सकती है। वैज्ञानिकों के अनुसार एक ग्राम मिट्टी में एक करोड़ एक्टीनोमायसिटीज, 10 लाख कवक और एक लाख शैवाल पाए जाते हैं। ऐसा असंख्य जीवों का विलक्षण संसार है यह हमारी पृथ्वी। आप कल्पना कर सकते हैं इसके आंचल में कितने जीव पलते हैं।

वर्तमान आदमी जीने की बेतहाशा दौड़ में यह भूल ही गया कि, यहाँ प्रत्येक प्राणी को मरना भी है। और उसे अगले पल की भी खबर नहीं। पृथ्वी पर मनुष्य की औसत उम्र 70 वर्ष है। कोई थोड़ा अधिक जी लेता है, कोई थोड़ा कम। **सृष्टि का काल इतना लंबा है कि ये 70 वर्ष गिनती में भी नहीं आते।**

खरबों वर्ष में 70 वर्ष की गणना ही क्या? जैसे मरुस्थल में रेत का एक कण। इतने छोटे से जीवन में इतने प्रपंच? ये 70 वर्ष शान्ति से प्रेम से और आनंद से जीने के लिए है, किंतु मनुष्य इस छोटे से जीवन को भी नर्क बनाकर जीता है। असंख्य निम्न विषयों में लिप्त होकर अशांत रहता है। जीवन को मृत्यु से भी बदतर कर लेता है। सीमाएँ खींचकर युद्ध करता है। धर्म के नाम पर मरता है, मारता है। झूठे अहं के लिए रात दिन उत्पात करता है। निम्न विषयों को लेकर युद्ध करने को तैयार रहता है।

अंतहीन अनर्गल दौड़, किस दिशा में दौड़ रहे, क्यों दौड़ रहे हैं?, कहाँ जाना है, ये भी पता नहीं है। बस, एक अन्धी बेतहाशा दौड़ जारी है...।

ऐसा लगता है, जैसे मुर्दों के ढेर पर रहते-रहते मनुष्य भी सो गया है।

यह कैसी जीवनशैली है? **जीवित होने का गुमान और मुर्दों की तरह जीवन।** मनुष्य या तो अति आत्मविश्वास में जी रहा है, या अति निराशा में। उसने जीवन में संतुलन के लिए कोई जगह बचाकर न रखी। बुद्धि के घमंड में मनुष्य बिलकुल पागल हो रहा है। उसे पता ही नहीं कि इस कब्रस्तान में अब उसका भी नंबर है, यह जानकर भी वह अनजान बना हुआ है।

प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को अमर मानकर ही जी रहा है। जो जानते हैं, कि वे अमर नहीं हैं, वे अपने नाम को अमर रखना चाहते हैं। उन्हें यह भान होना चाहिए कि मरने के पश्चात उनका नाम भी स्वर्गीय हो जाएगा। जिसे वह

खूबसूरत शरीर समझते हैं, उसकी गिनती लाश में बदल जाएगी। उसका एक ही लिबास रह जाएगा, कफन। और घर श्मशान हो जाएगा। मिट्टी से पैदा हुआ और मिट्टी में मिल जाएगा। रेत पर उसने जो भी बनाया है, समय की धारा सबकुछ बहाकर ले जाएगी...।

जीवन में चेतना का दीप न जला, तो पशु और मनुष्य में फिर अंतर ही क्या... ? वही हृदय, वही पाचन तंत्र। मनुष्य के समान ही पशु का भी शारीरिक तंत्र है। मनुष्य भी उन्हीं पाँच तत्वों से निर्मित हैं, जिनसे पशु निर्मित है। फिर दोनों में अंतर ही क्या रह जाता है..? अन्तर केवल विचारों का ही है..।

मनुष्य में चेतना भी है। दिव्य होने की अनंत संभावना है। यह संभावना पशु में नहीं। जो पशु आज है, कल भी वह पशु ही रहेगा। पूरे जीवन पशु ही रहेगा। मानव में अपने आपको बदलने की अनंत संभावना है। उसका छोटा-सा जीवन चेतना के बड़े पंखों से आकाश की असीमित ऊँचाइयों को भी छू सकता है। **अन्य प्राणियों से मनुष्य इसलिए भी श्रेष्ठ है, कि वह मात्र अपने लिए ही नहीं, वरन् सृष्टि के परम के लिए भी घर (मंदिर) बनाता है, फिर उसमें पूजा-अर्चना या इबादत भी करता है। उसका स्मरण कर उसे धन्यवाद देता है।**

इस कब्रस्तान को जिसने अपनी मिल्कियत मान लिया, उसे दुःखी तो होना ही है। उसका झूठा अहंकार ताश के पत्तों की तरह बिखर जाता है। जिसने इस जीवन-यात्रा के सत्य को समझ लिया, वह इन्सान झूठे अहंकार से मुक्त हो जाता है।

▼

रात्रि के 11 बज चुके थे, अतः हिमानी को नींद बहुत जोरों की आ रही थी। फिर भी उसने सोचा आज की डायरी में दो-तीन वाक्य तो लिख ही लेती हूँ। अतः श्रेष्ठ विचार के बाद उसने लिखा-

पूरी दुनिया को सँवारने के लिये लोग क्या-क्या जतन करते हैं। विनाश के लिए काम करते हैं। अगर विनाश ही करना है तो फिर दुनिया को सँवारने की जरूरत क्या है? पहले मनुष्य को यह तय कर लेना चाहिये कि वह दुनिया को सँवारना चाहता है या नष्ट करना चाहता है।

यदि सँवारना चाहता है, तो हर काम सँवारने की दिशा में होना चाहिए...।

– हिमानी

●

आज की शाम...

अब हॉस्टल में बहुत कम स्टूडेंट्स बच गए थे। यह सभी नो वॉर के अभियान में जी-जान से जुटे हुए थे। दुनिया के कई शहरों में अभियान जोर पकड़ रहा था। इधर रूस के हमले लगातार विकराल रूप लेते जा रहे थे। लेकिन स्टूडेंट्स अपनी फिटनेस के लिए मनोरंजन जरूर करते और सबसे अच्छी बात यह थी, कि अभी भी कीव में लाइट और नेटवर्क मौजूद है।

आज शाम सेंट्रल हॉल में बहुत से स्टूडेंट्स इकट्ठे हुए थे। आज **यू.एन.ओ.** अर्थात **संयुक्त राष्ट्रसंघ** पर क्विज का प्रोग्राम रखा था। नोटिस बोर्ड पर इसका विषय दो दिन पहले ही प्रदर्शित कर दिया गया था।

स्टूडेंट इस विषय की तैयारी करके आये थे। फॉदर जोसेफ, स्वेतलाना और मारिया आज के प्रोग्राम आर्गेनाइजर हैं। बाहर भले ही लड़ाई चल रही थी किन्तु हॉस्टल में स्टूडेंट्स अब नई एनर्जी के साथ अपना काम कर रहे थे। अब उनमें मौत का खौफ नहीं, कुछ करने का जज्बा था।

दिनभर के काम पूरे कर लगभग सभी स्टूडेंट्स इकट्ठे हो चुके हैं। प्रोग्राम शुरू करने का वक्त हो चुका था, अतः अपनी जगह से फॉदर जोसफ ने खड़े होकर बोलना शुरू किया।

-डियर स्टूडेंट्स, आपको पता ही है कि, आज एक क्विज का प्रोग्राम है और इसका सब्जेक्ट है- यू.एन.ओ. की कमजोरी और उसके सॉल्यूशन्स.... दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के साथ ही यू.एन.ओ. की स्थापना 24 अक्टूबर 1945 में हुई। इसके पहले जो लीग ऑफ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) था, उसे इसमें

मिला दिया गया। 77 वर्ष से अभी तक यू.एन.ओ. अपना काम कर रहा है।

यू.एन.ओ. दुनिया का यह सबसे बड़ा और मजबूत संगठन है, इसने युद्धों को रोकने तथा छोटे देशों के विकास में अहम भूमिका निभाई है। वक्त के साथ इसकी इमेज और पॉवर कम होती जा रही है। यह दुनिया के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है। आज हम इस चर्चा के जरिये यू.एन.ओ. की कमजोरी और उसके सॉल्यूशन्स ढूँढने की कोशिश करेंगे आप सब तैयार हैं?

समूह से आवाज आयी- हाँ, हम तैयार हैं।

फॉदर फिर बोले- गुड... तो मेरा पहला क्वेश्चन है- यू.एन.ओ. की स्थापना कब हुई थी?

हंगरी की एक छात्रा ने खड़े होकर कहा- 24 अक्टूबर 1945 को।

फॉदर ने फिर प्रश्न किया- इसका हेडक्वॉर्टर कहाँ है और इसको बनाने के लिए किस व्यक्ति ने अपनी भूमि दान में दी?

मोरक्को के एक छात्र ने खड़े होकर बताया- इसका हेड क्वार्टर न्यूयॉर्क में है। यह 39 मंजिला इमारत है। इसके लिए जॉन डी रफेलकर ने अपनी 17 एकड़ जमीन दान में दी थी।

फॉदर ने अगला क्वेश्चन किया- सबसे पहले इसका कॉन्सेप्ट कहाँ तैयार हुआ?

भारत ने खड़े होकर कहा कि - 1941 में न्यूफाऊण्डलैण्ड से कुछ दूर अटलान्टिक महासागर में अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रेंक डी रूजवेल्ट तथा ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल मिले थे। वहाँ विश्वशान्ति के लिए एक घोषणा पत्र तैयार किया गया, जो किसी भी प्रकार के युद्ध के खिलाफ था। यह घोषणा पत्र आगे चलकर संयुक्त राष्ट्रसंघ के गठन का स्रोत बना।

फॉदर ने फिर कहा- गुड आन्सर... नेक्स्ट क्वेश्चन है, यू.एन.ओ. में अभी कितने सदस्य है?
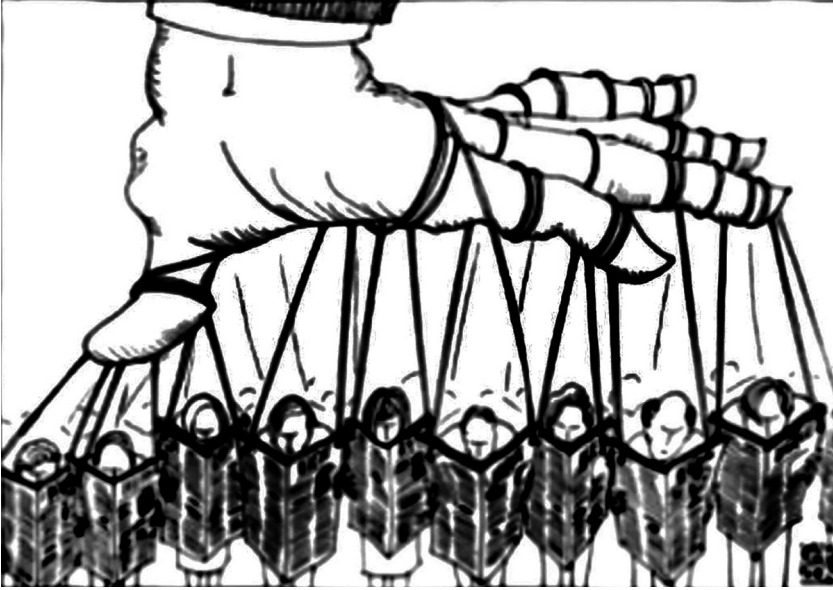
इस बार रोमा खड़ी हुई जो ट्यूनीशिया की है, बोली- यू.एन.ओ. में अभी 198 सदस्य हैं।

फॉदर का अगला कवेश्चन था- यू.एन.ओ. का क्या इम्पॉर्टेंस है?

मिस्र के फरीद ने कहा - यूनाइटेड नेशन्स का बड़ा इम्पार्टेंस है। वर्ल्ड में यह ऑर्गेनाइजेशन एक बड़े परिवार की तरह है। वर्ल्ड के कई देशों के संकट, समस्या और युद्धों को रोकने में भी इसका मैन रोल रहा है।

- यू.एन.ओ. की कमजोरी क्या क्या है?

ब्लेसिंग नाम की जो नायजीरियन छात्रा है। खड़ी होकर बोली- **इसकी पहली कमजोरी वीटो पॉवर है। दूसरी, पॉवर ऑफ वोट की**। जैसे पाँच हजार पॉपुलेशन के देश का वोटर पॉवर एक है, वहीं एक अरब से अधिक की पॉपुलेशन वाले देश का वोट पॉवर भी एक है। इससे देश का प्रतिनिधित्व तो होता है, जनसंख्या का नहीं होता।

एक स्टूडेंट बोला- **जनरल असेंबली में बहुमत का सिद्धान्त और सिक्युरिटी काउंसिल में वीटो का सिद्धान्त लागू होता है, जो अनबैलेंस है। इस एडवांस टाइम में वीटो का पॉवर जैसा नियम बिल्कुल बेमतलब है।**

अब सायना ने कहा- **चौथी कमजोरी फंडिंग के सिस्टम की है, जो देश ज्यादा फंडिंग करते हैं, उनका प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है। और पाँचवी कमजोरी स्थाई सदस्यता की है।** इन कमजोरियों के कारण 100% परिणाम नहीं निकलते। धीरे-धीरे यह संघ निरन्तर कमजोर होता जा रहा है।

फॉदर ने कहा- हमने यू.एन.ओ. की कमजोरी पर डिस्कस की। अब इसमें क्या सुधार किया जाना चाहिए। इस पर चर्चा करेंगे...ओके

आप सब एक-एक करके अपना विचार रखेंगे।

हिमानी खड़ी होकर बोली- **पहला सुधार वीटो पॉवर के नियम में बदलाव जरूरी है। स्थाई सदस्यों की संख्या भी दस से अधिक की जानी चाहिए। इन सदस्यों में वीटो पॉवर के स्थान पर बहुमत का सिद्धान्त लागू कर देना चाहिए।** यू.एन.ओ. में एक प्रिंसीपल जरूरी है। फंडिंग में भी बदलाव जरूरी है।

मोरक्को का एक छात्र खड़ा होकर बोला- जिस प्रकार 1945 में संयुक्त राष्ट्रसंघ का गठन करके राष्ट्रसंघ को इसमें मिला दिया था। **ऐसा ही नया संगठन बनाकर उसमें यू.एन.ओ. को मिला देना चाहिए।**

ट्युनिशिया की छात्रा ने कहा- वीटो पॉवर खत्म कर देना चाहिए।

मिस्त्र के फरीद ने कहा- **जनरल असेम्बली और सिक्युरिटी काउंसिल में केवल बहुमत का प्रिंसीपल होना चाहिए।**

तुर्की के मिराज ने कहा- **सिक्युरिटी काउंसिल के स्थाई सदस्यों की संख्या बढ़ाकर ग्यारह कर देनी चाहिए।** सबसे ज्यादा देशों की जनसंख्या वाले देशों के वोट पॉवर को बढ़ाने की जरूरत है। इनटरनेशनल न्यायलय की जल्द सुनवाई, सरल प्रक्रिया और हर महाद्वीप में इसकी ब्रान्चेस होनी चाहिए।

हंगरी की छात्रा बोली - **यू.एन.ओ. में इन्टरनेशनल सिक्युरिटी बॉर्डर का एक अंग और बढ़ाया जाना चाहिए।**

पोलैण्ड का एक छात्र खड़ा हुआ- इसमें हर देश से प्रपोशनल (अनुपातिक) फीस लेना चाहिए। फंडिंग इन्टरनेशनल बॉर्डर क्रांसिंग टैक्स से पूरी करना चाहिए। साथ ही **इंटरनेशनल जस्टिस की प्रकिया सरल और सस्ती होना चाहिए।**

प्रोग्राम चल ही रहा था कि रेड अलर्ट का सायरन बज गया। माहौल में

उदासी छा गयी। इसका मतलब था कि, खतरा है। सबको बंकर में तत्काल जाना है। अतः कार्यक्रम रोककर सभी बंकर की ओर दौड़ पड़े...।

हिमानी ने डायरी में सबसे पहले सद्‌विचार लिखा :

यदि नेत्रहीन व्यक्ति का, नेतृत्व करने वाला भी नेत्रहीन हो, तो दोनों ही कुएं में गिरेंगे।

-बाइबिल

हिमानी ने डेली डायरी में आज लिखा कि- वांग शी आइटी सेल को बड़ा मजबूत कर चुका था। भारत फील्ड का काम देखता था और हर्ष पलायन से सम्बंधित।

आगे क्या होगा पता नहीं, लेकिन इस बात की बहुत खुशी हो रही है, कि लोग युद्ध का विरोध कर शान्ति के पक्ष में खड़े हो रहे हैं। दुनिया सिर्फ शान्तिवादी लोगों से ही बच सकती है।

- हिमानी

मैं समय हूँ...!
मेरे सन्देशों को आत्मसात करके... दुनिया हर समस्या से मुक्त हो सकती है...

सावधान! सर पर मौत खड़ी है

हिमानी अभी-अभी वीडियो कॉन्फ्रेंस करके फ्री हुई थी। रूम में सभी सहेलियाँ बैठकर अपना-अपना काम कर रहीं थीं।

सायना चुपचाप बैठी थी, कि अचानक उसकी नजर बेड पर रखी पुस्तक पर पड़ी। उसने पुस्तक उठाई और कुछ सोचकर बोली-

प्लीज़ अपना-अपना काम बंद कर दें। आज मैं आपको हिमानी की फेवरेट बुक का एक चैप्टर सुनाने जा रही हूँ। ध्यान रहे, यदि आप नहीं सुनेंगे, तो हिमानी बुरा मान सकती है, इसीलिए प्लीज़... ध्यान से सुनें।

सब जानते हैं, कि सायना चिढ़ाने के लिये ऐसा कर रही है। इसीलिये जया ने काम रोका और कहा - हाँ, हाँ... चल सुना...।

सायना ने पढ़ना शुरु किया... वह बोली - चैप्टर का नाम है... **मानव सभ्यता मौत की कगार पर...**

वर्तमान दौर की अराजकता ने विश्व को परमाणु बमों के ढेर पर खड़ा कर दिया। पूरा विश्व कभी भी खाक हो सकता है। यह परमाणु रूपी अजगर हजारों वर्षों की विकसित सभ्यता निगलने को आतुर है। अपने ही विनाश में आदमी का अहं आग को हवा दे रहा है। **ट्रेड वॉर, कोल्ड वॉर, युद्ध और**

हथियारों की दौड़ मनुष्य को कहाँ ले जाकर छोड़ेगी..., कहा नहीं जा सकता।

इस समय में विश्व के आगे कई गम्भीर चुनौतियाँ हैं, जो विश्व की पूरी तरक्की को नष्ट करने पर आमादा है। **विनाशकारी हथियार, परमाणु बम, जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या का विस्फोट और युद्ध इन सब चुनौतियों ने मनुष्य को मौत की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।** विश्व के हर आदमी के सर पर मौत मंडरा रही है।

पिछले तीन हजार साल में लगभग 15 हजार छोटे-बड़े युद्ध हुए। पृथ्वी पर ऐसा समय कभी नहीं रहा, जब युद्ध अथवा युद्ध की तैयारी नहीं हुई हो...। ऐसा लगता है, जैसे मनुष्य केवल युद्ध करने के लिए पैदा हुआ है। इतनी लड़ाइयाँ तो जंगल का जानवर भी नहीं लड़ता।

मनुष्य ने मनुष्य के बीच जितने फर्क कर लिए, उतने फर्क तो जानवरों में भी नहीं हैं। जानवर भी यदि भरपेट हो तो किसी को नहीं मारता, किंतु मनुष्य यदि भरपेट हुआ, उसके दिमाग का शैतानी कीड़ा कुलबुलाने लगता है...

आस्तिक जो ईश्वर को मानते हैं, उन्होंने कई-कई ईश्वर बना लिए। और नास्तिक, जो ईश्वर को नहीं मानते हैं, उन्होंने कई-कई अनिश्वरवादी सिद्धांत और वाद बना लिए। विश्व में लगभग **300 धर्म,** और **3000 उपधर्म** तथा

3,00,000 मत मतांतर... फिर नस्ल, जाति, क्षेत्र, देश और सीमाएँ अलग।

इतने टुकड़े मनुष्य जाति को एक कैसे कर सकते हैं? पूरी सृष्टि में परमेश्वर तो सिर्फ एक ही हो सकता है। फिर धर्म तो मनुष्य में प्रेम पैदा करता है... नफरत नहीं....

जैसे हाथी, हाथी है... और घोड़ा, घोड़ा..., वैसे ही मनुष्य, मनुष्य है। मनुष्य को जीने के लिए धरती पर एक जाति और एक धर्म पर्याप्त है। हाँ, अन्य ग्रहों पर कोई मनुष्य रहता, तो उसकी जाति या धर्म अलग हो सकते हैं।

यदि मनुष्य वर्तमान स्थिति से बेखबर है, तो सावधान हो जाए, क्योंकि मौत सर पर खड़ी है। हजारों परमाणु बम बड़ी बेसब्री से पूरी मानव सभ्यता को निगल जाने को आतुर है। केवल एक व्यक्ति की सनक काफी है, हजारों वर्षों के विकास को नष्ट करने के लिए!

इस ग्रह पर केवल आदमी ही ऐसा प्राणी है, जो अपने विनाश की कहानी खुद लिखता है।

मनुष्य की बौद्धिक सम्पदा निरर्थक है, यदि वह शान्तिपूर्ण जीवन नहीं जी सके।

बुद्धि तो एक गौण शक्ति है, उसका सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों तरीके से उपयोग किया जा सकता है। उसका उपयोग शान्तिपूर्ण तरीकों में किया जाए, तो वह शान्ति की दिशा में प्रगति करेगी और विनाश

के लिए किया जाए, तो वह विनाश करेगी।

मनुष्य ने अब तक जो भी निर्मित किया, वह सब मनुष्यता के विपरीत खड़ा है। शान्ति के विपरीत है। उसका रचा हुआ सुंदर स्वर्ग ही उसके जीवन को नर्क बना रहा है। मनुष्य ने हर निर्माण में कुछ बुनियादी भूलें की हैं, यह उन्हीं भूलों का परिणाम है। आश्चर्य का विषय तो यह है कि, आदमी उन भूलों को सुधारने के बजाय दोहराए चला जाता है।

अब जया जो अभी तक सुन रही थी, उसने अँगुली से इशारा करते हुए कहा - चल चुप हो जा...

सायना बोली- क्यों, पसंद नहीं आया क्या?

अब ईशा बोली- तेरे को पढ़ना है तो मन में पढ़।

सायना- क्यों, तुम्हें नहीं सुनना है क्या?

तब हिमानी ने कहा- अरे पगली, हम सब यह चैप्टर पहले ही पढ़ चुके हैं।

सायना ने सुना तो वह झुँझलाकर बोली- अरे यार! यह क्या हो रहा है? मैं जो भी करती हूँ, तुम्हें पसंद नहीं आता। इतना कहते हुए वह गुस्से में कमरे के बाहर चली गई।

अभियान की सफलता

अवि ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर, इमरजेन्सी मेडिकल वॉर्ड अपडेट कर लिया था। वॉर्ड बंकर के अंदर पीछे की जगह में बनाया था। सभी लोग इसे देखने के लिए बंकर में आए थे। अवि ने वॉर्ड का बड़ा पर्दा हटाकर बताया, फिर हिमानी से कहा-

इसमें कुल 16 बेड हैं। इसे पर्दों के द्वारा चार सेक्टर में बांट दिया है.... ये राइट साइड में लैब, उधर सभी डायग्नोसिस के इक्विपमेंट और इधर फ्रंट में डॉक्टर्स का सिटिंग अरेंजमेंट। पहले यह बिल्कुल साधारण था, अब यह बिल्कुल व्यवस्थित हो गया है।

हिमानी बोली- वेरी नाइस... क्या बात है अवि तुमने तो लोकल अरेंजमेंट से भी ओरिजनल मेडिकल वॉर्ड बना दिया.....थैंक्स अवि....

हिमानी बोल ही रही थी, कि वांग ने आकर कहा- बाहर किसी ट्रस्ट का ग्रुप तुमसे मिलने आया है...

हिमानी ने पूछा- कौन?

वांग बोला पता नहीं... लेकिन वो तुमसे मिलना चाहता है... फॉदर ने उन्हें आफिस में बिठाकर रखा है.. हिमानी ने कहा चलो, और सब बाहर की ओर चल दिए...

थोड़ी ही देर में हिमानी हॉस्टल के ऑफिस में पहुँच गयी। जैसे ही हिमानी रूम में दाखिल हुई, वैसे ही सब खड़े हो गए। उन्होंने तालियाँ बजाकर हिमानी का सम्मान किया.... हिमानी पशोपेश में पड़ गयी कि, ये सब क्या हो रहा है..

उनमें से एक व्यक्ति ने हिमानी को एक गुलदस्ता भेंट किया... ये हमारे ट्रस्ट की तरफ से... हिमानी ने गुलदस्ता लिया, उन्हें बैठने का इशारा किया, और खुद भी बैठ गयी।

फॉदर बोले- **ये सब यूरोपीय ह्यूमन ट्रस्ट के फाउंडर्स हैं। ये तुम्हारा अभिनन्दन कर तुम्हें थैंक्स कहने आए हैं... हिमानी ने आश्चर्य से कहा- लेकिन मैंने तो कुछ नहीं किया है... इस पर प्रेसिडेंट बोले- आपने जो किया है, उस पर पूरे यूरोप को नाज़ है, पूरी दुनिया के लिए वर्ल्ड पीस का यह मैसेज.... रियली एप्रिशियेबल... आपने जो संदेश दिया है, उसके लिए हम सब आपके आभारी हैं...**

उनमें से एक महिला भी थी, वह बोली- रियली... पूरे वर्ल्ड के लिए इंस्पायरिंग मैसेज है।

हिमानी बोली- थैंक यू ऑल ऑफ यू... बट, मैंने तो ऐसा कुछ भी नहीं किया.. यह सब तो फॉदर एण्ड सभी स्टूडेंट्स का वर्क है...!

इस पर फॉदर बोले- यह सच है कि, हम सब तुम्हारे साथ हैं, लेकिन हम सबकी मैन हीरो तुम ही हो.... तुम नहीं होती.... तो कुछ भी नहीं होता...

इस पर प्रेसिडेंट बोले - द होल वर्ल्ड इज़ अवर फैमिली... आपका बहुत यूनिक मोटो है।

फिर उनमें से एक ने कहा- इन्डीड! कितना पॉवरफुल मैसेज है... हम जितना थैंक्स कहें... उतना कम होगा... वन्डरफुल...

इतने में कॉफी आ गयी थी। सबने कॉफी पी। फॉदर ने कहा- इनका ट्रस्ट हमको हेल्प करना चाहता है...

तब ट्रस्ट के प्रेसिडेंट ने कहा- आपको जो कुछ भी चाहिए हम प्रोवाइड करेंगे...

फॉदर बोले- मैंने इन्हें डिमांड लिस्ट सौंप दी है..

प्रेसिडेन्ट ने फिर कहा- आपकी ये पूरी डिमांड थ्री डेज़ में पूरी हो जाएगी और आगे भी आपकी जो भी डिमांड हो.... छोटी या बड़ी प्लीज़ टेल अस। आपकी हेल्प करना... आपसे जुड़ना हमारा प्लेज़र होगा....

हिमानी बोली - आप वर्ल्ड पीस फोरम के अभियान को आगे बढ़ाने में मदद कीजिये....

श्योर...श्योर... हम भी फोरम से जुड़कर पूरे वर्ल्ड में इसे आगे बढ़ाएँगे। अब हमारे ट्रस्ट का मकसद भी यही होगा... जो तुम्हारा है।

उसके बाद वे सभी स्टूडेंट्स से मिलते हैं, उनको थैंक्स कहते हैं और फिर चले जाते हैं....

उफ्फ...! इतने विवाद...?

फोरम ने आज पूरे यूक्रेन में, नो वॉर के पोस्टर लगाए। युद्धस्तर पर यह अभियान सुबह 7 बजे से शाम 7 बजे तक चला। सभी यूनिवर्सिटी के छात्रों ने अपने-अपने एरिया में पोस्टर लगाए।

लंच के बाद रात 9 बजे।

हिमानी ग्रुप के लगभग दस-बारह फ्रेंड्स रूम में इकट्ठे हुए हैं। ईशा और सायना ने इन्हें विशेष रूप से इन्वाइट किया था। इन दोनों ने मिलकर एक चैप्टर तैयार किया है, जिसे दोस्तों में सुनाना चाहती थी। ईशा ने अपनी जगह बैठकर बोलना शुरू किया-

डियर फ्रेंडस... सायना और मैंने एक चैप्टर तैयार किया है। इसका नाम है- दुनिया के इतने सीमा विवादों में शान्ति कैसे हो...?

अब सायना बोली- दुनिया के कुल आधे से अधिक देशों में, सीमा से सम्बंधित विवाद हैं। **कुछ विवाद तो शताब्दियों पुराने भी हैं... और कुछ विवाद खतरनाक स्टेप में पहुँच गए हैं। हल होने की बजाय विवाद और बढ़ते जा रहे हैं।**

ईशा ने कहा- आपके सामने कुछ खास सीमा विवादों का प्रेजेंटेशन करने जा रहे हैं, और ये इसलिए करने जा रहे हैं, कि इतने विवादों के बाद भी क्या दुनिया में शान्ति की उम्मीद की जा सकती है? इससे बचने के उपाय हो सकते हैं? अगर हो सकते हैं, तो हमसब मिलकर उन्हें खोजने का प्रयास करें।

सायना- तो शुरू करते हैं, दुनिया के कुछ खास सीमा विवाद..... इस बारे में

आगे की जानकारी ईशा देगी।

अब ईशा ने बोलना शुरू किया- हम **एशिया महाद्वीप** से अपनी शुरुआत करते हैं।

एशमोर और कटियार दीप समूह को लेकर **इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया** के बीच सीमा विवाद चल रहा है।

लेबनान और सीरिया के बीच दिरअल तथा अन्य क्षेत्रों का विवाद चल रहा है।

ईरान और इराक में शत अलरबी क्षेत्रों को लेकर दोनों देशों के बीच विवाद।

ईरान और संयुक्त अरब अमीरात के बीच अबू मूसा क्षेत्र को लेकर विवाद है।

नागोरनो काराबाख क्षेत्र को लेकर **आर्मेनिया और अजरबेजान** में विवाद की स्थिति बनी हुई है।

भारत और पाकिस्तान में जम्मू और कश्मीर की पूर्व रियासत को लेक- र तथा आजाद कश्मीर, गिलगिट, बाल्टिस्तान क्षेत्र, सियाचिन ग्लेशियर, साल्टोरो तथा सर क्रीक रेखा पर भी विवाद है।

भारत और चीन में अक्साई चीन तथा अन्य क्षेत्रों को लेकर विवाद चल रहा है।

बहरीन और कतर, इन दोनों के बीच फस्तअल दीबाल कित्त जरादाह को लेकर लड़ाई है।

किर्गिस्तान-तजाकिस्तान और उज्बेकिस्तान में फरगना घाटी के कई एरिया में विवाद है।

इंडोनेशिया और मलेशिया में अंबालात विवादित एरिया है।

इजराइल और फिलिस्तीन के बीच वेस्ट बैंक तथा पूर्वी यरूशलम के क्षेत्र मुख्य रूप से विवाद का कारण हैं।

भारत और नेपाल के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध हैं। इसके बाद भी कालापानी क्षेत्र, सुस्तानदी अंतुदंडा तथा नवलपरासी क्षेत्र को लेकर समस्या बनी हुई है।

सैन्य सीमांकन रेखा के उत्तर में कोरियाई प्रायद्वीप **उत्तरी कोरिया और दक्षिणी कोरिया** के बीच संघर्ष का कारण बना हुआ है।

रूस और जापान के बीच दक्षिण सखालिन, कराकुटो कुरिल, चिशिमा तथा

चिशिमा द्वीपसमूह विवाद का मुख्य कारण हैं।

उत्तरी कोरिया, दक्षिणी कोरिया और जापान, इन तीन देशों के बीच दोकदो तथा ताकेशिमा क्षेत्र का विवाद चल रहा है।

रूस और दक्षिणी कोरिया के बीच भी नोंकटुंडो क्षेत्र को लेकर विवाद है।

सिंगापुर और मलेशिया के बीच पेंड्राब्रांका, सिंगापुर जलडमरूमध्य के पूर्वी प्रवेश द्वार के कई टापू विवादित हैं।

लाओस और कम्बोडिया में ओतांगव क्षेत्र पर विवाद है।

प्राचीन बरी क्षेत्र पीह विहार मंदिर के पास का क्षेत्र खाओ फ्रा विहान **थाईलैंड और कम्बोडिया** में विवाद के कारण है।

कुवैत और सऊदी अरब में करुह तथा उम्म अल मरदीम क्षेत्र को लेकर विवाद चला आ रहा है।

मलेशिया और फिलीपींस में सबा का हिस्सा और उत्तर बोर्नियो विवाद का कारण है।

संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब भी सीमा विवाद से दूर नहीं हैं।

अब सायना बोली- **यूरोप महाद्वीप** में भी कई देशों में विवाद बना हुआ है, जैसे....

रूस और यूक्रेन के बीच तुलजा द्वीप केर्च जलडमरूमध्य सरिच तथा अजोब सागर क्षेत्र में सीमा विवाद है।

यूनान और तुर्की में एजियन, एमिया तथा काडार्की क्षेत्र पर विवाद है।

मोंट ब्लॉक मासिफ पर्वत की प्रमुख चोटियों पर **फ्रांस** अपना दावा करता है, जबकि **इटली** का दावा है कि यह शिखर साझा है।

आयरलैंड और यूनाइटेड किंग्डम में भी कार्लिंग, फोर्ड लव एंड लफ फायल के क्षेत्रों पर सीमा विवाद चला आ रहा है।

सीप तालाब को लेकर **नीदरलैंड** और **फ्रांस** में विवाद है।

यूनाइटेड किंग्डम, स्पेन और आयरलैंड में जिब्राल्टर विवाद बना हुआ है। साथ ही यूट्रैक्ट की संधि की व्याख्या सहित और अन्य सीमा के स्थानों पर भी विवाद है।

यूनाइटेड किंग्डम, डेनमार्क और आईसलैंड में रॉकाल द्वीप तथा उत्तरी

अटलांटिक महासागर में निर्जन द्वीप समूह को लेकर विवाद बना हुआ है।

जर्मनी और नीदरलैंड के बीच हालार्ट वे का क्षेत्र विवादित है।

स्विट्जरलैंड का मानना है, कि सीमा झील के बीच से गुजरती है, जबकि **ऑस्ट्रिया** का दावा है कि सीमा तट से गुजरती है। **जर्मनी** इसमें अस्पस्ट राय रखता है।

स्पेन और पुर्तगाल के बीच ओलिमें शहर को लेकर विवाद बना हुआ है।

फ्रांस और बेल्जियम का भी सररूह क्षेत्र विवादित है।

ईशा ने कहा- **अफ्रीका महाद्वीप** में भी कई विवाद हैं..

अफ्रीका और दक्षिणी सूडान- अफ्रीका तथा दक्षिणी सूडान के बीच अबेई, हैग्लिंन, जोधा काफिया, किंगी काफा के क्षेत्रों को लेकर विवाद है।

मिस्त्र और सूडान की सीमाओं में अल हबीबी त्रिभुज शामिल है, जो विवाद का कारण बना हुआ है। त्रिभुज के करीब वीरताविल नाम का एक वीरान क्षेत्र है। यह लावारिस पड़ा हुआ है, इसे कोई भी देश अपने पास में रखने को तैयार नहीं।

दक्षिणी अफ्रीका और नामीबिया में तो नदी की सीमा को लेकर विवाद है।

मिस्त्र और सूडान के बीच वादी हल्का सेलिएंट क्षेत्र विवाद का कारण बना हुआ है।

अब सायना बोली- **दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप** के विवाद

गुयाना और वेनेजुएला, इन देशों के बीच गुयाना इंसेकविबा अंकोको द्वीप आदि क्षेत्रों को लेकर विवाद है।

ब्राजील और उरुग्वे में भी कई क्षेत्रों को लेकर सीमा विवाद है। इनके बीच इस्लाब्रासी लेरा तथा इल्हाब्रासी लेरा को लेकर विवाद है।

कोलंबिया और वेनेजुएला- मोजेस द्वीप समूह, वेनेजुएला की खाड़ी तथा अपरिभाषित समुद्री सीमा को लेकर दोनों देशों में सीमा विवाद।

अर्जेंटीना और चीली के बीच सीमा के कुछ हिस्से अभी भी अपरिभाषित हैं, जो विवाद कारण बने हुए हैं।

अब फिर ईशा ने कहा- **उत्तरी और मध्य अमेरिका** के विवाद

वेनेज़ुएला और डोमेनिक जैसे देशों के बीच एवेस द्वीप को लेकर विवाद है।

हंस द्वीप को लेकर **कनाडा** तथा **किंग्डम आफ डेनमार्क** (ग्रीनलैंड की ओर से) के बीच विवाद है।

कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका – वैसे तो दोनों देशों के संबन्ध अच्छे हैं, किंतु कुछ क्षेत्रों को लेकर सीमा विवाद है।

सायना ने कहा– ये तो सिर्फ एक झलक थी, लेकिन विश्व में आधे से अधिक देशों में सीमाओं के विवाद चल रहे हैं।

अकेले चीन का इतने देशों के साथ सीमा विवाद है जैसे- **कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान, म्यांमार, लाओस, वियतनाम, उत्तरी कोरिया, मंगोलिया और रूस।** ऐसे में हम शान्ति की कल्पना कैसे कर सकते हैं?

ईशा ने कहा- ये विवाद सिर्फ इसलिए बताए हैं, कि हम इतने विवादों के बीच में सीमा विवाद का कोई आइडियल सॉल्यूशन्स ढूँढ सकें.... क्योंकि सीमा विवाद के हल बगैर युद्ध को नहीं रोक सकते... इतना कहकर दोनों चुप हो गयी।

जया ने कहा- हम सबको इसपर गहराई से विचार करके उपाय खोजना चाहिए। क्योंकि युद्ध से जुड़ी हर समस्या के उपाय खोजना भी हमारे अभियान का ही हिस्सा है। सबने तालियाँ बजाई।

अब हिमानी ने बोलना शुरू किया- डियर फ्रेंडस....सायना और ईशा ने जो जानकारी दी, उससे लगता है कि, **आधे से ज्यादा दुनिया सीमा की समस्या से ग्रस्त है... और जब तक इनका हल नहीं होता, युद्ध किसी कीमत पर नहीं रुक सकते... हम सबको इस गहरी समस्या के उपाय ढूँढना ही चाहिए....** कल के अभियान में हमें क्या-क्या करना है... आपको इसकी जानकारी है ही।

आज के लिए बस इतना ही... वी विल मीट टुमॉरो अगेन।

यूक्रेन का अतीत

हिमानी आज 7 बजे सो कर उठी थी। एक घंटे में नहाकर वह बाहर आ गयी थी। रेग्युलर क्लासेस बन्द हो गईं थी। ऑनलाइन क्लासेस अभी शुरू नहीं हुई थी। इसलिए सभी स्टूडेंट्स की दिनचर्या थोड़ी आराम से चल रही थी। ईशा अभी भी सो रही थी। जया बॉथरूम में थी। हिमानी तैयार होकर चेयर पर बैठी, तो उसकी नजर टेबल पर रखे न्यूज पेपर पर पड़ी, जो यहाँ का एक प्रतिष्ठित न्यूज पेपर है। हिमानी ने पेपर उठाया और उसी को पढ़ने लगी। सबसे पीछे के पेज पर यूक्रेन एवं रूस का इतिहास छपा था। उसे रूस की हिस्ट्री तो पता थी, लेकिन उसने यूक्रेन की हिस्ट्री कभी नहीं पढ़ी थी, अतः वह यूक्रेन के बारे में पढ़ने लगी।

यूक्रेन का इतिहास

यूक्रेन पूर्वी यूरोप में स्थित एक देश है। इसकी सीमा पूर्व में रूस, उत्तर में रूस, पोलैण्ड, स्लोवाकिया पश्चिम में हंगरी दक्षिण पश्चिम में रोमानिया व मोल्दोवा, दक्षिण में काला सागर और अजोब सागर से मिलती है। इसकी राजधानी कीव है, जो देश का सबसे बड़ा शहर है।

यूक्रेन का आधुनिक इतिहास नवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है, जब यह क्रीवियन रूस के नाम से एक बड़ा और शक्तिशाली राज्य बनकर खड़ा हुआ था। 12 वीं शताब्दी में एक बड़ी उत्तरी लड़ाई के बाद इसका क्षेत्रीय शक्तियों में विभाजन हो गया।

19वीं शताब्दी में इसका बड़ा भाग रूसी साम्राज्य में और बाकी भाग

ऑस्ट्रो-हंगेरियन के नियंत्रण में आ गया। बीच के कुछ वर्षों में उथल-पुथल के पश्चात 1922 में यह सोवियत संघ के संस्थापक सदस्यों में से एक बना। वर्ष 1945 में यूक्रेनयाई एस.एस.आर. संयुक्त राष्ट्रसंघ का सह संस्थापक सदस्य बना। सोवियत संघ के विघटन के बाद यूक्रेन पुनः स्वतंत्र देश बन गया।

19वीं शताब्दी

19वीं शताब्दी में ऑस्ट्रिया और रूस के बीच में यूक्रेन की स्थिति एक ग्रामीण जैसी ही थी। इन देशों में होते तेजी से शहरीकरण और आधुनिकीकरण के बीच यूक्रेन में भी राष्ट्रवादी, बुद्धिजीवियों का उदय हुआ। इनमें प्रमुख नाम राष्ट्रीय कवि तारस शैवचेंको (1814 से 1861) हैं। राजनीतिक विचारक मिखाइलो द्राहोमनोव (1841 से 1895) हुए।

इस दौर में यूक्रेन का बड़ा जन जागरण हुआ। इसी के परिणाम स्वरूप 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवादी और समाजवादी पार्टियों का उदय हुआ। ऑस्ट्रियन, गैलिसिया, हैब्सबग्ज की अपेक्षाकृत उदार नियम के अंतर्गत यह राष्ट्रवादी आंदोलन का केंद्र बन गया।

1917 की रूसी क्रांति में बोल्शेविक के तहत सोवियत संघ की स्थापना हुई। वहीं यूक्रेन में भी उग्र कम्युनिस्ट और समाजवादी प्रभाव के बीच स्वाधीनता के लिए एक यूक्रेनी राष्ट्रीय आंदोलन उभरा। कई यूक्रेनी राज्यों का उत्थान हुआ, जिसकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता यूक्रेनी पीपुल्स रिपब्लिक (यू.एन.आर.)

के रूप में हुई। यूक्रेन के उन राज्यों में जहाँ कभी रूसी साम्राज्य का था, वह यूक्रेनी सोवियत समाजवादी गणराज्य (या सोवियत यूक्रेन) की स्थापना हुई। जबकि पूर्व आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के क्षेत्र में पश्चिम यूक्रेनी पीपुल्स रिपब्लिक और हुतसुल गणराज्य का गठन हुआ। आगे चलकर 22 जनवरी 1919 को कीव में सेंट सोफिया स्क्वायर पर यूक्रेन पीपुल्स रिपब्लिक और रिपब्लिक के बीच अधिनियम के तहत समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिनसे आगे चलकर गृह युद्ध का जन्म हुआ।

पोलैण्ड ने पोलिस-यूक्रेन युद्ध में पश्चिमी यूक्रेन को हराया, लेकिन कीव में बोल्शेविक के खिलाफ विफल रहे। रीगा की संधि के अनुसार पश्चिमी यूक्रेन को पोलैण्ड में सम्मिलित कर लिया गया, जिसे मार्च 1919 में यूक्रेनी सोवियत समाजवादी गणराज्य के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। सोवियत सत्ता की स्थापना के साथ ही यूक्रेन के आधे क्षेत्र में पोलैण्ड और रूस का अधिकार हो गया, जबकि दनिएस्टर नदी के बाएँ किनारे पर मोलदावियन स्वायत्त राष्ट्र का निर्माण हुआ। यूक्रेन दिसंबर 1922 में सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ का एक संस्थापक सदस्य बन गया।

द्वितीय विश्व युद्ध

सितंबर 1939 में पोलैण्ड पर आक्रमण के बाद जर्मन और सोवियत सेना ने पोलैण्ड के क्षेत्र को आपस में बांट लिया। इस प्रकार यूक्रेनी जनसंख्या बहुल पूर्वी गालीसिया और मोलदावियन क्षेत्र फिर से यूक्रेन के बाकी हिस्सों के साथ जुड़ गए और इतिहास में पहली बार यह राष्ट्र एकजुट हुआ।

22 जून 1941 को जर्मन सेना ने सोवियत संघ पर हमला किया और लगभग 4 वर्ष के युद्ध का आरंभ हो गया। प्रारंभ में धुरी राष्ट्रों ने बढ़त बनाई किंतु लाल सेना ने उन्हें रोक दिया। कीव के युद्ध में इसके भयंकर प्रतिरोध के कारण इस शहर को हीरो सिटी के रूप में सम्मानित किया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूक्रेन को भारी क्षति हुई। यूक्रेन के लगभग 700 से अधिक नगरों और कस्बों और 28000 से अधिक गाँव नष्ट हो गए थे।

1953 में स्टालिन की मृत्यु के बाद ख्रुश्चेव सोवियत संघ के नए नेता बने। 1938-39 में यूक्रेनी एसएसआर कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख सचिव रह

चुके खुश्चेव यहाँ के गणराज्य से भलीभाँति परिचित थे। संघ के नेता बनते ही उन्होंने यूक्रेन और रूस के बीच दोस्ती को बढ़ावा दिया। 1954 में पेरेसास्लाव की संधि की 300 वर्षगांठ को व्यापक रूप से मनाया गया। क्रीमिया को यूक्रेन में स्थानांतरित कर दिया गया। सन 1950 तक यूक्रेन उद्योग और उत्पादन में पुनः पटरी पर आ गया था।

सोवियत रूस-यूक्रेन ने जल्द ही औद्योगिक उत्पादन में यूरोप को पीछे छोड़ दिया। साथ ही सोवियत में हथियार उद्योग उच्च तकनीक अनुसंधान का यह एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

26 अप्रैल 1986 को चेर्नोबिल परमाणु ऊर्जा संयंत्र के एक रिएक्टर में विस्फोट हुआ। परिणाम स्वरूप चेरनोबिल दुर्घटना, इतिहास की सबसे खराब परमाणु रिएक्टर दुर्घटना बन गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इसमें 56 मौतें दुर्घटना के समय तथा आगे चलकर 4000 से अधिक मृत्यु कैंसर के कारण हुई। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात यूक्रेन 24 अगस्त 1991 में स्वतंत्र हो गया।

यूक्रेन संकट की शुरूआत कैसे हुई?

सोवियत संघ के विघटित होने के बाद, रूस और यूक्रेन के संबंध काफी मजबूत थे। यूक्रेन की विदेश नीति पर रूस का गहरा प्रभाव था। यूक्रेन की सरकार भी रूसी शासन के आदेश पर काम करती थी। लेकिन बिगड़ती अर्थव्यवस्था, बढ़ती महंगाई, और अल्पसंख्यक रूसी भाषी लोगों के बहुसंख्यक लोगों पर शासन में विद्रोह की चिंगारी सुलगा दी।

2014 में यूक्रेनी लोगों के विद्रोह ने संसद को अपने रूसी समर्थक राष्ट्रपति यानुकोविच को हटने के लिए बाध्य कर दिया। यूक्रेनी लोगों ने अमेरिका और यूरोप समर्थक नेता पेट्रो पोरोशेंको को राष्ट्रपति चुन लिया। तब से मित्र यानुकोविच रूस में निर्वासन काट रहे हैं। 2019 में यूक्रेन ने संविधान में संशोधन कर खुद को यूरोपीय संघ और नाटो संगठन का हिस्सा बनने का ऐलान कर दिया।

बस यही बात रूस को नागवार गुजरी। उसे लगने लगा कि यूक्रेन उसके लिए भविष्य में खतरा बन सकता है। यही विवाद बढ़ता चला गया।

सोने से पहले हिमानी को डायरी लिखना थी। उसने सोचा और फिर लिखना शुरु किया -

आज दिनभर फोरम का काम अच्छा रहा। आदमी ने ऊर्जा प्राप्त करने के लिए अणु की खोज की, किंतु परमाणु बिजली के बदले परमाणु बम बना लिए, जो पूरी मनुष्य जाति को नष्ट करने के लिए बिलकुल तैयार हैं। यह विकास नहीं, विकास के नाम पर विनाश है। **एक पेड़ से लाखों माचिस की तीलियाँ बन सकती हैं और एक माचिस की तीली से लाखों पेड़ जलकर राख हो सकते हैं।** एक पेड़ से लाखों तीलियाँ बनाना, विकास तो है, किंतु उसी विकास को जला देना पागलपन के सिवा कुछ नहीं।

हर तरह विनाश के हथियारों से आदमी शक्तिशाली तो हो गया, लेकिन उन्हें संभाले रखने की समझ और विवेक को नहीं बढ़ा सका। जितनी तेजी से विनाशकारी हथियार बढ़ रहे हैं, उतनी ही तेजी से मनुष्य अविवेकी और उग्र होता जा रहा है। यही सबसे बड़ा खतरा है।

- हिमानी

आश्चर्यजनक सीमाएँ

संडे का दिन है... सेंट्रल हॉल में सब स्टूडेंट्स इकट्ठे हो चुके हैं। आज भी हॉल में सब गोला बनाकर बैठ गए गए हैं। आज का विषय पहले से तय है, जो बड़ा ही खास ओर मजेदार है- **विश्व की आश्चर्यजनक सीमाएँ... ऐसी सीमाएँ जहाँ बारूद नहीं, प्रेम बरसता है।**

फॉदर, स्वेतलाना और सायना मैडम भी बैठे हैं।

अब हिमानी ने कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए कहा...

ऑनरेबल फॉदर, मैडम, एन्ड माय डियर फ्रेंडस... जैसा कि आप सभी जानते हैं, कि आज हम दुनिया की बेस्ट और अमेज़िंग बॉर्डर के सम्बंध में चर्चा करने वाले हैं। आइ होप कि, सब तैयारी करके आये होंगे... इस विषय पर आप सटीक जानकारी दे सकते हैं, विचार रख सकते हैं, या लिखकर लाये हो, तो नोट्स भी पढ़ सकते हैं...

तो आइए...! अब प्रोग्राम की शुरूआत करते हैं....

थोड़ी ही देर के बाद नीदरलैंड का डेविड अपनी जगह पर खड़ा हुआ, उसके हाथ में कुछ पेपर्स थे, वह बोलने लगा.... हमारे देश की ये बॉर्डर दुनिया की सबसे अच्छी बॉर्डर है, जहाँ प्यार के फूल खिलते हैं... आइए इसकी एक झलक आपको दिखलाता हूँ....

– नीदरलैंड और बेल्जियम की बॉर्डर ऐसी है, जहाँ बारूद नहीं प्यार बरसता है! दोनों देशों के बीच ये इंटरनेशनल बॉर्डर प्यार की एक मिसाल है।

इस शहर के कुछ हिस्से नीदरलैंड में तो कुछ हिस्से बेल्जियम में है।

शहर के बीच से इंटरनेशनल बॉर्डर गुजरती है, जिसके कारण पार्क, रेस्टोरेंट, इमारतें, स्कूल, पोस्टऑफिस जैसे सैकड़ों भवन आ गए हैं। यही कारण है, कि इस शहर की स्थिति बड़ी रोचक बन गई है। बेल्जियम शहर को बार्ले हेरटोग के नाम से तथा नीदरलैंड को बार्ले नसायु के नाम से जानते हैं।

बार्ले शहर के अन्दर आप नीदरलैंड की सीमा में, कुर्सी पर बैठकर बेल्जियम की सीमा में रखे टीवी पर कार्यक्रम देख सकते हैं। यहाँ दो नगर पालिका प्रशासन, दो महापौर, दो डाकघर, लेकिन सभी को चलाने वाली कमेटी एक है, जिससे स्थानीय मुद्दों को शीघ्र हल किया जा सके और आपसी सहयोग बना रहे। एक ही दरवाजे पर दो ऐड्रेस, दो अलग अलग देश के झंडे, दो डोरबेल। दो देशों के झंडे के बीच सैलानी अपनी तस्वीर खिंचवाते हैं। बीच सड़क पर बनी सीमा की पट्टी पर बैठकर, दो देशों का लुत्फ उठाते हैं।

वांग बीच में बोल पड़ा- मतलब यह कि, नीदरलैंड में कॉफी पीयो और बेल्जियम में घूमने निकल जाओ। एक देश में खाना बनाओ, और दूसरे देश में खाओ?

इस पर डेविड ने कहा- हाँ! बिल्कुल सही कहा।

आइए अब जानते हैं यहाँ नागरिकता की समस्या को किस तरह सुलझाया गया...

दरअसल नागरिकता की समस्या को सुलझाने के लिए भी एक यूनिक नियम बनाया। वह ऐसा कि, **जिस घर का मेन दरवाजा, जिस देश की सीमा**

में खुलेगा, उसमें रहने वाले लोगों को, उसी देश की नागरिकता प्रदान की जाएगी।

इस बीच वांग पूछ बैठा- इसकी ऐसी स्थिति क्यों बनी?

तब डेविड बोला- इसकी ऐसी स्थिति इसीलिए बनी कि, 1830 में जब बेल्जियम नीदरलैंड से अलग होकर एक आजाद देश बना, तो बेल्जियम को अपनी सीमाएँ निर्धारित करना थी। सर्वेक्षकों ने उत्तरी सागर के तट से जर्मन राज्यों की सीमा को निर्धारित किया, लेकिन जब वे इस क्षेत्र में पहुँचे, तो इस यहाँ के मुद्दों को बाद में निपटाने के लिए छोड़ दिया, जिससे इस क्षेत्र में में ऐसी स्थिति बन गई। इतना बोलकर वह बैठ गया। सभी स्टूडेंट्स ने ताली बजाकर उसकी तारीफ की।

अब एक स्वीडन का छात्र खड़े होकर बोल पड़ा...

स्वीडन और फिनलैंड के बीच जो बॉर्डर है, वह बड़ी ही सॉफ्ट है, आप दोनों देशों के बीच गोल्फ खेल सकते हैं। यहाँ कोई समस्या नहीं...।

इतना बोलकर वह अपनी जगह पर बैठ गया। फिर तालियाँ बजी।

अब हर्ष मंच पर आया। एक पेपर का सहारा लेकर, उसने भी बोलना शुरू किया...

आइए... मैं भारत और बांग्लादेश की यूनिक बॉर्डर पर आपको ले चलता हूँ... ये सीमा भी दुनिया में प्यार और सद्भावना की मिसाल है।

भारत और बांग्लादेश की बहुरंगी यह सीमा अपने आप में, कई कहानियाँ संजोए बैठी है। दोनों देश की बॉर्डर पर बसा गाँव हरिपोखर है, यहाँ मोहम्मद इलियास का परिवार रहता है। उसके छोटे से घर के भीतर दोनों देशों की बॉर्डर आ गई है। **इस घर के परिवार का बेडरूम भारत में है, और किचन बांग्लादेश में....** घर के इर्द-गिर्द दोनों देशों के गार्ड पहरा देते हैं।

ऐसे कई इलाके हैं, जो बॉर्डर के बीच में आ गए हैं। दो देशों की जमीन पर लकीर जरूर है, लेकिन यहाँ रहने वालों के दिलों में कोई लकीर नहीं है।

अब अवि ने आकर मंच सम्भाला और बोलना शुरू किया- गली के एक तरफ है **भारत...** तो दूसरी तरफ है **बांग्लादेश।**

एक तरफ भारत और दूसरी तरफ बांग्लादेश बीच में एक सकरी सी गली

है। यहाँ रहने वाले आपस में एक दूसरे की चाय पीते हैं। कभी भारत से चाय बनकर जाती है, तो कभी बांग्लादेश से आती है। बच्चे रोज समूह बनाकर खेलते हैं। उन्हें अभी दो देशों के बीच का फर्क पता नहीं है... उन्हें देखकर कोई नहीं बता सकता कि, इनमें कौन सा बच्चा किस देश का है। हालाँकि सीमा को चिन्हित करने वाले हर जगह पत्थर लगे हैं। कानूनन दोनों देशों के लोग बेरोकटोक नहीं आ जा सकते। लेकिन वह कानून के दायरे में रहकर भी आपस में प्रेम बाँट ही लेते हैं।

दोनों ही देशों की आपसी सहमति से नागरिकों को आवश्यक वस्तुएँ खरीदने के लिए बाजार हाट लगाए जाते हैं, लोग अपनी जरूरत का सामान खरीदते हैं। साथ मिलकर खाते, पीते हैं।

मजे की बात यह है कि.... **भारत और बांग्लादेश की बॉर्डर पर हर वर्ष बैशाख के पहले दिन एक मेला भी लगता है। बीएसएफ तथा बीजीबी ने मिलकर, इस मेले की शुरूआत की थी। दोनों देशों के नागरिक मिलकर आपस में प्रेम बाँटते हैं। कई बरसों के बिछड़ों का मिलन होता है। भारत-बांग्लादेश की यह बॉर्डर, विश्व में सद्भावना और प्रेम का संदेश देती है।**

अब जया ने अपनी बात रखी....

हमारे एरिया में, **भारत और भूटान की बॉर्डर भी सौहार्द का प्रतीक है। इन देशों के बीच सिर्फ एक ही एंट्री पॉइंट है।** दोनों देशों के बीच रोड के डिवाइडर को ही बॉर्डर मान लिया गया है। यह लोगों के लिए बड़ा रोमांचकारी अनुभव है... जब दो कदम चलने के बाद ही, आप भारत या भूटान में होते हैं....

अब मैक्सिको के स्टूडेंट ने हाथ में पेपर लेकर बोलना शुरू किया- ये हमारे देश की सबसे **अनोखी बॉर्डर है, जहाँ वॉलीबॉल खेला जाता है...**

अमेरिका और मेक्सिको की बॉर्डर पर बड़ा ही अनूठा नजारा देखने को मिलता है। यहाँ दोनों देशों के बीच वॉलीबॉल खेलना एक सालाना परंपरा है, जिसमें हर साल दोनों देशों, नाको एरीजोना (यूएस) और नाको सोनोरा (मैक्सिको) के बीच वॉलीबॉल खेला जाता है। खेल में हिस्सा लेने वाले लोग बेशक बॉर्डर नहीं लाँघते हैं, किंतु दोनों तरफ के लोग अपनी अपनी सीमा से, वॉलीबॉल खेलकर जश्न मनाते हैं... **मजे की बात तो यह है, कि अंतर्राष्ट्रीय सीमा की बॉर्डर ही नेट के रूप में इस्तेमाल की जाती है।**

यहाँ के निवासियों ने बॉर्डर शब्द का रूप ही बदल दिया है और नागरिकों में उत्साह और प्रेम का रंग भर दिया। भेदभाव को भुलाकर एकता और प्यार की यह एक यूनिक मिसाल है.....

एक और बॉर्डर है, अमेरिका और कनाड़ा की...

आप अगर मंच पर हैं, तो कनाड़ा में और दर्शक हैं, तो अमेरिका में....

संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाड़ा के बीच की लाइन को डर्बी लाइन कहते हैं। यहाँ भवन, थिएटर और कई स्थानों के बीच से बॉर्डर गुजरती है।

आप कभी अमेरिका, तो कभी कनाड़ा में होंगे। कई घरों में खाना अमेरिका में बनता है, तो खाया कनाड़ा में जाता है।

यहाँ मौजूद थिएटर के बीच से बॉर्डर गुजरती है। इसमें खास बात यह है कि, जब आप स्टेज पर परफॉर्म कर रहे हैं, तो उस वक्त कनाड़ा में होते हैं और जब आप थिएटर में दर्शक के रूप में बैठे हैं, तो अमेरिका में होते हैं.... है ना आश्चर्य की बात... कहीं अमेरिका और कहीं कनाड़ा की यह संस्कृति पूरी दुनिया को भाईचारे का संदेश देती है....

अब जर्मनी का अलबर्ट खड़ा हुआ, उसने कहा- मैं जो बता रहा हूँ वो... और भी ज्यादा वंडरफुल है.....

एक होटल है, जहाँ पूछा जाता है कि, आप किस देश में सोना पसंद करेंगे? फ्रांस और स्विट्जरलैंड की बॉर्डर के बीच बना होटल अरबेज फ्रांसको सूसी में, यदि आपको रात बिताना है, तो पूछा जाएगा कि, आप किस देश में सोना पसंद करेंगे? होटल में दोनों देशों का बराबर हिस्सा है। इसके सभी पॉइंट्स दो भागों में बँटे हुए हैं।

यहाँ कुछ कमरे ऐसे भी हैं, जिनमें गेस्ट का सिर फ्रांस में होता है, तो पैर स्विट्जरलैंड में। यहाँ का डाइनिंग रूम भी दो देशों में डिवाइड है। ज्यादातर कमरे स्विट्जरलैंड में है और वॉशरूम फ्रांस में। यहाँ दोनों देशों की संस्कृति खूब महकती है। यह भी सद्भावना की एक मिसाल है।

सभी की तालियों को हॉल गूंज उठा।

इस होटल के बनने के पीछे की कहानी यह है कि सन 1862 में फ्रांस स्वीश कान्फ्रेंडरेशन के बीच डिस्प्यूट खत्म हुआ, और समझौता हो गया।

उसमें ला-क्योर गांव को दोनों देशों में बांट दिया गया। तभी वहाँ के बिजनेसमैन को इस ऐतिहासिक जगह पर बिजनेस शुरू करने का आइडिया आया। उसने यहाँ ग्रॉसरी स्टोर शुरू किया। इसके बाद पान्थस नामक व्यक्ति ने इस होटल की शुरूआत की।

अब आई घाना की रीटा। उसने कहा- दुनिया में कुछ अनोखे बॉर्डर भी हैं, जैसे-

अर्जेंटीना और चिली की जो बॉर्डर है, उसे दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप की सबसे लंबी बॉर्डर होने का दर्जा प्राप्त है। **इन देशों ने बॉर्डर के नाम पर ईसा मसीह की एक मूर्ति एंडीज पर्वत पर लगा रखी है, जो अर्जेंटीना और चिली के बीच अधिकृत बॉर्डर का काम करती है। ऐसे में यहाँ हथियारबंद सैनिकों की जरूरत ही नहीं होती।** द रिडिमिर ऑफ द एंडेज के नाम से जानी जाने वाली यह मूर्ति दोनों देशों के बीच शान्ति का प्रतीक मानी जाती है।

तालियों के बाद स्वीडन की नताशा खड़ी होकर बोली-

इटली और स्विट्जरलैंड सीमा पर 4054 मीटर ऊँची चोटी है, जो दोनों देशों को अलग करती है। इस चोटी को सिंगलफुटर या पोटेनियर कहते हैं। दोनों देशों के बीच इस चोटी पर एक झोपड़ी बनाई गई है, जिसका नाम मारगृहितका रखा गया है। झोपड़ी का निर्माण सन 1879 में किया गया था। **मजे की बात यह है कि, दोनों ओर के चढ़ाई करने वाले लोग, इस झोपड़ी में रुककर आराम कर सकते हैं। यह झोपड़ी दोनों देशों के बीच सद्‌भावना का प्रतीक है....**

तालियाँ सभी को मिल रही थी।

अब केरालीन जो पोलैण्ड की थी, बोली-

पोलैण्ड और यूक्रेन के बीच एक मछली की विशाल कलाकृति बनाई गई है, जो आधी पोलैण्ड में है और आधी यूक्रेन में। मछली की आधी कलाकृति दोनों देशों को जोड़कर, एक होने का संदेश देती है। बात छोटी लगती है, लेकिन संदेश बहुत बड़ा छुपा है।

अब वांग शी खड़ा हुआ, उसने कहा-

चीन और मंगोलिया के बीच तारों की कोई फेंसिंग या बॉर्डर नहीं है। दो डायनासोर एक दूसरे को किस करते हुए खड़े हुए हैं। इसमें यह संदेश

है कि, क्षेत्र बंटवारा का जरूर हुआ है, लेकिन दिलों का नहीं...

और... एक बॉर्डर और **दुनिया का सबसे अजीब बॉर्डर है....**

जब आप उत्तरकोरिया से चलना शुरू करेंगे। एक नदी पार करेंगे। तो केवल 800 मीटर चलने के बाद आप, चीन से होकर गुजरेंगे... और रूस में पहुँच जाएँगे... है ना कमाल का रोमांच....!

इसी तरह **नॉर्थ कोरिया और साउथ कोरिया** के बीच बहुत ज्यादा मनमुटाव है, फिर भी सिर्फ एक बॉर्डर पट्टी ही दोनों देशों को अलग करती है। हालाँकि यहाँ एक दूसरे देश में जाना बिल्कुल भी संभव नहीं है। पानमुंजोम नामक गाँव में इन दोनों देशों को केवल, लकड़ी का एक पट्टा ही अलग करता है।

अब रोमानिया के छात्र डेनियल ने कहा.....

ऑस्ट्रिया, हंगरी और स्लोवाकिया में भी ऐसा ही कुछ है। **स्लोवाकिया की राजधानी ब्रतिस्लावा दुनिया का एकमात्र ऐसा शहर है, जहाँ तीन देशों की सीमाएँ एक साथ आकर मिलती हैं।** बॉर्डर की खास बात यह है, कि इसे सिर्फ एक ट्रायंगल (त्रिकोण) जैसे पत्थर से तीनों देशों की स्थिति को बताया गया है। यहाँ एक पिकनिक स्पॉट जैसा टेबल है... **इस टेबल पर तीन लोग बैठते हैं, तो वे तीनों एक ही स्थान पर, एक ही समय में, तीन अलग-अलग देशों में बैठे होते हैं...।**

फिर तालियाँ बजी....

सारा तन्जानिया से है, वह उठकर बोली....

तीन देशों तक तो ठीक है, **क्या आप एक ही समय में चार अलग-अलग देशों में मौजूद हो सकते हैं? नहीं ना... लेकिन क्वांट्री पॉइंट पर यह मुमकिन है...** यह बड़ा ही अनोखा बॉर्डर पॉइंट है, यहाँ पर चार देशों की सीमाएँ आकर मिलती हैं। ये देश हैं- **जिंबाब्वे, जंबिया, नामीबिया और बोत्ससाना।**

तालियाँ रुकने के बाद इटली की छात्रा नतालिया बोली-

अमेरिका का **डर्बीलाइन** और **कनाडा** का कैंस एक ही कस्बा है, इस कस्बे को सड़क के बीच की एक लाइन अलग करती है। यहाँ कई इमारतों को भी लाइन ने आधा-आधा बाँट दिया है। इस बॉर्डर पर रहने वाले लोग दो अलग-अलग तरह की भाषा भी बोलते हैं, अमेरिकन इंग्लिश और कैनेडियन फ्रेंच।

दोनों संस्कृतियों का यह मिलाजुला रूप आपस सद्भावना का संदेश देता है।

एक और बॉर्डर है **पुर्तगाल और स्पेन** की... इन दोनों के बीच की बॉर्डर थोड़ी अलग है। दोनों देशों की बॉर्डर एक नदी है, उसके ऊपर एक झिप बना हुआ है, इससे स्पेन से पुर्तगाल जाया जा सकता है। 150 मीटर चौड़ी गार्डियाना नदी के ऊपर बने इस झिप के द्वारा, **1 मिनट में स्पेन से पुर्तगाल की यात्रा की जा सकती है, फिर बोट के द्वारा आप वापस स्पेन आ सकते हैं।**

नाइजीरिया की ब्लेसिंग खड़ी हुई और बोली....

बोत्सनिया और क्रोएशिया, इन दोनों देशों के बीच की सीमा पर कई इमारतें बनी हुई हैं। इमारतों को बॉर्डर अलग करती है, एक ही इमारत में दो रंग और चिन्ह, दो देशों की संस्कृति के रंग बिखरते हैं।

इसी तरह **नार्वे और स्वीडन** को एक छोटी सी बर्फ से ढँकी हुई पगडंडी अलग करती है, जहाँ लोग स्नोबाइक चलाने का लुत्फ उठाते हैं।

अब कीनिया का छात्र ओजोरोक खड़ा हुआ और बोला- दुनिया का ऐसा एरिया, जिसे कोई देश नहीं लेना चाहता.... ये है, **वीरतवील**।

इस दुनिया में ऐसी भी जमीन मौजूद है, जिसे कोई देश अपने में शामिल करना नहीं चाहता...। इजिप्ट और सूडान के बीच, बीर तवील नाम का एक ऐसा ही एरिया है, जो करीब 2060 वर्ग किलोमीटर तक फैला है, लेकिन दोनों देश इस एरिया को अपने कब्जे में रखना नहीं चाहते, क्योंकि यह पूरी तरह से वीरान एरिया है, जो रेत और पत्थरों से भरा पड़ा है। नो क्लेम लैंड होने के कारण इसमें आप खुद का एक देश बना सकते हैं। एक अमेरिकी नागरिक ने तो यहाँ आकर, अपना खुद का देश घोषित कर, अपनी बेटी को उस देश की राजकुमारी बना दिया था। अफसोस कि उसे मान्यता देने वाला कोई नहीं था।

फिर तालियाँ बजीं...।

अब रोमानिया के डेनियल ने कहा....

जर्मनी और पोलैण्ड के बीच लगता ही नहीं कि, यह इंटरनेशनल बॉर्डर है। कहीं पिलर, तो कहीं सड़कों के बीच एक सफेद पट्टी बनी हुई है। एक कदम जर्मनी में तो दूसरा पोलैण्ड में। यहाँ पैदल सफर करने का अलग ही रोमांच है।

मैक्सिको का एकमात्र छात्र रिचर्ड था, उसने खड़े होकर कहा कि मैं आपको दुनिया का एक बहुत बड़ा वंडर बताता हूं...

ये दुनिया की सबसे वन्डरफुल जगह है... दो द्वीप के बीच की दूरी महज 4 कि.मी. से भी कम, लेकिन दोनों में समय का अन्तर 23 घण्टे का है।

यह है उत्तरी प्रशांत महासागर में स्थित छोटा डायोमिड द्वीप, जो अमेरिका का है और दूसरा बड़ा डायोमिड रूस का। छोटे द्वीप पर एक गाँव बसा है, जिसमें 110 लोग रहते हैं और बड़ा द्वीप निर्जन है। आप छोटे द्वीप से अगर शनिवार शाम 6 बजे चलते हैं, आधे घण्टे में बड़े डायोमिड पहुँच जाएँगे, लेकिन उस समय इस द्वीप पर रविवार के शाम 5 बज रहे होंगे। है ना वन्डरफुल....

अब अवि एक बार फिर खड़ा होकर बोला - हमारे इंडिया में तीन रेलवे स्टेशन ऐसे हैं, जो दो-दो स्टेट में बँटे हुए हैं। भवानी मंडी रेलवे स्टेशन पर जो ट्रेन आकर रुकती है, उसका इंजन राजस्थान में होता है और ट्रेन का पिछला हिस्सा मध्यप्रदेश में। इसी तरह इस स्टेशन पर कई जगह, राज्यों में बँटी हुई हैं।

एक है, नवापुर स्टेशन। यहाँ भी ट्रेन दो राज्यों में खड़ी होती है। यहाँ एक यात्री बैंच लगी है। इसपर जब दो यात्री बैठते हैं, तो एक महाराष्ट्र में होता है और दूसरा गुजरात में।

बिहार और झारखण्ड के बीच दिलवा रेलवे स्टेशन है। इसमें गया से आने वाले यात्री उतरते हैं, तो बिहार में होंगे, और धनबाद से आने वाले यात्री उतरेंगे तो, झारखण्ड में होंगे। स्टेशन पर पाँच कदम चलते ही स्टेट बदल जाते हैं।

तालियों के बीच हिमानी खड़ी हुई और बोली- विपरीत हालातों में भी, हमसब ऐसे प्रोग्राम कर पा रहे हैं। ये आप सब की जिंदादिली का सबूत है। आज का यह मजेदार प्रोग्राम यहीं समाप्त होता है।

इट वॉज़ रियली ए ग्रेट एक्सपीरियंस। द इंफॉर्मेशन वॉज़ यूनिक एण्ड वैल्युबल। थैंक यू फॉर वंडरफुल इवेंट।

थोड़ी ही देर सब अपने-अपने रूम में चले जाते हैं।

मैं समय हूँ... !
यह ध्यान रहे, पुस्तक के बहाने... तू मुझे ही पढ़ रहा है...

ऐसा भी हो सकता है... ?

जैसे ही हिमानी की नजर घड़ी पर पड़ी। 6 बजकर 20 मिनट हो चुके थे। फिर उसने जया और सायना के बेड को देखा, वह सो रही थी। हिमानी बालों को ठीक करते हुए उठी और रूम की खिड़की खोल दी। उसने शहर के दृश्य को देखा, जो धुंध में डूबा हुआ था। फिर उसकी नजर आकाश की ओर उठी और वह उसकी गहराइयों में खो गई... मन ही मन सोच रही, जैसे आकाश से कह रही हो... - पृथ्वी पर युद्ध का यह विकराल रूप तो तुम भी देख रहे होंगे... उजड़े हुए घर... बिछड़ते हुए परिवार.... लाचार बूढ़े.... बिलखते हुए बच्चे... सड़कों पर पड़ी हुई लाशें.... बिखरे हुए जिस्म के चीथड़े... यह सब देखकर तुम्हें कैसा लग रहा होगा? इन्सान को तुमने कितनी शक्तियों से नवाजा है। क्या शान्ति की शक्ति और नहीं दे सकते...? यदि नहीं, तो फिर इतनी शक्ति किस काम की....?

अचानक जया की आवाज से हिमानी का ध्यान भंग हुआ

- बस हो गया हिमू... सात बजकर तीस मिनट हो चुके हैं.... अब तैयार हो जा....

सायना बोल उठी- आकाश बहुत दूर है महारानी... अब जमीन पर आजा.....

हिमानी ने चिढ़कर दोनों को एक बार देखा। जया फिर बोली- हिमू तू रोज आकाश को देखकर क्या सोचती रहती है?

अब सायना झट से बोली- **यही कि, मेरा साजन एक दिन घोड़े पर बैठकर आएगा... बादलों की गड़गड़ाहट और कड़कती बिजलियों के संगीत के साथ... तारों की बारात लेकर... फिर पंख वाले घोड़े पर बिठाकर मुझे ले जाएगा....**

यह सुनकर हिमानी शर्म से लाल हो गयी, और... बगैर कुछ कहे बाथरूम की ओर चली गयी...

अब जया ने सायना को डाँटते हुए कहा- सिनू तू ढंग से बोला कर... हीमू नाराज हो गयी ना।

सायना भी चिढ़कर बोली- अरे यार और कौन सा ढंग लाऊँ...?

जया बोली- तेरी चोटी से अक्कल निकालकर थोड़ी डिटरजेंट से वॉश कर ले....

- क्या बोली तू..? फिर से बोल तो...

जया फिर हँसते हुए बोली- तेरी अक्कल को डिटरजेंट की जरूरत है....

सुनकर सायना ने गुस्से में वॉटर बॉटल उठाई और उसपर लपकी, लेकिन जया दौड़कर कमरे के बाहर हो गयी....

आज शाम के प्रोग्राम में स्वेतलाना मैडम को अपना परफॉर्म करना था। सबको उत्सुकता थी, कि मैडम आज क्या प्रस्तुत करेंगी? शाम के छः बज रहे थे, अतः सब इकट्ठे होकर बैठ चुके हैं। स्वेतलाना मैडम खड़े होकर प्रोग्राम शुरू करती हैं, उनके हाथ में एक डायरी भी है। वे बोलना शुरू करती हैं-

रिस्पेक्टेड फॉदर, एन्ड डियर सन...

आज मैं आपको एक काल्पनिक, लेकिन यूनिक सॉल्यूशन रखने जा रही हूँ... अगर ये सच होता है, तो दुनिया को इसके बहुत ज्यादा फायदे मिल सकते हैं... मैंने बड़ी मेहनत से इस योजना को तैयार किया है।

युद्ध और सीमा समस्या को समाप्त करना है।

बहुत आवश्यक हो गया है। पूरे विश्व में इंसानियत खत्म होती जा रही है। हथियारों की होड़ चरम पर है। हथियार महँगे और आदमी सस्ता होता जा रहा है। ऊपर से युद्ध और सीमा की समस्या विश्व को नष्ट करने पर उतारू है।

दुनिया में 80% युद्ध सीमाओं के कारण होते हैं। यदि सीमा की समस्या साल्व कर ली जाए, तो युद्धों सहित कई समस्याओं पर कन्ट्रोल किया जा सकता है।

सारी दुनिया में युद्ध की जड़ें इंटरनेशनल बॉर्डर्स हैं।

मेरी स्कीम है, अगर... इंटरनेशनल बॉर्डर की सुरक्षा यदि यू.एन. ओ. करे... तो युद्धों को रोका जा सकता है।

सबसे बड़ी बीमारी ही सीमा है.... दुनिया की अंतर्राष्ट्रीय बॉर्डर लावारिस की तरह पड़ी हैं, और फिर सबकी सुरक्षा एक ही पॉवर कर रही हो, तो संप्रभुता का किसी को खतरा भी नहीं हो सकता।

सुनने में यह थोड़ा ऑड लगता है, कि किसी देश की बाहरी सीमा की सुरक्षा, संयुक्त राष्ट्रसंघ क्यों करे? जबकि, हर देश अपनी सुरक्षा खुद कर ही रहा है। अपनी हिफाजत खुद करने से अच्छा और क्या हो सकता है?

यह बात 100% सही है, लेकिन इसमें कुछ बड़ी कमियाँ हैं, जो युद्ध सहित कई समस्या को जन्म देती हैं जैसे-

1- अभी की व्यवस्था में बड़े देशों की महत्वाकांक्षा का शिकार छोटे देश होते हैं। छोटे और कमजोर देशों के अस्तित्व पर हमेशा खतरा बना रहता है। समस्या और युद्ध यहीं से जन्म लेते हैं।

2- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर मालिक की मौजूदगी नहीं है।

3- एक अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर पर, दोनों ही देश अपनी-अपनी साइड, सोल्जर लगाकर सुरक्षा करते हैं। बॉर्डर एक है और उसकी सुरक्षा दोनों तरफ। पूरे वर्ल्ड में हर बॉर्डर पर दो गुना खर्च हो रहा है। यही सबसे बड़ी बीमारी है... कैसे? आइए! जानते हैं...

माना कि दो देश हैं, ए और बी, इनके बीच एक बॉर्डर है। इसकी सुरक्षा में, देश ए के एक लाख सोल्जर लगे हैं, तो लगभग एक लाख सोल्जर देश बी भी लगाएगा... रेखा एक है, लेकिन उसके दोनों तरफ, एक-एक लाख सैनिक

लगे हैं। कुल मिलाकर दो लाख सोल्जर। इसके साथ ही हथियारों का जखीरा भी। यानी एक बॉर्डर के दोनों छोर पर सोल्जर्स और वेपन्स। यानी डबल खर्च।

कल्पना करें कि, इस बॉर्डर की हिफाजत अगर यू.एन.ओ. करे तो... वह सीमा के सेन्टर में सुरक्षा करेगा, दोनों कार्नर पर नहीं। उसे सेंटर में केवल एक लाख सैनिक ही रखना पड़ेंगे। यानी आधे सोल्जर। इस तरह सैनिक और हथियारों की 50% बचत हो सकती है। सोल्जर और वेपन्स का खर्च भी आधा। इसके साथ ही सबको समान रूप से सुरक्षा भी मिलती है। फिर अपने झोन के अंदर भी हर देश सुरक्षा करेंगे ही।

अब बड़ा देश भी छोटे देश को आसानी से निगल नहीं सकता। न ही दूसरे देश पर आक्रमण कर सकता है, क्योंकि बीच में इंटरनेशनल पॉवर है। हर देश की संप्रभुता भी कायम रहेगी।

यदि युद्ध और सीमा समस्या को समाप्त करना है तो हमको कोई ऐसा नया फॉर्मूला ही ढूँढना ही पड़ेगा, क्योंकि हमारे ट्रेडिशनल तरीके सदियों से फेल हो रहे हैं। ये तरीके युद्धों को रोकने में नाकाम रहे हैं।

यदि यू.एन.ओ. सीमा की सुरक्षा करे, तो हर देश की हिफाजत आधे खर्च में ही हो जाएगी, और वर्ल्ड से युद्ध और गरीबी दूर हो सकती है। यह व्यक्तिगत सुरक्षा से भी अधिक कारगर हो सकती है।

देशों के बीच की इंटरनेशनल बॉर्डर पर दोनों ओर रेड झोन एरिया बनाया जा सकता है। हर देश को अपनी एक्चुअल बॉर्डर पर फोर्स रखने का अधिकार भी हो, जिससे वह और भी सेफ हो सके। बस! इंटरनेशनल बॉर्डर पर यू.एन.ओ. के गार्ड तैनात रहें। इससे सभी देशों के बीच लड़ने की वजह ही खत्म हो जाती है। इसका सालाना खर्च उन देशों से ही लिया जा सकता है।

इतना कहकर स्वेतलाना मैडम बैठ गयीं। बैठे हुए सभी स्टूडेंट्स ने तालियाँ बजाकर मैडम का समर्थन किया।

अब फॉदर खड़े हुए, उन्होंने कहा- **वर्ल्ड में जितनी भी प्रोग्रेस दिखा-ई देती है, वह सब पहले कल्पना में ही उतरी हैं, उसके बाद ही वह, रीयलिटी बनकर हमारे सामने आयीं है। मिसेस स्वेतलाना ने जो कॉन्सेप्ट रखा है, वह काल्पनिक जरूर है, लेकिन बहुत ही पॉवरफुल और प्रेक्टिकली पॉसिबल भी है। इन फ्यूचर, ऐसा हो भी सकता है।**

अगर दुनिया इस कॉन्सेप्ट पर विचार करे, तो वाकई युद्ध सहित कई समस्याओं से उसे निजात मिल सकती है। क्या आपमें से इस पर कोई बोलना चाहता है?

इसपर हिमानी खड़ी होकर बोली- बहुत ही सुन्दर और अनूठा कॉन्सेप्ट है। आज की व्यवस्था में, केवल ताकतवर देश ही सुरक्षित है। बाकी सब अपने अस्तित्व को बचाने का संघर्ष कर रहे हैं। यह स्कीम उन सब देशों के लिए सेफ्टी गार्ड बन सकती है। वह फिर बोली.. इसके इतने फायदे हो सकते हैं -

01. दुनिया का रक्षा बजट 50 प्रतिशत कम हो सकता है। इससे दुनिया की गरीबी दूर की जा सकती है।

02. सीमा विवाद सहित कई समस्याओं का अन्त हो सकता है।

03. युद्धों को समाप्त किया जा सकता है।

04. शान्त एवं भयमुक्त विश्व की स्थापना हो सकती है।

05. विश्व को भावी विनाश से बचाया जा सकता है।

06. पूरा विश्व एक परिवार हो सकता है।

07. अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का उन्मूलन हो सकता है।

08. वसुधैव कुटुम्बकम् का सपना साकार हो सकता है।

अब जया खड़ी हुई और बोली- संयुक्त राष्ट्रसंघ अंतर्राष्ट्रीय सेना को बढ़ाकर सीमाओं की सुरक्षा कर सकता है। हर देश से इसका वार्षिक शुल्क भी ले सकते हैं।

यह योजना बहुत ही चमत्कारिक है। धीरे-धीरे कुछ देशों में इसका प्रयोग करके भी रिजल्ट देखा जा सकता है। यू.एन.ओ. एक अंतरराष्ट्रीय सीमा सुरक्षा परिषद बनाकर, उसे यह काम सौंप सकता है। इससे विश्व का हर देश, पूरी तरह सुरक्षित होकर युद्ध से मुक्ति पा सकता है।

कार्यक्रम के बीच वांग शी नो वॉर के पोस्टर लेकर आ गया। इन पोस्टरों को हार्ड शीट पर चिपकाकर तख्तियाँ बनाई जाना थी। कार्यक्रम भी लगभग समाप्ति की ओर था, अतः कार्यक्रम बन्द कर, सभी स्टूडेंट्स तख़्तियाँ बनाने के काम में जुट गए।

सीमाओं के समाधान

परिस्थिति हर दिन नया मोड़ ले रही है। कभी खतरा बढ़ जाता है, तो कभी स्थिति सम्भल जाती। हर समय की बदलती परिस्थितियों में कभी बंकर में रहना पड़ता है, तो कभी अपने अपने रूम में। स्टूडेंट्स कम होने से अब सभी को ग्राउंड फ्लोर पर ही रूम मिल चुके थे। यहाँ से बंकर तक पहुँचने में केवल तीन मिनट ही लगते हैं।

दिनभर के काम से निपटकर आज फिर शाम को सब सेंट्रल हॉल में इकट्ठा हुए हैं।

हिमानी, जया, सायना, हर्ष, भारत, मिलकर एक नयी प्रस्तुति देने जा रहे हैं। वांग शी और फिरोज उसकी एक टेलीफिल्म बनाने की तैयारी कर रहे हैं। सब आ चुके हैं। सारी तैयारी हो चुकी है। हिमानी तथा भारत ने प्रोग्राम की शुरूआत की। वे दोनों मंच पर आए, फिर हिमानी बोली...

गुड़ इवनिंग डियर फ्रेंडस... आज हम एक खास प्रोग्राम आपके लिए लेकर आए हैं।

इंटरनेशनल बॉर्डर्स के सॉल्यूशन्स.... आप कहेंगे कि, इतने संकट का वक्त चल रहा है, इसमें बॉर्डर कहाँ से आ गयी.... दोस्तों, दुनिया जिन युद्धों के संकट से गुजर रही है... और हम जिस समस्या में फसे हैं.... उसकी सबसे बड़ी, बीमारी की जड़ बॉर्डर ही है। इसलिए ये विषय बेहद खास है।

विश्व की सबसे गम्भीर समस्या युद्ध है, और युद्ध सीमाओं से पैदा होते हैं, इन्हीं सीमाओं में मनुष्य की किस्मत बंद है। पहले मनुष्य रेखाओं

की किस्मत लिखता है...और फिर रेखाएँ मनुष्य की। इन रेखाओं पर दिन-रात बारूद बरसता है। आदमी का खून बहता है, और अकाल मौतें होती हैं। विडंबना ये है कि, लाखों खोजें करने वाला इंसान, इंटरनेशनल बॉर्डर को शांत की खोज नहीं पाया।

अब भारत बोला- **मनुष्य को शान्ति से जीना है, तो पहले युद्ध को खत्म करना होगा... और युद्ध को खत्म करना है, तो पहले सीमाओं की समस्याएँ खत्म करना होगी।**

ट्रेडिशनल तरीके युद्ध खत्म नहीं कर सकते... इसके लिए बिल्कुल यूनिक तरीके ढूँढना होंगे।

वैसे, युद्धों को रोकना बड़ा कठिन है, लेकिन असम्भव भी नहीं। सीमाओं पर बुनियादी बदलाव करके युद्धों को भी रोका जा सकता है।

हिमानी - तो आज हम एक नुक्कड़ नाटक के जरिये, वर्ल्ड की इस लार्जेस्ट प्रॉब्लम, पर परफार्म करने जा रहे हैं...। .इसमें हिस्सा लेने वाले सदस्य हैं। जया, ईशा, सायना, भारत, हर्ष, और अवि। हम जो प्रस्तुति देने जा रहे हैं, उसकी वांग शी और फिरोज, एक टेलीफिल्म भी बना रहे हैं। मुझे उम्मीद है, कि हमारे अभियान में यह फिल्म सफल होगी।

....इसमें भारत और मैं, कॉमेंट्री कर रहे हैं, बाकी किरदार अदाकारी...

तो शुरू करते हैं, आज का यह खास प्रोग्राम...

सबसे पहले हम जानते हैं कि, दुनिया की इंटरनेशनल बॉर्डर का हाल क्या है...

मंच पर एक दृश्य उभरता है। एक लड़की को कुछ लोग पकड़ने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन वह लड़की उनसे बचकर इधर से उधर भाग रही है।

अब हिमानी की आवाज स्पीकर पर गूँजती है।

स्टेज पर जो यह लड़की है, बेहाल होकर इधर से उधर भाग रही है... चारों तरफ लोग हैं, जो उसे झपटने की कोशिश कर रहें हैं। कभी कोई उसे पकड़कर दबोच लेता है, तो कभी दूसरा झपट लेता है। एक हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचता है, तो दूसरा अपनी ओर। इस लड़की का नाम सीमा है। इसे कहीं भी चैन नहीं मिल रहा।

ठीक यही कहानी दुनिया की अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं की है। हर देश उसका

मालिक बनना चाहता है, उसे छीनकर अपनी जागीर बनाना चाहता है।

सोचो!, ऐसी अशान्त और बेहाल सीमाओं के रहते, दुनिया में शान्ति हो सकती है?

विश्व में शान्ति चहिए, तो पहले सीमाओं को शान्त करना पड़ेगा। इसकी शान्ति के बिना मनुष्य शान्त नहीं हो सकता...

अब अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं का एक दृश्य और देखिए कि यह वर्तमान में कैसी हैं...

और फिर, लाइट बन्द हो जाती है, मंच पर अंधेरा छा जाता है। कुछ देर के बाद धीरे-धीरे प्रकाश उभरता है। दृश्य शुरू होता है। मंचपर लगभग ढाई फीट ऊँची रस्सी बँधी दिखाई देती है। रस्सी के दोनों दोनों तरफ कई सैनिक हैं, जो रस्सी को आगे धकाने के लिए जोर लगा रहे हैं.. यही क्रिया, विपरीत दिशा से भी हो रही है। पूरे मंच पर यह रस्साकसी चल रही है। रस्सी थोड़ी आगे जाकर फिर पीछे आ जाती है, क्योंकि दोनों तरफ से जोर लग रहा है। इसी कशमकश में सैनिक लड़ाई भी करने लगते हैं....
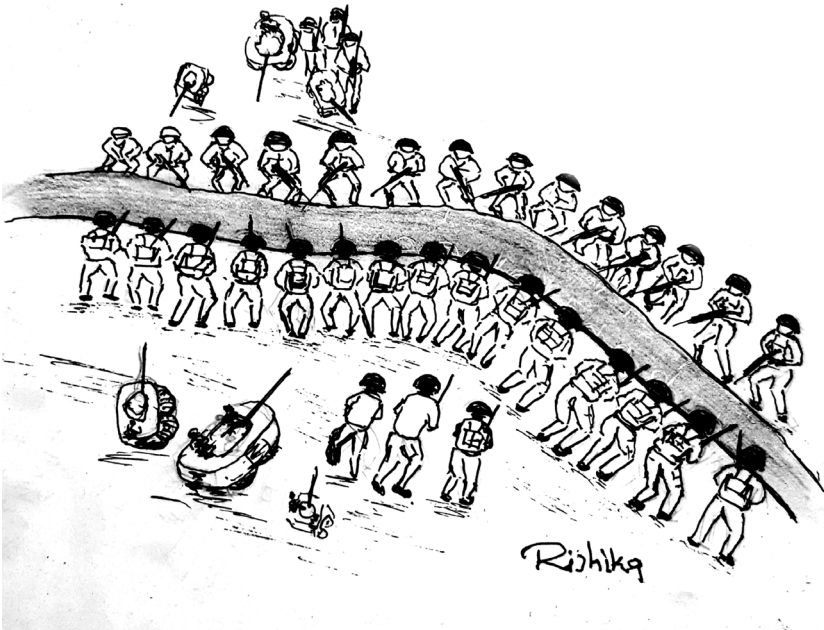
एंकर की आवाज गूँजती है....

ये रस्सियाँ, जो दिखाई दे रही हैं, ये हमारी दुनिया की इंटरनेशनल बॉर्डर्स हैं... इसके दोनों तरफ देश हैं, ज्यादातर देश, बॉर्डर को आगे धकाकर अपनी सीमा बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं...दोनों तरफ से जोर आजमाइश चल रही है। ऐसे में कमजोर देश शिकार होने से नहीं बच सकता....देखिए कैसी हाथापाई हो रही है।

ये हमारी दुनिया की इंटरनेशनल बॉर्डर का हाल है...

भारत - दुनिया की ये स्थिति क्यों है..?

हिमानी- क्योंकि, इंटरनेशनल बॉर्डर पर कोई मालिक नहीं है।

दो देशों के बीच, जो सीमा है, वह अंतर्राष्ट्रीय सीमा है। इनको ध्यान से देखें, तो पाएँगे कि, पूरे विश्व में ये रेखाएँ लावारिस की तरह दिखाई पड़ती हैं। ऐसा लगता है, जैसे इनका कोई वारिस ही नहीं है। इन सीमाओं का अस्तित्व केवल दूसरे देशों के भरोसे पर टिका है। दुनिया की वास्तविक बीमारी यहीं पर है। यही सिचुएशन युद्ध को निरन्तर जन्म देती है।

भारत- तो फिर हमें क्या करना चाहिए?

हिमानी- **सबसे पहले बॉर्डर को अपडेट करके मालिक उपस्थिति सुनिश्चित करना चाहिए....**

भारत- निश्चित रूप से इस बॉर्डर का मालिक, इंटरनेशनल पॉवर ही होगा, यानी, संयुक्त राष्ट्र संघ...?

हिमानी- बिल्कुल...!

अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को अपडेट करके, उसके मालिक (प्रतिनिधि/पर्यवेक्षक) की मौजूदगी रहे। बॉर्डर के आसपास रेडझोन एरिया हो, जिससे वह पूरी सुरक्षित हो जाए। इसके साथ ही बॉर्डर पर सिक्युरिटी पोस्ट बना दिए जाएँ तो, युद्ध की बड़ी बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

यह सब कैसे होगा.. इसे अगला दृश्य आसानी से समझायेगा।

एंकर के बोलने के बाद मंच की लाइट ऑफ हो गयी। अंधेरा छाया रहा। थोड़ी देर के बाद धीरे-धीरे लाइट बढ़ने लगी। दृश्य स्पष्ट होने लगा। जैसे ही प्रकाश बढ़ा, दृश्य साफ हो गया।

सेंटर में एक नयी इंटरनेशनल बॉर्डर की रस्सी दिखाई दे रही है। यह पीले रंग की है। रस्सी को पाँवों के बीच में लेकर एक आदमी खड़ा है। उसके हाथ में एक तख्ती है, जिस पर 'यू.एन.ओ.' लिखा है। पीली रस्सी के कुछ दूरी पर, दोनों तरफ भी रस्सियाँ दिखाई दे रही हैं, ये रस्सियाँ लाल रंग की हैं। इसके बीच में चौकियाँ बनी हैं और कम्प्यूटर से निगरानी की जा रही है।

हिमानी- दोस्तों... आप पहले की इंटरनेशनल बॉर्डर का सीन देख चुके हैं... अब इस नयी बॉर्डर का सीन देखिये...।

हिमानी- **यह इंटरनेशनल बॉर्डर का अपडेट सीन है, जिनपर अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा चौकियाँ बनी हुई दिखाई दे रही हैं। चौकियों से, अंतर्राष्ट्रीय सीमा सुरक्षा गार्ड कम्प्यूटर से बॉर्डर की निगरानी कर रहे हैं। बॉर्डर पर अब मालिक की मौजूदगी दिखाई पड़ रही है। रेड झोन एरिया के बाहर भी सम्बंधित देशों के गार्ड कंप्यूटर्स से निगरानी कर रहे हैं। उनके देश की जनता अब चैन से सो रही है। अब एक-दो सैनिक ही पहरा दे रहे हैं।**

भारत- अब आपको समझ आ गया होगा कि... बॉर्डर पर पहले जो सैनिक लड़ रहे थे... वे अब काफी दूर हो गए हैं। इन, सैनिकों के बीच रेड झोन एरिया है, और इंटरनेशनल बॉर्डर का मालिक भी... अब दोनों ओर के सैनिक शान्त खड़े होकर पहरा दे रहे हैं।

हिमानी- यानी बॉर्डर के बीच मालिक, उसके आसपास रेड झोन एरिया और फिर अपने-अपने देश की सीमा। ये इंटरनेशनल बॉर्डर का बेसिक सॉल्यूशन है...

भारत- इससे कई फायदे हैं, जैसे...

- अब देशों को ज्यादा सैन्य शक्ति की जरूरत नहीं है। कम से कम व्यक्ति, बहुत बड़े क्षेत्र की निगरानी रख सकते हैं।

- पूरी दुनिया का रक्षा बजट 50 प्रतिशत कम हो सकता है। साथ ही प्रत्येक देश की गरीबी दूर हो सकती है।

- सीमा पर किसी भी गड़बड़ी का तत्काल उपचार हो सकता है।

- प्रत्येक देश की सम्प्रभुता ज्यादा संरक्षित हो सकती है।

- इंटरनेशनल बॉर्डर सुरक्षित होने से, अन्य देश के द्वारा अचानक

आक्रमण का डर खत्म हो गया है।

- इससे लगभग 80% युद्धों से छुटकारा मिल सकता है।

हिमानी - **इंटरनेशनल बॉर्डर ठीक करने के साथ ही बॉर्डर मैनेजमेंट को पूरी तरह सही करना बहुत जरूरी है। जैसे यू.एन.ओ. को एक ऐसी मजबूत संस्था बनाना चाहिये, जो केवल इंटरनेशनल बॉर्डर का ही काम देखे, और उसकी सुरक्षा करे। हर बॉर्डर पर यू.एन.ओ. के पर्यवेक्षक हों। इंटरनेशनल सिक्युरिटी गार्ड हों। हर देश में यू.एन.ओ. का एक प्रतिनिधि होना ही चाहिए, जिससे कोई भी समस्या को तत्काल सुलझाया जा सके।**

जैसे-जैसे एंकर की आवाज आ रही थी, उसके हिसाब से कलाकार भी अपना रोल निभाते जा रहे थे। वांग शी की शूटिंग जारी थी....

भविष्य में ऐसी पालिसी भी बनाई जाना चाहिए, जिसमें हर इंटरनेशनल बॉर्डर की सुरक्षा वार्षिक शुल्क लेकर, केवल यू.एन.ओ. के द्वारा हो, और वह हर देश को सिक्युरिटी गारंटी भी दे। ऐसी पॉलिसी सदा सदा के लिए युद्ध को समाप्त कर सकती है।

भारत- दुनिया में कई देश ऐसे भी हैं, जो अपनी सुरक्षा नहीं कर सकते... दुनिया में कुछ ऐसे देश भी हैं, जो सेना नहीं रख सकते... **ऐसे निर्धन व कमजोर देशों के लिए एक सीमा-सुरक्षा का न्यास भी होना चाहिए, जो इनकी सुरक्षा कर सके।**

हिमानी- अड़ियल और जिद्दी देशों के खिलाफ विश्व समाज को एकजुट होकर, उसका सामूहिक बहिष्कार भी करना चाहिए....

जो देश इंटरनेशनल बॉर्डर का उलंघन करे, उसपर भारी जुर्माने का प्रावधान होना चाहिए।

भारत - **इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा महाद्वीपीय पंचायत और न्यायाधिकरण भी होना चाहिए, जिससे क्षेत्र में ही विवादों को आसानी से निपटाया जा सके... विश्व में अभी भी लगभग 125 से अधिक विवाद हैं, जो युद्धों को खत्म नहीं होने देते। अतः जितने भी पुराने विवाद हैं, एक अभियान चलाकर, उन्हें जल्द से जल्द निपटा देना चाहिए...**

हिमानी- **इसके साथ ही वर्ल्ड की टॉप 10 खतरनाक बॉर्डर पर संयुक्त सेना की तैनाती करना चाहिए।** जैसे-33% एक देश की, 33% दूसरे

देश की, और 33% यू.एन.ओ. की संयुक्त सेना। ऐसा करने से स्थिति, युद्ध तक नहीं पहुँचेगी... शान्ति बनी रहेगी।

सुरक्षा परिषद के द्वारा, हर देश में एक शान्ति समिति का निर्माण भी होना चाहिए, जो पड़ोसी देश से हर तीन महीने में अनिवार्य रूप से सद्भाव वार्ता करके, इसकी रिपोर्ट सुरक्षा परिषद को भेजे। हालाँकि इतने बदलाव जल्दी नहीं हो सकते, लेकिन स्टेप बाय स्टेप, इनमें सुधार किया जा सकता है।

भारत- जब तक ये सुधार हों, तब तक कुछ तात्कालिक बदलाव बहुत जरूरी है, जो युद्ध से बचाकर रख सकते हैं जैसे-

- **दो देशों में विवाद होते ही, सुरक्षा परिषद को उसे तत्काल अपने कन्ट्रोल में ले लेना चाहिए।**

- विवाद शुरू होते ही, एक-एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यवेक्षक दोनों देशों में भेजकर विवाद को कंट्रोल करना चाहिए।

- पर्यवेक्षक को दोनों देशों के बीच एक शान्ति समिति का गठन करके समस्या को हल करने का प्रयास करना चाहिए। **यानी किसी भी सूरत में, किसी भी देश का, कोई भी विवाद युद्ध तक न पहुँच पाए। इसके लिए बहुत गम्भीरता से काम लेने की जरूरत है।**

इसके अतिरिक्त भी समस्याओं को हल करने के कई उपाय हैं, जो युद्ध को रोकने में कारगर हो सकते हैं....

पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से बहुत देर तक गूँजता रहा।

फॉदर ने खड़े होकर कहा, इससे अच्छे बॉर्डर के आइडियल सॉल्यूशन नहीं हो सकते। हिमानी के ऑनर में एक बार एक और तालियाँ...

फॉदर ने कहा - विश यू ऑल द वेरी बेस्ट।

इसी के साथ कार्यक्रम समाप्त हो जाता है।

खतरों के खिलाड़ी

मिसाइल व बम के लगातार हमलों से खार्कीव लगभग तबाह हो गया। यह यूक्रेन का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। पूर्वी हिस्से में रूस की सीमा से करीब होने के कारण, खार्कीव पर हमले का असर ज्यादा पड़ा। युद्ध भीषण रूप ले चुका था, इसलिए यहाँ से नागरिकों का पलायन पश्चिम की ओर सबसे ज्यादा हो रहा था।

रात्रि के 12 बजकर 50 मिनट हो रहे थे। वर्ल्ड पीस फोरम की एक यात्री बस, विनित्सा शहर से अभी अभी निकली है। इसमें बच्चे बूढ़े और कुछ महिलाएँ हैं। ये खार्कीव से पलायन करने वाले नागरिक थे, जो विनित्सा शहर में पिछले पाँच दिनों से एक शरणस्थली पर फँसे हुए थे। बस में फोरम के हर्ष सहित रोमानिया का डेनियल तथा जर्मनी का अल्बर्ट मौजूद है। इनका काम शरणार्थियों को पोलैण्ड बॉर्डर तक सुरक्षित पहुँचाने का था। रास्ता बहुत लम्बा था और खतरनाक भी। सबसे ज्यादा खतरा विनित्सा से 30 कि.मी. तक था, क्योंकि इस एरिया में कई स्थानों पर सीधी जंग चल रही थी।

हर्ष और डेनियल साथ ही बैठे थे। हर्ष ने डेनियल से कहा- हमें अब लगभग तीस किलोमीटर का सफर बहुत सावधानी से करना है। डेनियल बोला- हाँ, उसके बाद हम खतरे से बाहर हो जाएँगे, फिर सुबह तक तो हम कीव पहुँच जाएँगे... वहाँ से लवीन और फिर... पोलैण्ड। हर्ष बोला- मैं तो कीव तक ही तुम्हारे साथ हूँ.. लेकिन... तुम्हारा सफर तो बहुत लम्बा है।

डेनियल फिर बोला... हाँ, लेकिन अब इतना लम्बा सफर बोर नहीं

करता... कई बार जाने से, अब हैबिट हो गयी।

डेनियल की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि, बस के अन्दर एक रेड अलर्ट की सूचना जारी हुई -

अटेन्शन प्लीज़... सभी यात्री कृपया ध्यान दें.... हम खतरे की सीमा में आ चुके हैं, इसलिए आप सब सावधान रहें। अपने शरीर को झुकाकर विंडो से नीचे रखें... किसी प्रकार की लाइट ऑन न करें... अगली सूचना मिलने तक अपने आपको सुरक्षित रखें...

सूचना समाप्त होते ही, बस के अंदर की लाइट बन्द कर दी गयी। अब बस की स्पीड भी पहले से काफी तेज हो गयी है। अंधेरे को चीरती हुई, बस दौड़ी चली जा रही थी कि, तभी एक बड़े धमाके की आवाज गूँजी। उस इलाके में शायद कहीं बड़ा ब्लास्ट हुआ था। धमाके के बाद बस और तेज दौड़ने लगी... यात्रियों की धड़कनें तेज हो गयी।

हर्ष ने पीछे बैठे यात्रियों पर नजर दौड़ाई। वह चैक करना चाहता था कि, सब सुरक्षित पोजिशन में हैं, या नहीं... तभी उसे सेन्टर में कॉर्नर की सीट पर एक व्यक्ति खिड़की से ऊपर दिखाई दिया। हर्ष को पहले थोड़ा गुस्सा आया, क्योंकि सूचना जारी होने के बाद भी उस व्यक्ति ने अपना शरीर विंडो से नीचे नहीं किया था।

हर्ष ने इशारे से उस व्यक्ति की पोज़िशन डेनियल को बतायी, और कहा- कैसे लोग हैं, अपनी सेफ्टी का भी ध्यान नहीं है।

डेनियल ने कहा- इनमें से कई यात्री ऐसे होंगे, जो कई दिनों से ठीक से सो नहीं पाये होंगे... उसे शायद नींद लग गयी होगी... वह सूचना नहीं सुन पाया होगा।

और तभी तड़ातड़ कई गोलियों की आवाज गूँजी। आवाज से ऐसा लग रहा था, जैसे बस के आसपास ही गोलियाँ चल रही हों।

हर्ष अलर्ट हो गया। उसके मन में विचार आया कि, उस व्यक्ति को सेफ पोजिशन में करना जरूरी है, वरना गोली लग सकती है, अतः वह घुटनों के बल नीचे झुककर ही, उस व्यक्ति की सीट तक पहुँचा। पास जाकर उसने देखा, वह एक बूढ़ा व्यक्ति था, जो गहरी नींद में सो रहा था। पहले हर्ष ने, हाथ से उसे हल्का सा धकाया और कहा- हेलो सर... लेकिन वह अभी भी गहरी नींद

में था। तब हर्ष खड़ा हुआ, उसने बूढ़े को सम्भाला और नीचे की ओर झुका दिया। हर्ष नीचे झुक भी नहीं पाया था कि, उसके कँधे में गर्म लावे जैसा महसूस हुआ। वह तत्काल नीचे की ओर पसर गया। उसने कन्धे को दूसरे हाथ से टटोला। अब वह समझ चुका था कि, उसे गोली लग चुकी है।

शर्ट गीली हो चुकी थी, शायद खून बह रहा है। हर्ष जल्दी से नीचे ही नीचे घुटनों के बल अपनी सीट तक वापस आया।

आते ही उसने डेनियल को बताया कि, उसे कन्धे में गोली लगी है... यह सुनकर डेनियल के मुँह से निकला- ओह माय गॉड... बहुत बुरा हुआ।

उसने हर्ष का कन्धा सम्भाला और कहा- ब्लड निकल रहा है... शर्ट निकालना होगा... यह कहते ही डेनियल ने उसके शर्ट की बटनों को खींचकर तोड़ दिया। बायीं तरफ की बाँह निकाली, फिर दूसरी तरफ की बाँह को धीरे-धीरे निकालने लगा। उसके दोनों हाथ खून से लथपथ हो चुके थे।

वह बोला- हर्ष चिंता मत कर, हिम्मत रख, यहीं पर लेट जा। मैं मेडिकल बॉक्स लेकर आता हूँ... कुछ नहीं होगा तुझे....

कहते हुए डेनियल घुटनों के बल सरककर चला गया। गोलियों की आवाजें अभी भी गूँज रही थी। बस उसी रफ्तार से अन्धेरे को चीरकर बढ़ती जा रही थी। **हर्ष कन्धे पर हुए गहरे घाव को दबाकर आँख मूँदकर लेट गया। वह सोच रहा था कि, कहीं उस बूढ़े व्यक्ति को तो कुछ नहीं हुआ**

होगा...

खून बहुत बह रहा था, अतः उसने पेंट की जेब से रुमाल निकाला और उस पर रखकर दबा दिया। लगभग तीन मिनट के बाद डेनियल वापस घुटनों के बल आ गया। वह आते ही बोला- पैन हो रहा है ना...? दोस्त चिंता मत कर, तुझे कुछ नहीं होगा... **मैं हूँ ना... डेनियल ने अँधेरे में ही टटोलकर उसके घाव पर दवाई लगायी। कॉटन से उसे पैक किया और कसकर पट्टा बाँध दिया।** हर्ष को बहुत तेज दर्द हुआ लेकिन, उसने महसूस नहीं होने दिया। डेनियल ने बड़ी सावधानी से इजेक्शन भी लगाया और कहा- कुछ ही देर में आराम हो आएगा, तू चिंता मत कर। लगभग पन्द्रह मिनट में हम खतरे से भी बाहर हो जाएँगे... हर्ष कराहते हुए बोला- पहले उस बूढ़े व्यक्ति को देख ले... और जबतक हम खतरे की सीमा से बाहर नहीं हो जाते... तब तक किसी को कुछ नहीं बताना है... डेनियल ने भी धीरे से कहा- हाँ नहीं बताऊँगा... मैं उस आदमी को देखकर आता हूँ.. तू चिंता मत कर। अब आँख मूँदकर सो जा... ओह गॉड! इस एरिया में नेटवर्क भी डिसअपीयर है।

हर्ष ने भी वही किया। आँखें मूँदे वह लेटा रहा। थोड़ी देर के बाद डेनियल वापस आकर बोला- वह आदमी सेफ है। सुनकर हर्ष ने कराहते हुए कहा- थैंक गॉड़... कि उसे कुछ नहीं हुआ।

डेनियल उसका हाथ पकड़कर उसके पास बैठा रहा। वह फोन भी नहीं कर सकता था। न ही मोबाइल की टॉर्च जला सकता था, अतः वह समय का इंतजार करने लगा। **डेनियल ने देखा कि, हर्ष बेहोश हो चुका था... अब उसके माथे पर भी चिंता की लकीरें बढ़ गयी थी।**

सुबह के 8.30 बजे रहे हैं। कीव शहर में आज हल्की सी धूप खिल रही है। हॉस्टल में सभी स्टूडेंट्स सुबह की दिनचर्या में व्यस्त थे, तभी फोरम की बस हॉस्टल के अन्दर परिसर में आकर रुकी।

सबसे पहले डेनियल और अल्बर्ट उतरे। अल्बर्ट ने डिक्की में रखा

फोल्डिंग स्ट्रेचर निकाला। उसे फिक्स किया। तब तक हॉस्टल के दोनों गार्ड पॉल और स्टीफन आ चुके थे।

डेनियल फिर बस में चढ़ा। उसने यात्रियों की मदद से, हर्ष को बाहर उतारा। हर्ष अभी भी बेहोश था। उसका दाहिना हाथ और कँधा, खून से लथपथ था।

अबतक हिमानी सहित कई स्टूडेंट्स बाहर आ गये थे। नेटवर्क की सीमा में आते ही डेनियल ने हिमानी को सारी घटना बता दी थी।

दोनों गार्ड, डेनियल और अलबर्ट ने स्ट्रेचर उठाया और हर्ष को हॉस्टल की ओर लेकर चल दिए।

हिमानी ने कहा- जल्दी से बंकर के मेडिकल वॉर्ड में ले चलो, इतना कहते हुए वह दौड़ते हुए आगे निकल गयी।

बंकर में आते ही हर्ष को वॉर्ड में लिटा दिया। हिमानी, जया, सायना, ओलेशिया और जेनिफर उसे, इमरजेंसी वॉर्ड में ले गयीं। बाहर से पर्दा बन्द कर दिया। सभी डॉक्टर्स थे, अतः उसके इलाज में लग गए।

बाहर सभी इकट्ठे होकर हर्ष के ठीक होने उम्मीद के साथ इंतजार कर रहे थे। लगभग दो घण्टे 25 मिनट के बाद हिमानी बाहर आ गयी।

बाहर सभी उसका इन्तजार कर रहे थे। बाहर आते ही फॉदर ने पूछा अब कैसी तबीयत है? हिमानी ने कहा चिंता की कोई बात नहीं है... गोली निकल चुकी है... अब हर्ष खतरे से बाहर है।

इस पर सभी ने राहत की सांस ली।

मैं समय हूँ...!
तू सरलता से समझ लेगा तो, कष्टों से बच जाएगा... अन्यथा मुझे तो हर तरह से समझाना आता है।

युद्ध, समस्या का हल नहीं

पूरे यूक्रेन में बारूद बरस रहा था। मौत कब, किसको उठा ले, कहा नहीं जा सकता। बारूद की ऐसी बरसात कभी नहीं देखी होगी। शहर के शहर खण्डहर में बदलते जा रहे थे। हर तरफ तबाही और बर्बादी की कहानियाँ मलवे में दफ्न होती जा रही थी।

लोगों का जीवन धीरे-धीरे बंकर में सिमटता जा रहा था। भोजन पानी और गैस जिंदा रहने के लिए ये बहुत जरूरी है। वही कम होता जा रहा है। मायनस डिग्री के टेम्परेचर में गैस के बगैर रहना बड़ा मुश्किल है। बिजली और पानी की सप्लाई बंद हो चुकी है। खाना खत्म हो चला है। फिर भी स्टूडेंट्स का हौसला बुलन्द है। वे घायलों के इलाज में लगे हुए हैं। शाम चार बजे का वक्त है। बंकर में सब बैठे हैं। बहुत देर से खामोशी छाई हुई थी। अतः फॉदर ने खामोशी तोड़ी, उन्होंने कहा- मुझे दुःख है कि, आप लोगों को इस त्रासदी से गुजरना पड़ रहा है। आपके चेहरे पर मायूसी न आये इसलिए हम एक सब्जेक्ट पर चर्चा कर लेते हैं। क्या आप इसके लिये तैयार हैं? इस पर सभी के चेहरे पर उत्साह जागा, उन्होंने कहा, हम तैयार हैं।

फॉदर बोले- गुड.... तो आज हम चर्चा करते हैं..... इतना कहते हुए

फॉदर सोचने लगे, तभी हिमानी बोली- युद्ध पर....

फॉदर ने कहा- करेक्ट.. आज हम युद्ध पर ही चर्चा करते हैं..... तो सबसे पहले मैं ही शुरूआत करता हूँ।

युद्ध कभी भी समस्या का हल नहीं करता, बल्कि कई और समस्याओं को बढ़ा देता है। आप जंग शुरू तो कर सकते हैं, लेकिन खत्म नहीं कर सकते। युद्ध में सदा दोनों ही पक्ष हारते हैं। यह अलग बात है कि, एक पक्ष का रिजल्ट पहले आ जाता है, और दूसरे का कुछ वक्त के बाद। लेकिन हारना दोनों को ही पड़ता है।

अहं का एक युद्ध जीतने के लिए कई युद्ध हारने पड़ते हैं। एक देश को झुकाने के लिए कई देशों के आगे झुकना पड़ता है। उसकी प्रगति के सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं।

इतना कहकर फॉदर चुप हो गए तो हिमानी ने इस विषय को आगे बढ़ाते हुए कहा...

युद्ध मनुष्य की एक मानसिक बीमारी है। किसी स्पेशल सिचुएशन में, अपनी रक्षा करने के लिए युद्ध भी जरूरी हो जाता है। वह मनुष्य की मजबूरी हो सकती है। लेकिन अगर युद्ध अहं के लिए किया जाए। बड़ा बनने के लिए या युद्ध को शतरंज के खेल की तरह खेला जाए, तो ऐसे युद्ध करने वाले मनोरोगी होते हैं। अहं के शिकार होकर उसके टूल बन जाते हैं। जिसके पास ताकत आ जाती है, उसे ये रोग बहुत जल्दी पकड़ लेता है।

जो आदमी रात-दिन युद्ध के विचारों में रहता है। धीरे-धीरे उसका उन्माद बढ़ता जाता है और उसे युद्ध करने में ही मजा आने लगता है।

युद्ध शुरू करना आसान है, खत्म करना आसान नहीं। बड़ी छोटी सी बात पर भी युद्ध किया जा सकता है। सेना तो हर वक्त तैयार ही रहती है। बस उसे हुक्म भर देना है और युद्ध शुरू हो जाता है। सिर्फ एक बार हथगोला छोड़ना है और युद्ध शुरू।

युद्ध आपकी मर्जी से शुरू हो सकता है, लेकिन आपकी मर्जी से खत्म नहीं हो सकता। इसलिए युद्ध शुरू करने से पहले व्यक्ति को दस बार सोचना चाहिए.....

अब जया ने चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहा- **अतीत बताता है कि,**

बहुत छोटी-छोटी बातों पर, बड़े-बड़े युद्ध हो चुके हैं। वास्तव में इसके कारण तो बहुत छोटे होते हैं, लेकिन झूठा अहं इन कारणों को युद्ध तक ले आता है। अहंकारी होना बड़ा सरल है, ऐंठने में जाता क्या है? झूठे अहंकार में तो भिखारी भी ऐंठ जाता है। जिद पर अड़ जाना आसान है, लेकिन समझदारी आसान नहीं है। जिद लाखों निर्दोष लोगों का काल बन जाती है। कितने ही घर उजड़ जाते हैं, जिंदगी तबाह हो जाती है, एक युद्ध कई युद्धों को जन्म देता है।

अब भारत ने बोलना शुरू किया... **एक सामान्य युद्ध का आर्थिक दबाव इतना पड़ता है, कि देश वो दशकों पीछे चला जाता है। देश की सारी शक्ति युद्ध में ही लग जाती है। अन्य क्षेत्रों का विकास ठप्प हो जाता है।** अतः युद्ध हर प्रकार की प्रगति का शत्रु है।

सज्जन और निर्दोष व्यक्ति के लिए युद्ध काल बनकर आता है। इसमें **ज्यादातर निर्दोष ही मारे जाते हैं। महिला, बच्चे और बूढ़ों के लिए यह नर्क से कम नहीं ही होता।** विशेषकर किशोरियों एवं महिलाओं की सुरक्षा बड़ी चुनौती होती है। अवसरवादी व्यापारी एवं तस्करों का व्यापार खुल जाता है। महँगाई चरम पर पहुँच जाती है, जिसकी मार आम आदमी को झेलना पड़ती

है.... कहते हुए भारत चुप हो गया।

अब गोपाल जी ने खड़े होकर अपनी बात रखी.... **वास्तव में युद्ध एक नशा है, जो अतीत से चला आ रहा है। यह नशा हर पुरानी पीढ़ी, नई पीढ़ी को विरासत के रूप में सौंपकर जाती है। मनुष्य जाति का विकास प्रारंभ से इसी असंतुलन के सिद्धांत पर हुआ है।**

अतीत के मनुष्य ने युद्ध और शान्ति में पहले युद्ध को चुना। उसने युद्ध को अपनी शिक्षा, संस्कार और गौरव में शामिल किया। मनुष्य की श्रेष्ठता और पुरुषार्थ को युद्ध का आधार बनाया। हर जीतने वाले को नायक बनाया। फिर चाहे उसने मानवता को रौंदा हो या नदियों की तरह खून बहाया हो या लाखों की जानें ली हों, सारी दुनिया ने उसे हीरो बनाया। इसलिए हीरो बनने की यह लालसा हर आदमी के मन में पैदा होती है।

बहुत गहरे में शिक्षा, संस्कार और वातावरण युद्ध आसपास ही होता है। इसलिये समाज या तो युद्ध करता है या युद्ध के लिए तैयारी करता है। यही कारण है कि आदमी युद्ध को छोड़ नहीं पाता। वह वीरता के इतिहास को सँजोकर भी रखता है।

फॉदर ने खड़े होकर कहा...

समाज ऐसी कई कहानियों, कहावतों को सहेजकर कर गर्वित होता है, जिनसे पीढ़ियाँ युद्ध के लिए तैयार हो। वर्तमान में ही चल रही कुछ कहावतों को ही देख लें, तो स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। जैसे इस कहावत को ही लें....

युद्ध में सब जायज है... यह कहावत युद्ध में हर तरह की अनैतिकता को बढ़ावा देती है। हर युवा पीढ़ी के मन में युद्ध का घर करती है। मनुष्य को युद्धखोर बनाती है और उन्हें अनैतिक रूप से जीत के लिए प्रेरित करती है। **समाज ने कभी ऐसी कहावत को बढ़ावा नहीं दिया कि, शान्ति के लिए सब जायज है।**

यदि शान्ति चाहिए, तो युद्ध के लिए तैयार रहो– यह रोमन कहावत युवा पीढ़ी को अन्धा बनाकर युद्ध में धकेलती है। **यह कहावत युवा पीढ़ी के मन में सीधे युद्ध के बीज बोती है।** ऐसी नकारात्मक कहावतें हिंसा को बढ़-ावा देती हैं। कई पीढ़ियों से यह कहावत चली आ रही है। पता नहीं ऐसी कहावतों ने कितने युद्धों को जन्म दिया होगा। वास्तव में होना तो यह चाहिए

कि- शान्ति चाहिए, तो शान्ति के लिए तैयार रहो।

अब सायना खड़ी हुई और बोली... **जो जीता वही सिकन्दर** यह कहावत भी युद्ध के लिए अंधा बनाती है। और युद्ध की ओर धकेलती है। सिकन्दर ने युद्ध करके लगभग विश्व का पाँच प्रतिशत हिस्सा जीत लिया था। यह जीत करोड़ों निर्दोष लोगों की जान लेकर हासिल की। **अब अगर सिकन्दर को ग्रेट हीरो माना जाता है, तो नयी पीढ़ी उसी के पदचिन्हों पर चलेगी।**

बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, सुनने में यह कहावत बिल्कुल फैक्ट लगती है, लेकिन यह पूरा सच नहीं है। वास्तव में बड़ी मछली छोटी मछली को तबतक नहीं खा सकती, जबतक वह उसके मुँह तक न जाये। **छोटी मछली, बड़ी मछली के मुँह तक जाकर खुद उसका चारा बन जाती है।** यह कहावत भी युवा पीढ़ी को भ्रमित करती है। शक्तिशाली के अहं को बढ़ावा देती है।

हिमानी ने दूसरी बार खड़े होकर कहा.... **जिसकी लाठी, उसकी भैंस...** ऐसी कहावतें उपद्रवी लोगों का नैतिक बल बढ़ती है। साथ ही मानवता का गला घोटती हैं। अन्याय को बढ़ावा देती है। **इस प्रकार की कहावतें समाज के लिए बड़ी घातक होती हैं। क्योंकि यह हर अनैतिक व्यक्ति को सही होने का प्रमाण देती हैं।**

दुनिया में थोड़ी बहुत शान्ति धार्मिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में बची थी, लेकिन दोनों ही क्षेत्रों पर राजनीति का अधिपत्य हो गया। अतः इन क्षेत्रों का स्वरूप भी दूषित हो गया। मनुष्य समाज आदिकाल से सारी शक्तियाँ लड़ने वाले लोगों को ही सौंपता रहा है। वह बात तो शान्ति की ही करता है, किन्तु उसका वास्तविक समर्थन लड़ने वालों के पक्ष में रहा है। जबतक समाज में ऐसी नकारात्मक कहावतें जिंदा रहेंगी, युद्धों को जन्म देती रहेंगी। और तबतक शान्ति की कल्पना करना बेमानी होगी। मनुष्य को अगर शान्ति चाहिए, तो पहले उसे स्वयं को ही शान्त होना पड़ेगा।

यह चर्चा चल ही रही थी, कि फिर खतरे का सायरन बज उठा.... इसका अर्थ यह हुआ कि अटैक होने वाला है.... अतः सभी सांस रोककर बैठ गए।

युद्ध रोकने के उपाय

युद्ध की विनाशलीला देखकर हिमानी बहुत दुःखी हो रही थी। मिसाइल, रॉकेट, और तोप के गोले पटाखों की तरह छोड़े जा रहे थे। वहीं नाटो के देश मिलकर यूक्रेन की मदद कर रहे थे। इससे रूस और भड़ककर हमले तेज कर रहा था। **बारूद का यह खेल कहाँ जाकर रुकेगा, कहना मुश्किल है। इंसान, इंसान नहीं भेड़ बकरी की तरह मारा जा रहा है। बड़ी संख्या में लोग मर रहे थे। सड़क पर लाशें पड़ी हुई थीं, जिन्हें सम्भालना मुश्किल हो रहा था। इन्सान, युद्ध का पीछा नहीं छोड़ता और युद्ध, इन्सान का...।**

पिछले 3 दिनों से हिमानी युद्ध पर ही विचार मंथन कर रही है। इस विषय पर वह, एक चैप्टर भी लिख चुकी है। आज असेंबली हॉल में उसकी रीडिंग करने वाली है। सभी को उत्सुकता है कि, उसने युद्ध के क्या उपाय ढूँढे होंगे। हिमानी ने इस विषय पर बड़ी मेहनत भी की थी।

यह चैप्टर हिमानी के लिए बड़ा खास है, क्योंकि विश्व की सबसे बड़ी समस्या युद्ध ही तो है, जो पूरे विश्व का विनाश करने पर आमादा है। दुनिया में युद्ध न हो तो वह आज भी स्वर्ग जैसी बन सकती है।

शाम 6:00 बज चुके हैं। सेंट्रल हॉल भरने लगा है... हिमानी ने भी अपनी तैयारी कर ली थी। थोड़ी ही देर में सब आ चुके थे।

हिमानी फाइल लेकर मंच पर आ गयी। उसने कहा- ऑनरेबल फॉदर, मैडम, एन्ड डियर फ्रेंड्स....

आज मैं आपके सामने दुनिया की सबसे बड़ी, युद्ध की समस्या के कारण

और उसके सॉल्यूशन्स रखना चाहती हूँ। वॉर के ये सॉल्यूशन्स मैंने बहुत मेहनत से लिखे हैं.....मैंने जो लिखा है, वह रीडिंग करके आपको सुना रही हूँ...सबसे पहले मैंने सोचा कि, युद्ध होता क्यों है? काफी सोचने के बाद मुझे लगा कि इसके तीन बेसिक कारण हैं...

पहला- **मानसिक**, दूसरा **सैद्धान्तिक**... और तीसरा **व्यवहारिक** कारण है। युद्ध के पैदा होने में ये तीन बुनियादी कारण होते हैं। तो सबसे पहले हम जानते हैं, मानसिक कारण को...

युद्ध के मानसिक कारण समझने से पहले मन की प्रकृति को समझना होगा-

मन एक ऐसा खेत है, इसमें जो भी विचार डाले जाएँ, वही विचार कई गुना बढ़कर, पैदा होते हैं। यानी इन्सान जिन विचारों में रहता है, उन विचारों का उसके मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है और फिर आदमी धीरे धीरे वैसा ही बन जाता है..। यही मन की प्रकृति है।

आज का आदमी रात दिन अशान्ति में ही रहता है। लड़ाई की ही खबरें सुनता है, पढ़ता है, देखता है, बस! यही कारण है, कि युद्ध से उसका लगाव बढ़ता जाता है। जब वह आदी हो जाता है, तो धीरे-धीरे युद्ध में उसे मजा आने लगता है।

मानसिक समस्या का पहला पॉइंट है... **अति महत्वाकांक्षा** यानी ओवर एम्बीशन...

महत्वाकांक्षा जरूरी है, क्योंकि यही तो लाइफ को आगे बढ़ाकर मजबूत करती है, लेकिन अति महत्वकांक्षा विनाशकारी है। **यह आदमी को अंधा बना देती है।** आदमी अपने आप को कितना भी सभ्य बताए, किंतु उसके अंदर अति महत्वाकांक्षा बहुत ज्यादा होती है, वह पूरी दुनिया पर राज करने की इच्छा रखता है... मतलब उसमें पशुता मौजूद है।

इसका सॉल्यूशन है...

अति महत्वाकांक्षा नेगेटिव एजुकेशन से बढ़ती है। इसका मेन इलाज, केवल पॉजिटिव एजुकेशन है। विश्व, समाज में आज भी, क्रूरता को वीरता का सम्मान दिया जाता है। इस बुराई को दूर करना चाहिए। आकांक्षा, क्षमता और मनुष्यता में सन्तुलन की जरूरत है।

अगला यानी दूसरा पॉइंट है... **युद्ध आधारित शिक्षा**

शिक्षा का बच्चों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षा से उसे जैसा चाहो वैसा बनाया जा सकता है।

नई पीढ़ी कई माध्यमों से, अलग-अलग रूपों में केवल युद्ध की ही शिक्षा प्राप्त करती है। हर तरह की शिक्षा का 90% आधार युद्ध ही होता है। इंसान की प्रगति युद्ध की दिशा में ही आगे बढ़ती है। इसके विपरीत शान्ति की शिक्षा बहुत कम व्यवहार में आती है। तब स्वाभाविक है, हर पीढ़ी युद्ध के लिए ही तैयार होगी।

हालांकि इसका **उपचार** है...

शिक्षा का ऊपरी स्वरूप तो बड़ा सभ्य है, लेकिन, बहुत गहरे में हम देखें, तो पूरे विश्व की शिक्षा युद्ध एवं उसके गौरव के आसपास घूमती है। सभ्यता के भेष में शिक्षा की शक्ति भी युद्ध के लिए काम करती है।

इसके लिए शान्ति की वैश्विक शिक्षा भी बहुत जरूरी है। नहीं तो बैलेंस बिगड़ जाता है। युद्ध को बढ़ावा देने वाली शिक्षा अन्ततः युद्ध तक ही ले जाएगी, इसलिए आज के दौर में शान्ति और सद्भावना की शिक्षा ही युद्ध से बचा सकती है।

फिर आता है **युद्ध की विरासत**

दो देशों में युद्ध तो एक बहाना है, वास्तव में युद्ध आदमी के मस्तिष्क में गहरे बैठा है। इसलिए आदमी युद्ध करने का कोई न कोई बहाना ढूँढ ही लेता है। वीरता की कहानियों को वह सदियों सम्भालकर रखता है।

नई पीढ़ी तो बिल्कुल कोरी होती है, उसे जो दिया जाए, वही प्राप्त करती है। पैदा होने से लेकर मरने तक मनुष्य जाने अनजाने युद्ध की शिक्षा में ही रहता है, अतः **पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत में युद्ध का हस्तांतरण होता रहता है।** यही कारण है कि, युद्ध को मनुष्य छोड़ नहीं पाता।

इसका भी **उपचार** है... अतीत से चली आ रही इस परम्परा को बदलने की जरूरत है। यह जरूरी है कि, पुरानी पीढ़ी, नई पीढ़ी को शान्ति और प्रेम की विरासत सौंपकर जाए। तब धीरे-धीरे बदलाव हो सकता है। नयी पीढ़ी को पॉजिटिव बनाने पर पूरा ध्यान केन्द्रित होना चाहिए।

डर की भावना...

कुछ देश शान्ति के पक्षधर भी होते हैं... लेकिन दुश्मन के डर से मजबूरी में, उन्हें भी अपनी शक्ति को बढ़ाना पड़ता है। **जो शान्ति से रहना चाहते हैं, उन्हें शान्ति से रहने नहीं दिया जाता है। असुरक्षित होकर तो नहीं रहा जा सकता, इसलिए वे भी कॉम्पीटिशन में शामिल हो जाते हैं।**

इसका **उपचार** भी है...

असुरक्षा की भावना भी युद्ध का एक कारण बनती है। सुरक्षा के प्रति जागरूकता तो जरूरी है, लेकिन **असुरक्षा का डर कई भ्रमों को जन्म देकर युद्ध के लिए तैयार करता है। इसलिए, जागरूकता, निर्भीकता और सहजता का सन्तुलन, युद्ध से बचाने में मददगार होता है।**

ये युद्ध होने के मानसिक कारण थे... अब हम जानते हैं...युद्ध के सैद्धान्तिक कारण....

इसका पहला प्वॉइंट है.... **इतिहास की विडम्बना**

जो व्यक्ति एक हत्या करता है, उसे इतिहास अपराधी मानता है, और जो लाखों निर्दोषों की हत्याएँ करता है, उसे इतिहास महान पराक्रमी का

दर्जा दे देता है।

बस! यहीं से नई पीढ़ी की संवेदना खत्म हो जाती है। वह युद्ध के लिए प्रेरित होता है। उसके विजेता होने की भूख बढ़ने लगती है। वह भी विजेता बनाना चाहता है, फिर चाहे उसके लिए उसे कितना भी क्रूर क्यों न होना पड़े।

इतिहास भी तब तक पुराने युद्धों को भूलने नहीं देता, जब तक कि, नये युद्ध का इतिहास नहीं बन जाता। जाने-अनजाने इतिहास हमें अतीत की तरफ खींचकर युद्ध की ओर ले जाता है।

इसका इलाज है - इतिहास की कमियों में सुधार...

इतिहास की त्रुटियों और विडम्बनाओं में सुधार की जरूरत है। लाखों निर्दोषों का नरसंहार करने वाले राजा को महान कहना इतिहास की सबसे बड़ी भूल रही है। इसमें नकारात्मकता को ज्यादा और सकारात्मकता को बहुत कम जगह दी गयी है। जबकि होना इससे उल्टा चाहिए। इतिहास अतीत का महत्वपूर्ण दर्पण है, लेकिन उसका मानवता का पक्ष मजबूत होना चाहिए।

दूसरा पॉइंट है... धार्मिक और नस्लीय कारण

धर्म, संस्कृति और नस्लीय भेद भी मनुष्य के बीच निरन्तर नफरत पैदा करते हैं। यही नफरत आगे युद्ध का कारण बन जाती है। दुनिया को इस नफरत ने सबसे ज्यादा जलाया है।

इसका **उपचार** यह है कि, नफरत और प्रेम दोनों ही प्रकृति की ही देन है, लेकिन विरोधी लक्षणों के कारण तो, **ईश्वर ने बुद्धि और विवेक भी दिया है। बुद्धि ईश्वर ने सन्तुलन बैठाने के लिए तो दी है, जिससे हर समस्या का उपचार ढूँढा जा सकता है।** नफरत की आग आपसी सद्भावना से ही बुझ सकती है।

तीसरा है **भौगोलिक कारण...** कुछ भूमि के हिस्से बहुत खनिज पदार्थ या विशेष तत्वों के कारण बहुत कीमती होते हैं। कुछ हिस्से व्यापारिक या सामरिक कारणों से महत्वपूर्ण हो जाते हैं, जिसे प्राप्त करने के लिए देश आपस में युद्ध करते हैं।

इसका **उपचार**- पड़ोसी धर्म के सिद्धांत का ईमानदारी से पालन करके,

आपसी सहयोग, सद्‌भावना तथा समानता के आधार पर समस्या का समाधान करना चाहिए।

चौथा, **क्षेत्र एवं भाषाई भेद** भी युद्ध का कारण बनते हैं। ये कारण परम्परागत रहे हैं। जो युद्ध तक पहुँच जाते हैं।

इसका **उपाय** यह है कि, **मनुष्य के भेद को नष्ट करने का कोई उपाय नहीं है। सिर्फ प्रेम और सद्‌भावना से ही, इससे बचा जा सकता है।** इसलिए, इसी सिद्धान्त को निरंतर अपनाया जाना चाहिए।

ये थे, युद्ध के सैद्धान्तिक कारण... आइए! अब हम व्यवहारिक कारण जानते हैं...

व्यवहारिक कारण युद्ध पैदा करने में सबसे अहम भूमिका निभाते हैं। इसके कौन-कौन से पॉइंट हैं, आइए जानते हैं....

सबसे बड़ा कारण **त्रुटिपूर्ण सीमाएँ...**

सीमाओं के कारण सबसे ज्यादा युद्ध होते हैं। **पूरे विश्व की सीमाएँ बीमार हैं। वैश्विक आदर्श सीमाओं पर कोई विशेष योजना नहीं है, और जो हैं, वे युद्ध रोकने में कारगर नहीं हैं।** अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर बहुत काम करने की जरूरत है। इस पर गम्भीरता से सुधार किया जाए तो, युद्ध की लगभग 60% समस्याओं का समाधान हो सकता है। **परिसीमन या सीमांकन की त्रुटियाँ युद्ध का बड़ा कारण बनती हैं।**

इसका **उपचार** करने के लिए सीमाओं की वैधानिक प्रक्रिया का उपयोग कर वैश्विक सुधार करना जरूरी है। पारदर्शिता और निरन्तर सकारात्मक सुधार प्रक्रिया अपनाई जाना चाहिए। अब तो सीमाओं का आधुनिकीकरण कर, सेटेलाइट की मदद से 80% समस्याएँ दूर की जा सकती हैं।

अगला प्वॉइंट है... **विस्तारवादी नीतियाँ**

कुछ देशों की विस्तारवादी व हड़पनीति शान्ति के लिए बड़ी घातक होती है। ऐसी पालिसी हमेशा युद्ध का कारण बनती है।

इसका **सॉल्यूशन** करने के लिए अंतरराष्ट्रीय नियमों का कड़ाई से पालन होना चाहिए। सभी देशों को मिलकर इसका बहिष्कार करना सर्वश्रेष्ठ उपाय है। **इसकी असली बीमारी महत्वाकांक्षा है, जिसका इलाज वैश्विक परिवार की शिक्षा है।**

अब आते हैं **राजनीतिक कारण....**

बदलते वैश्विक परिवेश के कारण राजनीतिक परिस्थितियाँ दूषित होती जा रही हैं। राजनीति की जगह अब कूटनीति हावी हो रही है। इस कारण देशों के बीच, आपसी विश्वास की कमी होती जा रही है, जो युद्ध का कारण बनती हैं।

सॉल्यूशन यह है कि, विश्व की राजनीति में शुद्धिकरण की आवश्यकता है। हर देश की विदेशनीति दूरदर्शी व भरोसेमंद व स्थायी होना चाहिए। प्रदूषित या गुटबाजी की राजनीति को छोड़कर हर देश को शान्ति व प्रगति पर केंद्रित रहना चाहिए।

अगला पॉइंट है... **आर्थिक कारण**

दो देशों के बीच व्यापारिक और आर्थिक बदलाव भी युद्ध का कारण बनते हैं।

उपचार- किसी भी तरह की नीति में परिवर्तन सन्तुलन और समानता के आधार पर करना चाहिए।

पड़ोसी देश की जीवन वृत्ति भी बड़ा महत्व रखती है। यदि पड़ोसी विस्तारवादी सोच का अथवा उपद्रवी प्रकृति का हो, तो भी युद्ध की सम्भावना हमेशा बनी रहती है।

इसका **उपचार** यह है कि, जिस प्रकार हम घर के पड़ोसी के साथ मिल-जुलकर रहते हैं। दुःख-सुख में एक दूसरे का सहयोग करते हैं। हर संकट का सामना मिलकर करते हैं। ठीक उसी प्रकार पड़ोसी देशों को भी हिल-मिलकर रहना जरूरी है। **नफरत को सिर्फ प्रेम ही काट सकता है।**

युद्ध के कई **तात्कालिक कारण** भी हो सकते हैं।

इसका **उपचार** है कि तात्कालिक कारणों में बहुत विवेक और सजगता एवं समझदारी की आवश्यक है। त्वरित क्रोध में लिए गए निर्णय घातक हो सकते हैं।

हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। बहुत देर तक तालियाँ बजती रही। हिमानी ने इशारे से सबको शान्त करके कहा -

आइए...! अब कुछ बुनियादी उपचार जानते हैं....

पहला है **मीडिया की भूमिका में बदलाव...**

आज के दौर में मीडिया की भूमिका बड़ी खास है। समाज पर इसका तत्काल प्रभाव पड़ता है, अतः इससे जुड़े लोगों को संवेदनशील और निष्पक्ष होना जरूरी है।

दूसरे विश्व युद्ध के कारणों में, एक कारण मीडिया की भूमिका भी था। यदि मीडिया चाहता, तो सेकेंड वर्ल्ड वॉर टल सकता था। मीडिया का लक्ष्य सिर्फ आग बुझाने का होना चाहिए, पहले विश्व युद्ध के पश्चात मीडिया की भूमिका पर कई सवाल खड़े हुए थे। अतः मीडिया को सकारात्मक रूप से सावधान रहने की ज्यादा जरूरत है।

दूसरा **शीत युद्ध पर कन्ट्रोल**

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद शीत युद्ध शुरू हो गया, जो किसी न किसी रूप में निरंतर चलता रहा है। युद्ध के लिए जमीन तैयार करने में, इसकी बड़ी भूमिका होती है। **शीतयुद्ध वास्तव में युद्ध का ही एक छुपा हुआ रूप है। यही रूप एक दिन युद्ध में बदल जाता है।** रूस और अमेरिका इसके दो बड़े किरदार हैं। दोनों के बीच वर्चस्व की लड़ाई चली आ रही है, इनकी लड़ाई में क्यूबा, ताइवान, अफगानिस्तान, सीरिया, फिलिस्तीन, जैसे कई देश तबाह हो गए। वर्चस्व की लड़ाई में अब चीन भी शामिल हो गया है, इसके चलते शान्ति की

कल्पना करना बेकार है। इसको पनपने से रोकना चाहिए। जो देश शीतयुद्ध में शामिल हैं, उनको निकलने के उपाय ढूँढना चाहिए।

तीसरा **अंतर्राष्ट्रीय नियमों के उल्लंघन पर कठोर कार्यवाही**

अंतरराष्ट्रीय नियमों के उल्लंघन पर भी कठोरता से कार्रवाई करना चाहिए। अक्सर नियम बनाने वाले ही नियम तोड़ देते हैं।

चौथा **अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा का विस्तार**

वैश्विक स्तर पर वसुधैव कुटुम्बकम् की शिक्षा का विस्तार मनुष्य के बीच की नफरत को कम करने में बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है। नयी पीढ़ी के लिए यह शान्ति का मार्ग खोल सकता है।

पांचवा **प्रारम्भिक विवाद पर नियंत्रण**

दो देशों के बीच जैसे ही थोड़ा विवाद हो उसे तत्काल हल कर लेना बहुत जरूरी है, क्योंकि यही छोटा सा विवाद युद्ध का कारण बन जाता है।

अगला पॉइंट है.... **विनाशकारी हथियारों पर रोक**

युद्ध का सबसे बड़ा कारण यही है। विनाशकारी हथियार और उनकी बिक्री। कुछ देश तो इसके बड़े व्यापार में लगे हैं। पूरे विश्व को एक आम सहमति बनाकर इस पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।

फिर **छोटे देशों को एक होना आवश्यक** है...

जबतक दुनिया के छोटे व कमजोर देश एक नहीं होंगे, तब तक वे शक्तिशाली देशों के खिलौने बने रहेंगे। साथ ही युद्ध में बड़े देशों का चारा बनते रहेंगे। छोटे देशों को बड़ी सावधानी व विवेक से आगे बढ़ना चाहिए।

कमजोर देशों में यदि एक होने की आपसी समझ बनती है, तो फिर शक्तिशाली देश उनका शोषण नहीं कर पाएंगे और वे आजादी से अपना विकास करेंगे। इससे युद्ध पर भी लगाम लगेगी।

छोटे देशों की सुरक्षा के विशेष नियम

शक्तिशाली देशों से बचने के लिए कमजोर व छोटे देशों की सुरक्षा के विशेष उपाय किये जाना चाहिए। उनकी सुरक्षा भी युद्ध में कमी लाएगी।

नवां कारण **युद्ध को बढ़ावा देने वाले देशों पर प्रतिबंध**

युद्ध करने या उकसाने वाले देशों के विरुद्ध विशेष कार्यवाही के नियम, यद्ध रोकने में मदद करेंगे।

दसवां **अंतर्राष्ट्रीय बॉर्डर क्रॉस करने पर भारी जुर्माना**

कोई भी देश यदि अंतर्राष्ट्रीय बॉर्डर क्रॉस करता है, तो उस पर भारी जुर्माने का प्रावधान युद्ध को कम करने में बड़ी भूमिका निभा सकता है। इस प्रकार के सभी जुर्मार्न की रकम संयुक्त राष्ट्रसंघ में जमा की जाना चाहिए।

अब ग्यारहवां पॉइंट... **संयुक्त राष्ट्रसंघ में बदलाव...**

संयुक्त राष्ट्रसंघ विश्व का सबसे शक्तिशाली संगठन है, लेकिन इसमें बड़ी बड़ी कमियाँ भी हैं, यह बुनियादी कमियाँ भी सर्वविदित हैं, अतः इसका अस्तित्व निरन्तर कमजोर होता जा रहा है। इसको शक्तिशाली बनाना बहुत आवश्यक हो गया है।

इसके अलावा भी युद्ध होने के कई कारण हैं, लेकिन, मनुष्य के पास हर कारण का इलाज मौजूद है, जिसका उपाय वह करे, तो युद्ध को समाप्त किया जा सकता है।

फिर से हॉल तालियों से गूँज उठा।

हिमानी फिर बोली- तो ये थे युद्ध के कारण और उपचार... आपके सामने इन विचारों को रखने का मतलब यह है कि, इनको हमें वर्ल्ड पीस फोरम के माध्यम से पूरी दुनिया में फैलाना है...

पर्चा पढ़ने के बाद हिमानी बैठ गयी। उसके बैठते ही पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से बहुत देर तक गूँजता रहा।

फॉदर ने खड़े होकर सबको शान्त किया और कहा- माय सन... मुझे बहुत खुशी हो रही है, कि युद्ध के बहुत यूनिक एन्ड आइडियल सॉल्यूशन्स

हिमानी ने पेश किये हैं। हिमानी के ये विचार हमेशा जीवित रहेंगे... युद्ध को अलविदा कहने में ये बहुत मददगार हो सकते हैं। हालाँकि, बड़ी शक्तियों को ऐसे उपायों की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि ये इलाज उनके पॉवर को कम करते हैं, वे अपना काम ऐसे ही करते रहेंगे, लेकिन हम भी अपना काम ऐसे ही करते रहे। वे सुने, या न सुने। हमें शान्ति का यह सफर जारी रखना है...

अपने अभियान के जरिये, ऐसे लिटरेचर को जितना हो सके फैलाने का काम करें, तुम्हारे लिए यह सबसे बड़ा भलाई का काम होगा। मैं उम्मीद करता हूँ कि, हम सबका यह सपना सच हो.....।

गॉड ब्लेस यू माय सन....

इतना कहकर फॉदर बैठ जाते हैं और कार्यक्रम समाप्त हो जाता है।

प्रकृति बड़ी सहयोगी है। यदि हम नर्क का रास्ता चुनें, तो वह उसी को साफ करने लगेगी कि, आओ...

- ओशो

इतना लिखते हुए हिमानी ने डेली डायरी में लिखा - युद्ध मनुष्य जाति का सबसे बड़ा कलंक है। यदि मनुष्य स्वयं से युद्ध जीत लेता है, तो फिर उसे किसी युद्ध की जरूरत ही नहीं होगी।

काश! मनुष्य इस कलंक को धो पाता।

-हिमानी

इतना लिखकर हिमानी ने लाइट बंद कर दी।

बंकर में शरण

बंकर में हिमानी, जया, ईशा, सायना, रीटा, ब्लेसिंग और जेनिफर मिलकर दवाईयों का सेट बनाकर उनके पैकेट्स बना रही थी। ये पैकेट्स सूमी क्षेत्र के में पहुँचने थे। पैकेट्स में कई प्रकार की दवाएँ और टेबलेट्स थी। सूमी क्षेत्र के गाँवों में इन दवाईयों की कमी हो गयी है, अतः वहाँ पहुँचाने के लिए काफी संख्या में पैकेट्स तैयार किए जाने थे। जब सौ पैकेट्स बन जाते तो, जेनिफर उनको एक बड़े पैकेट में जमा देती थी।

इनका यह काम चल ही रहा था कि, डेनियल का कॉल आया।

हिमानी ने मोबाइल पर बात की, फिर कहा- तुम दोनों बसों को लेकर हॉस्टल आ जाओ, बाकी बाद में देखेंगे... इतना कहकर हिमानी ने मोबाइल रख दिखा। फिर सबसे कहा, अभी हमें यह काम बन्द करना पड़ेगा....

ब्लेसिंग ने पूछा- क्यों?

क्योंकि, दो बसें जो यहाँ से बूढ़े बच्चे और महिलाओं की गयी थी, उन्हें कीव के चेक पोस्ट से वापस कर दिया गया।

जया बोली- उनके पास तो स्पेशल वॉलेंटियर पास भी है।

- हाँ, लेकिन आगे खतरा है, इसलिए सैनिकों ने रोड़ ब्लॉक कर दिया.... जब तक रोड़ नहीं खुलता.. उन सबको हमें बंकर में ही रखना पड़ेगा। रूम में रखना, खतरे से खाली नहीं है। इस जगह को भी फ्री करना है। हिमानी बोली।

इतना सुन सभी ने काम रोककर सामान समेट लिया।

पूरे हॉस्टल के रूम खाली हो चुके थे, अतः वहाँ से हिमानी ने लगभग

पचास गद्दे बुलवाकर बिछवा दिए। हिमानी सोच रही थी कि, अभी खाने और पानी का इन्तजाम तो है, लेकिन हीटर जरूरी है, अतः उसने भारत को कुछ हीटर्स का इन्तजाम करने के लिए कॉल कर दिया। बाकी तैयारी भी हिमानी ने पूरी करवा ली।

लगभग एक घंटे के बाद, दो बसों के यात्री बंकर में आ चुके थे। इनकी संख्या 107 थी। इनमें बच्चे और बूढ़े अधिक थे। महिलाओं की संख्या कम थी। उनके आते ही सबको क्रोईसैन और वार्मसूप दिया गया। ताकि वे रिलैक्स महसूस कर सकें।

डेनियल ने आकर पूरे विस्तार से हिमानी को घटनाक्रम बताया। डेनियल दोनों बसों का इन्जार्ज है, यह कीव यूनिवर्सिटी में मेडिकल के थर्ड इयर का छात्र है। इसके साथ पॉवेल जो स्वीडन से है, जर्मनी का अलबर्ड और मिस्त्र के फरीद की एक टीम है। जो जरूरतमंद लोगों को पोलैण्ड बॉर्डर तक सुरक्षित पहुँचाने का काम करती हैं। इन सारे कामों को भारत देखता है। वर्ल्ड पीस फोरम में इनकी भूमिका बड़ी खास है।

यात्रियों में जो बच्चे और बूढ़े हैं, उन्हें एक्सट्रा कम्बल और जर्किन दी गयी है। शाम 7 बजे सभी स्टूडेंट्स ने मिलकर उन्हें लंच करवाया।

लंच के बाद फॉदर, स्वेतलाना, मारिया मैडम तथा हिमानी सभी से पर्सनली मिले। **सबके चेहरे पर निराशा थी। आँखों में पानी और दास्तानों में दर्द था। और ये दर्द की दास्तां भी ऐसी, जिसका कोई इलाज नहीं। उनसे मिलते-मिलते हिमानी की आखों में आँसू आ गए। अब उसमें और कहानी सुनने की हिम्मत नहीं बची थी,** इसलिये वह फॉदर और मैडम को छोड़कर बंकर के मेडिकल वॉर्ड में चली गयी।

सभी यात्रियों में दर्द और भय था। बच्चे भी न तो खेल रहे थे, न मुस्करा रहे थे। बस..! वे गुमसुम थे। यही सोचकर जया ने उनके मनोरंजन का तत्काल एक प्लान तैयार किया।

उसने हिमानी, सायना ईशा, जेनिफर, ब्लेसिंग, रीटा और अवि से बात की। उन्होंने साइड में जाकर प्रोग्राम की प्लानिंग की और लगभग 25 मिनट में प्रोग्राम तैयार कर लिया।

दोनों साइड यात्री थे, बीच का स्पेस खाली था। वह बीच में आई। उसके

कँधे पर एक छोटा सा लाऊडस्पीकर टँगा था। वह हाथ में माइक्रोफोन लेकर बोली-

ऑनरेबल गेस्ट, फॉदर, मैडम एण्ड डियर चाइल्ड्स... हम जानते हैं कि, आप बहुत परेशान हैं... आपकी परेशानी तो हम कम नहीं कर सकते, लेकिन आप अपने दर्द को कुछ देर भूल सकें और शायद मुस्करा सकें.. इसके लिए हमने आपके लिए एक फोक डान्स का प्रोग्राम रखा है। उम्मीद करती हूँ, आपको जरूर पसन्द आएगा... तो आप सब तैयार हो जाइए... आपके सामने सबसे पहली डॉन्सर आ रहीं है.. जेनिफर जो आयरलैंड से हैं... मेडिकल में थर्ड इयर की स्टूडेंट हैं। ये आयरलैंड के फोक सॉन्ग पर डान्स करने जा रहीं है। जया ने मोबाइल पर गाना लगाया और उसे माइक से सटा दिया -
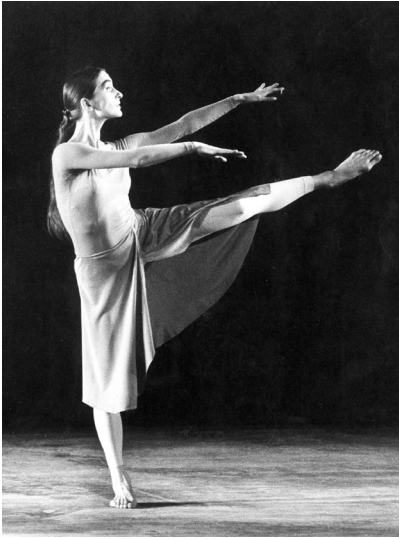
अंग्रेजी का फोक सॉन्ग शुरू होते ही, जैनिफर ने डान्स करना शुरू कर दिया। सभी दर्शक उत्सुकता से डान्स देखने लगे। आयरलैंड संस्कृति के इस डान्स ने सबका मन मोह लिया।

डान्स खत्म होने के बाद, सबने तालियाँ बजाई।

जया फिर बोली- जेनिफर के बेहतरीन डांस के बाद.... अब आपको नाइजीरिया का फोक डान्स दिखाते हैं.. तो अब आपके सामने आ रहीं है- फोर्थ इयर की स्टूडेंट ब्लेसिंग....

जया ने अफ्रीका का नायजीरियन सॉन्ग लगाकर माइक के पास कर दिया। सॉन्ग के साथ अफ्रीकन फोक डान्स शुरू हो गया।

यह पहले वाले डान्स से बिल्कुल अलग था। **अब सबके चेहरों पर अब ताजगी आने लगी थी। वे अब बीच में भी तालियाँ बजाने लगे थे।** अफ्रीकन संस्कृति का यह सुन्दर डान्स था। डान्स खत्म होते ही, हॉल तालियों से गूँज उठा था।

जया फिर बोली- और अब आपके सामने अगले डान्सर आ रहे हैं, इण्डिया के अवि और पाकिस्तान की सायना... फिर जया ने मोबाइल पर गाना लगाकर दिया और डान्स शुरू हो गया। गाना और म्यूजिक कुछ ऐसा था कि, सब तालियाँ बजाने लगे। बच्चे भी झूमने लगे। दोनों देशों की संस्कृति का मजा लेकर दर्शक भी झूम उठे थे।

डांस खत्म हुआ तो, हॉल तालियों से गूँजता रहा।

जया बोली - इस खूबसूरत परफॉर्म के बाद अब पोलैण्ड का फोक डांस देखने को तैयार हो जाईये... तो अब, आपके सामने आ रही है- थर्ड इयर की स्टूडेंट ओलेशिया, जो पोलैण्ड से है।

ओलेशिया मंच पर आ गयी। सॉन्ग शुरू होने के साथ ही डान्स शुरू हो गया यह। पोलैण्ड का प्रसिद्ध फोक सॉन्ग... अब डांस की हर स्टेप पर तालियाँ बज रही थी। दर्शकों में उत्साह भर गया और बच्चे भी अब झूमने लगे। डान्स खत्म होते ही जया की आवाज फिर गूँजी...

और अब वक्त आ गया है, आज के सबसे बेहतरीन परफार्म का... ये यूक्रेनी सॉन्ग बच्चों का सबसे फेमस सॉन्ग है... और इसे परफॉर्म करने करने जा रहे हैं, हमारे खूबसूरत हीरो... ये सभी चिल्ड्रन्स... तो प्यारे बच्चों सभी आ जाओ... आपका फेवरेट सॉन्ग बजने वाला है। थोड़ी ही देर में लगभग दस बारह बच्चे मंच पर आ गए। जया ने सॉन्ग लगा दिया, और डांस शुरू हो गया... **बच्चे जो अबतक उदास बैठे थे, अब वे डांस कर रहे थे। दर्शक भी उनकी हर स्टेप पर तालियाँ बजाकर उनका साथ दे रहे थे।**

लगभग तीन मिनट में सॉन्ग खत्म हो गया, फिर भी बच्चे डान्स करते रहे। तब जया ने उसी सॉन्ग को फिर रिपीट कर दिया। तालियाँ बजती रही... बच्चे डांस करते रहे। पूरे बंकर में मस्ती झूम उठी थी।

मैं समय हूँ...!
हे मानव! तूने अपने अहंकार को गौरव बना लिया... यही तेरी समस्या का कारण है।

छोटे देशों के एक होने का समय

यूक्रेन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा जहाँ, विनाश न हुआ हो। हर तरफ बर्बादी का मंजर। शहरों में बारूद की गंध या धुँए के अलावा और कुछ नहीं बचा है। खाने का सामान खत्म हो चला... गैस की सप्लाई बंद है... बिजली नहीं... पानी नहीं.... ऐसी विपरीत परिस्थितियों में लोग बंकर में ही रहने को मजबूर हैं।

स्टूडेंट्स निडर होकर अपने काम को पूरा कर रहे हैं। उन्हें अब मौत से डर नहीं लगता। बंकर में उनकी इमरजेंसी हेल्थ यूनिट चल रही है, जिसमें घायलों का इलाज निरन्तर किया जा रहा है। इमरजेंसी इलाज के बाद, उन्हें दूसरे हॉस्पिटल में शिफ्ट कर दिया जाता है। लगभग एक दर्जन से अधिक स्टूडेंट्स इसी काम में लगे हैं। स्टूडेंट्स के अलग अलग दल सभी क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। अब उन्होंने डर को भी अपनी मस्ती में ढाल लिया है... शाम के वक्त वे रोज चर्चा के लिए बैठते हैं...। यही उनकी ताकत भी है।

शाम का वक्त है, अभी अभी इनकी बैठक शुरू हुई है।

लगभग आधे घण्टे उन्होंने आज के अभियान के काम की चर्चा की। उसके बाद अगली एक्टिविटी शुरू हुई...।

हिमानी ने ही इसकी शुरूआत की। उसने कहा- आज हम छोटे देशों पर चर्चा करेंगे....आज का सब्जेक्ट है - **दुनिया के छोटे देशों को एक होने की जरूरत है......।**

अब छोटे देशों के जागने का वक्त आ गया है। अहं को ताक में रखकर इन्हें समझदारी से काम लेना चाहिये। छोटे देशों को अपने पैरों पर ही खड़े होकर आगे बढ़ना पड़ेगा। बैसाखियों पर ज्यादा सफर नहीं कर सकते। और चले भी तो मंजिल तक नहीं पहुँच सकते..। विश्व के सभी निर्धन, पिछड़े और विकासशील देशों के एक होने का वक्त आ गया है। अभी एक नहीं हुए, तो फिर कभी एक न हो सकेंगे। छोटे देशों की एकता ही उन्हें बचा सकती है।

अब इस सब्जेक्ट पर आप में से जो भी अपने विचार रखना चाहें, वे रख सकते हैं। इतना कहकर हिमानी बैठ गयी...

हर्ष ने कहा- **जिन्हें अपने ऊपर भरोसा कम होता है, वे छोटी-छोटी समस्याएँ लेकर बड़े देशों के पास पहुँच जाते हैं।** ऐसे देशों के पास, जो सदियों से छोटे देशों की कमजोरी का फायदा उठाते हैं, शोषण करते हैं। **ताकतवर देश उन्हें लालच देकर धीरे-धीरे अपने जाल में फँसा लेते हैं। फिर उसके बाद टूल बनाकर उसका यूज़ करते हैं...जो पड़ोसी देश से दुश्मनी रखता है, उसे पॉवरफुल देशों की गुलामी झेलना ही पड़ती है.....**

अब जया ने बोलना शुरू किया- विश्व में सब देशों की प्रॉब्लम्स एक जैसी ही है और वह है... अपने पड़ोसी से दुश्मनी। **हर पड़ोसी अपने पड़ोसी, शत्रु को मिटा देना चाहता है, लेकिन दुश्मन कभी मिटता नहीं, क्योंकि वह भी ऐसी ही भावना रखता है। अधिकांश देशों की असली बीमारी यही है।**

दो देश जैसे ही आपस में लड़े, कि ताकतवर देश गोद ले लेता है। एक देश इसको, दूसरा उसको। फिर ऊपरी तौर पर समझाने का नाटक चलता है। अपील होती है..., आपसी बातचीत से हल निकालो, शान्ति से रहो.. उन्हें यह भी मालूम है, कि ये शान्ति से नहीं रहेंगे। फिर वे हथियार सौंप देते हैं। सौंप नहीं, देते बेच देते हैं। धन न हो, तो वे उधार दे देते हैं और आका बन जाते हैं। हथियार भी ऐसे, जो उनके काम के नहीं हैं। हथियार पाक-र दोनों ही देश शेर बन जाते हैं। एक-दूसरे पर हथियारों का उपयोग करते हैं...

जैसे-जैसे नफरत बढ़ती है, ताकतवर देशों का व्यापार बढ़ता है....लगभग 75 सालों से हथियारों का यह गंदा व्यापार फलफूल रहा है... आधे से ज्यादा बड़े देश केवल हथियारों को बेचकर ही ताकतवर हुए हैं। **छोटे देशों में नफरत का मतलब, बड़े देशों को ताकतवर बनाना है।**

अब सायना बोली- **हथियार बेचने वाले देश तो यही कामना करते होंगे कि... कमजोर देश, आपस में लड़ते रहें, जिससे उनका व्यापार चलता रहे... नहीं लड़ेंगे तो व्यापार खत्म हो जाएगा, अतः कमजोर देशों पर इनकी गिद्ध नजर लगी रहती है।**

अधिक वक्त तक यदि अमन रहे, तो ये किसी देश के अंदर की समस्या को अपना मोहरा बना लेते हैं...सॉल्यूशन्स के नाम पर प्रॉब्लम्स और बढ़ जाती हैं। एक ही देश को दो टुकड़ों में बँटने पर मजबूर कर देते हैं। पॉवरफुल कन्ट्री फिर उसे गोद ले लेती है। दोनों ओर से हथियार खरीदने की दौड़ फिर शुरू हो जाती है...

अब अवि ने बैठे हुए ही अपने विचार रखे- **छोटे देश अपनी नीतियाँ नहीं बदलेंगे तो, कोई न कोई मालिक हो ही जाएगा, जितना पॉवरफुल देशों से बचकर चलेंगे, उतने ही फायदे में रहेंगे।**

कोई देश शत्रु भी है, तो उसी से शान्ति और समझौते का रास्ता निकलेगा, किसी दूसरे से नहीं। दो देश आपस में बैठकर समझौता करेंगे, तभी फायदे में रहेंगे और दुश्मनी खत्म होगी... खेल तो तीसरे के होने से ही बिगड़ता है।

ब्लेसिंग को बोलने के लिए सायना ने उकसाया, तो उसने कहा- वर्ल्ड में केवल चार-पाँच पॉवरफुल देश हैं, जो लगभग 200 देशों को पपेट की तरह नचाते हैं। हालाँकि इन पॉवरफुल कंट्रीज में भी आपस में कॉम्पिटिशन है, लेकिन अपर लेवल पर इनका मोटो एक ही हैं।

स्वेतलाना मैडम ने अपने विचार रखे- फर्स्ट वर्ल्ड वॉर के पहले भी यही कॉम्पिटिशन चली थी। आपसी लालच और ईगो ने वर्ल्डवॉर को जन्म दे दिया। मीडिया ने भी आग में घी डालने का काम किया। नासमझी और अहं के कारण साढ़े तीन करोड़ लोग मारे गए। लासेन सम्मेलन में जर्मनी ने दुश्मन देश फ्रांस के सामने, आपस में प्रॉब्लम्स सॉल्व करने का प्रपोजल रखा था, जिसे दूसरे

देशों के दबाव में ठुकरा दिया गया। यह समझौता न ठुकराया होता, तो शायद फर्स्ट वर्ल्डवार न होता, लोग मारे नहीं जाते। युद्ध के बाद भी अमन और समझौते के नाम पर, अनफेयर वारसा संधि ने सेकेंड वर्ल्डवॉर को प्लांट कर दिया।

अब मारिया मैडम भी खड़ी हो गईं और बोलीं - **जब तक हथियारों की बड़ी फैक्ट्रीज हैं, तब तक वर्ल्ड में पीस की कल्पना करना बेमानी होगा....** इसमें बेचने और खरीदने वाले दोनों ही गलत हैं।

कई कंट्रीज की पॉपुलेशन भूखों मर रही है, बिजली, पानी, अच्छा स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी की सैकड़ों प्रॉब्लम्स हैं। इन सबको नेगलेक्ट करके पूरे देश की पॉवर दुश्मन को मिटाने में लगाते हैं। दुश्मन मिटे, न मिटे, लेकिन वह खुद मिटता चला जाता है... यह झूठे ईगो का पागलपन है।

जया ने कहा- मात्र एक देश के सामने अकड़कर चलने के कारण कितने देशों के सामने झुकना पड़ता है? क्या-क्या प्रपंच करना पड़ते हैं? जरा हिसाब तो लगाओ? इसलिए समझ से काम लेना चाहिए।

पड़ोसी को शत्रु नहीं, मित्र बनाकर रहना चाहिए ... तब ही चैन से रह सकते हैं... प्रेम करेंगे तो प्रेम ही मिलेगा, क्योंकि सिर्फ प्रेम ही है,

जिसका अस्तित्व में कोई विरोधी नहीं है।

हमारा शत्रु कोई और नहीं, हमारे अंदर ही है... पड़ोसी उतना घातक नहीं है, जितना हमारे अंदर बैठा शत्रु है, अतः पहले अन्दर के शत्रु को मित्र बनाना चाहिए।

किसी के भरोसे नहीं जी सकते..., अपना मालिक खुद बनना होगा...। दुनिया के सभी कमजोर देशों को एक-दूसरे का सहारा बनना होगा, फिर कोई दूसरा देश कठपुतली की तरह नहीं नचा पाएगा।

सबके विचार सुनकर फॉदर खड़े हुए और बोले-

शक्तिशाली देशों के जागने की उम्मीद नहीं रखना चाहिए... उनके अहं का नशा बहुत गहरा है। फिर उन्हें जागने की जरूरत भी क्या है? वे तो यूँ ही पॉवरफुल हैं... जागना तो केवल छोटे और कमजोर देशों को ही है। बस एक ही अंतिम रास्ता है..सब एक हो जाएँ।

पड़ोसी से अच्छे सम्बन्ध ऐसी जटिल समस्याओं का आसानी से समाधान कर सकते हैं।

पड़ोसी देश जब शत्रु बनकर रहते हैं, तो दोनों का विनाश निश्चित है, और मित्रतापूर्ण रहते हैं, तो विकास निश्चित है।

एकता में बड़ी शक्ति होती है। एक होकर साथ चलने वाले कभी नहीं गिरते। अगर गिरते भी हैं, तो साथी सम्भाल लेते हैं। परस्पर सहयोग में बड़ी ताकत होती है।

तभी हिमानी के पास एक छात्र ने आकर कहा- बेड नं. फाइव पर एमरजेंसी है....

सुनते ही हिमानी तत्काल उठी और एक्सक्यूज मी कहकर इमरजेंसी हेल्थ सेंटर की ओर चल पड़ी...।

विश्व शान्ति के मंत्र

रूस और यूक्रेन की लड़ाई को चार माह पूरे हो चुके हैं और अब विनाशकारी रूप ले चुकी थी। हर तरफ बम मिसाइल की बारिश हो रही है। शहर खंडहर में तब्दील होते जा रहे थे। बड़ी-बड़ी इमारतें धराशायी हो रहीं थी। न जाने कितने मारे जा चुके हैं और ना जाने कितने मारे जाएँगे, कहा नहीं जा सकता। पूरा यूक्रेन खण्डहर में तब्दील होता जा रहा था। लेकिन बारूद का यह खेल रात-दिन चल रहा था।

हॉस्टल में जितने भी स्टूडेंट्स बच गए थे, वे जान की परवाह किये बिना अभियान को फैलाने में जुटे थे। पिछले कई दिनों से अब इन्हें ज्यादातर बंकर में ही रहना पड़ रहा है। खाना-पानी और बिजली की समस्या बढ़ती जा रही थी। लेकिन, इनके चेहरे पर डर जैसी कोई चीज नहीं थी, बल्कि कुछ करने का एक जज्बा था। उन सब त्रासदी और अभावों के बीच भी ये स्टूडेंट्स मुस्कराकर अपना काम कर रहे हैं। उन्होंने ऐसे संकट में भी अपनी मस्ती को कायम रखा है।

बंकर में आज क्विज शुरू होने वाली है। इसे हिमानी ने आर्गेनाइज़ किया है।

कुछ ही समय के पश्चात हिमानी खड़ी हुई। इसकी शुरूआत करते हुए उसने कहा- **पश्चिम ने भौतिक विकास में ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं, तो पूरब ने आंतरिक चेतना के शिखरों को छुआ है। पश्चिम की भौतिक खोजें विनाश का कारण भी बन सकती हैं, किंतु पूरब के आंतरिक जगत की खोजें मात्र**

कल्याणकारी ही सिद्ध होंगी। दोनों खोजों की प्रकृति में बड़ा अंतर है।

विकसित मनुष्य की यही विडंबना है, उसने सुख-सुविधा की खोजों के अंबार लगा लिए, फिर भी वह सुखी नहीं है, अशांत है। क्योंकि **किसी रहस्य की खोज कर लेना तो आसान है, किंतु उस पर नियंत्रण रखना और उसका सदुपयोग करना आसान नहीं है। आज सारे विज्ञान की खोज और उसके उपयोग पर प्रश्न खड़ा है।**

पृथ्वी पर मनुष्य की सारी खोजें व्यर्थ हैं, जब तक वह - 'शान्ति के उपायों की खोज' नहीं करता। इसमें सबसे अधिक और बुनियादी काम भारत ने किया है।

भारत ने विश्व शान्ति के उपायों के लिए वसुधैव कुटुम्बकम् की खोज की।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' ऐसे रहस्य की चाबी है, जो महाविनाश के अभिशाप को वरदान में बदल सकती है। अब विश्व को केवल यही सोच बचा सकती है। **भारतीय चिंतन की विशालता को शायद विश्व अभी तक समझ नहीं पाया। समझना उसके लिए बड़ा हितकर होता।** कितना विशाल हृदय होगा भारतीय मनुष्य का... इस प्रार्थना से स्पष्ट होता है-

सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत।।

अर्थात सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी को शुभ दर्शन हों और कोई भी दुःख से ग्रसित न हो। इस प्रार्थना में प्राणी मात्र का कल्याण छुपा है।

अब गोपाल जी खड़े हो गए और उन्होंने कहा-

भारत में विश्व के कल्याण की एक प्रार्थना प्रतिदिन परंपरागत रूप से हजारों वर्षों से होती आयी है, वह है- **धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो.....**

यहाँ धर्म का तात्पर्य सत्य से है और अधर्म से तात्पर्य असत्य से है। **समस्त प्राणियों में सद्भाव और पूरे विश्व के कल्याण के लिए प्रार्थना। ऐसे लोक कल्याण के भाव चैतन्य अवस्था में ही पैदा हो सकते हैं।** मनुष्य चेतना जैसे-जैसे ऊपर उठती जाती है, उसमें कल्याणकारी भाव स्वतः उभरने लगते हैं। भारतीय जनमानस में चैतन्य के प्रति बड़ी गहरी प्यास है। यह प्यास

इस बहुमूल्य प्रार्थना से प्रदर्शित होती है।

असतो मा सद्गमय।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्मा अमृतं गमय।

अर्थात हे ईश्वर! मुझे असत्य से, सत्य की ओर ले चलो। अंधकार (अज्ञानता) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले चलो। मृत्यु से जीवन की ओर ले चलो। यह प्रार्थना दर्शाती है कि, **मनुष्य में ऊँचा उठने की कितनी अभीप्सा है, और जिसमें परम को खोजने की प्यास है।**

भारतीय चिंतन की विशालता और गहराई को समझने के लिए भी इतना ही गहरा हृदय चाहिए ...

परहित सरिस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

अर्थात दूसरों की भलाई से बढ़कर श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं और दूसरों को दुःख पहुँचाने जैसा निम्न कोई पाप नहीं।

भारतीय जनमानस केवल अपने लिए ही नहीं, अपितु वह पूरी सृष्टि के लिए प्रार्थना करता है -

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्ति रोशधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवाः शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्वः शान्ति, शान्ति रेव शान्तिः सा मां शान्तिरोधि। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति ॐ

अर्थात, तीनों लोकों में ईश्वर शान्ति कीजिए। शान्ति कीजिये, जल, थल और गगन में, जीवमात्र के तन मन में, अग्नि में, पवन में। शान्ति श्रेष्ठ समाज के सृजन में, जीव मात्र के तन मन में। ओम शान्ति... शान्ति... शान्ति.....

पूजा-अर्चना की नित्य क्रिया में शान्ति के लिए प्रार्थना भारत की भूमि के कण-कण से हजारों वर्षों से गुंजित हो रही है। कहते हुए गोपाल जी बैठ गए।

यह सब सुनने के बाद फॉदर खड़े हुए। उन्होंने कहा- **हिमालय की मिट्टी और भारत की भावना बड़ी पवित्र रही है। मैं दिल से उस मिट्टी को सलाम करता हूँ....** शान्ति और पवित्र भावना को दुनिया में जिसने भी संजोया है.... उन सबको मेरा सलाम... जीसस को सत्य बोलने पर जब सूली पर लटकाया गया, कीलों से उनका शरीर छेद दिया गया, तब भी जीसस के ये

उद्गार थे-

'हे प्रभु! इन्हें माफ कर देना, क्योंकि ये नहीं जानते, कि ये क्या कर रहे हैं....।' इतना प्रेम, इतना बड़ा दिल... इतनी पोलाइटनेस... बेमिसाल इंसानियत... आदमी की शान्ति के लिए ईसा ने कहा था - **अपनी शान्ति मैं तुम्हें देता हूँ ..., अपनी शान्ति मैं तुम्हारे लिए छोड़ता हूँ....।** कहते हुए फॉदर बैठ गए।

फॉदर के बाद सायना खड़ी हुई बोली-

इस्लाम की पूरी बुनियाद में प्रेम है। कुरआन में उल्लेख है -

'-यदि उनका झुकाव शान्ति की ओर हो, तो तुम भी शान्ति के लिए झुक जाओ एवं ईश्वर पर विश्वास करो, वह सबकुछ सुनता है। यदि वे तुम्हें धोखा देते हैं तो देने दो। ईश्वर उन्हें दंड देंगे।' यही विश्व शान्ति का मूल संदेश हो सकता है।

अब वांग शी खड़ा हुआ, उसने कहा- कन्फ्युशिज्म धर्म के संस्थापक कन्फ्यूशियस ने ढाई हजार वर्ष पहले कहा था- **'शान्ति की स्थापना करना मनुष्य का कर्तव्य है।'**

जमशेद जो ईरान से था वह बोला- **'पारसी धर्म के संस्थापक जरथुस्त्र ने कहा है- पाप ही समस्त संघर्षों का मूल कारण है...।'**

जया ने खड़े होकर कहा.. **जैन धर्म ने विश्व शान्ति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए पाँच महासंकल्पों का मार्ग बताया है।** गौतम बुद्ध ने भी यही कहा है - **अपने मस्तिष्क से वैर भाव मिटाओ। दूसरों से मित्रतापूर्ण व्यवहार करो। विजेता होने की इच्छा न रखो, क्योंकि यही विश्व शान्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।** दूसरों को हराने की इच्छा से कभी भी विजय प्राप्त नहीं होती। धम्मपद के सौवें अध्याय में उन्होंने कहा - **'एक अर्थपूर्ण पद जिसमें शान्ति का भाव निहित हो, हजारों पदों की अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठ है....।'**

अब और कोई बोलने को न रहा, तो हिमानी ने पुनः खड़े होकर कहा- **जिन्होंने भी शान्ति की इन उद्घोषणाओं को कहा है, बुना है, वास्तव में वे पृथ्वीपुत्र हैं। वर्तमान विनाश को बचाने के लिए, वही शान्तिदूत बन सकते हैं। ऐसे शान्तिदूत आगे आएँ और विश्व में शान्ति का साम्राज्य स्थापित करने का संकल्प लें।**

वैसे तो शान्ति के पक्षधर दुनिया में हर जगह मौजूद हैं...लेकिन हिमालय की मिट्टी में इसकी सम्भावना अधिक नजर आती है।

विश्व में शान्ति स्थापना की संभावना भारत से हो सकती है, क्योंकि यहाँ अतीत से सनातनी शान्ति के स्वर निरन्तर उभरते रहे हैं। भारत की शान्ति यात्रा 10 हजार वर्षों से निरंतर चली आ रही है। **यह देश शान्ति, सद्भाव और सहिष्णुता का पुँज रहा है। चेतना के कई फूल यहाँ खिले हैं। सहिष्णुता के कारण गुलामी की यातनाएँ भी सही हैं। फिर भी इस देश ने शान्ति, सहिष्णुता और सद्भाव की विरासत को मरने नहीं दिया। यही तो इसकी महानता है। आशा है, पृथ्वीपुत्र जागेगा और पूरी दुनिया शान्त होगी।** आज के प्रोग्राम में हिस्सा लेने के लिए वेरी वेरी थैंक्स.....

ब्लॉस्ट और बचाव दल

लगभग दो घण्टे पहले कीव के समीप एक इलाके में भयंकर ब्लास्ट हुआ। इस इलाके में पिछले तीन दिनों से कई ब्लास्ट हुए थे। यूँ तो यूक्रेन के कई शहर तबाह हो चुके थे। बर्बादी का ऐसा मन्ज़र, कि देखकर रूह काँप उठे।

यहाँ यह विस्फोट एक बिल्डिंग पर हुआ था, जो पूरी तरह धाराशायी हो गयी थी। बचाव का काम शुरू हो गया। आशंका है कि, मलवे में कई नागरिक दब गए हैं। राहत व बचाव के लिए एक स्पेशल बचाव दल कीव से भी आया था। वर्ल्ड पीस फोरम के सदस्य भी इसमें सम्मिलित थे। फोरम के 20 स्टूडेंट्स का एक दल राहत एवं बचाव दल में काम कर रहा था। भारत, और अवि दल का नेतृत्व कर रहे थे। राहत और बचाव दल अभी अभी वहाँ पहुँचा था। उससे पहले स्थानीय बचाव दल ने कार्य प्रारम्भ कर दिया था। चार फायर ब्रिगेड की गाड़ियाँ लगभग दो घंटे की मशक्कत बाद आग पर काबू पा चुकी थी। कहीं मलवे से अभी भी धुँआ उठ रहा था। बुलडोजर मलवा हटा रहे थे। तीन चार सदस्य आयरन कटर से काँक्रीट के सरियों को काटने में लगे थे। बुलडोजर तथा क्रेन मलवे से ढाँचों को अलग कर रही थी।

सबसे ज्यादा जरूरी था, मलवे में फँसे लोगों को निकालना। बचाव दल की सभी टीम उसी कवायद में जुटी हुई थी। टीम अबतक चार शव तथा दो घायलों को निकाल चुकी थी। नीचे कितने लोग फँसे हैं, किसी को पता नहीं। कुछ जगह पर माँस के बिखरे हुए टुकड़े भी दिखाई दे रहे थे। एक स्थान पर आदमी का सिर्फ आधा शरीर ही पड़ा हुआ था। बिल्डिंग के बैक साइड में अभी

भी फायर ब्रिगेड का काम चल रहा था। स्टूडेंट्स की टीम उत्तरी दिशा में काम कर रही थी।

जब वे एक पिलर को रॉड के माध्यम से हटा रहे थे, तब उन्हें मलवे के अन्दर से किसी महिला की चीख सुनाई दी। भारत ने अवि को कहा -तूने अन्दर से किसी महिला की चीख सुनी?

- हाँ, ऐसा लगा जैसे अन्दर से आवाज आयी। अवि ने भी समर्थन किया।

अवि दौड़कर दल के हेड के पास गया। उसने बताया- उस जगह महिला की चीख सुनाई दी है। यह सुनकर हेड तुरन्त हरकत में आया। उसने क्रेन चालक को इशारा किया। थोड़ी ही देर में एक क्रेन उस पॉइंट पर आ गयी। क्रेन यहाँ के मलबे को उठाने में लग गयी।

सबसे पहले तो ऊपर का स्क्रैप हटाना जरूरी था। यह भी सावधानी रखना है कि, उसके भीतर जो दबे हों, वो सुरक्षित निकाले जा सके। जब काफी मलवा हट गया, तो भारत ने उसे बताया कि, इस जगह से महिला की चीख सुनाई दी थी। हेड ने उस जगह को ध्यान से देखा, उसपर विचार किया और क्रेन मास्टर को इशारे से फिर समझाया, कि क्या करना है। लगभग आधे घण्टे की मशक्कत के बाद मलवा हटा तो स्थिति थोड़ी स्पष्ट हुई। वास्तव में एक दीवार दूसरी दीवार पर गिरकर ट्राएंगल में झुकी हुई थी। उस दीवार के नीचे महिना फंसी हुई थी। अब दीवार के नीचे का मलबा हटाना था। किन्तु यह रिस्की था, क्योंकि नीचे का मलवा हटाने में दीवार गिरने का डर था। इससे अंदर फसे लोगों की जान जा सकती है। अतः हेड ने फिर जगह को बहुत ध्यान से देखा। फिर उसने दो जैक बुलवाए। और उन्हें दीवार से सटाकर लगवा दिया। फिर दीवार के साइड का मलबा हटाने का इशारा किया। जब साइड से मलवा हटा, तो लगभग पाँच फीट अन्दर एक महिला दिखाई पड़ी। मास्टर ने दो कर्मियों को अन्दर जाने का इशारा किया।

किन्तु वे अन्दर जाने के बदले एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

यह देखकर भारत तत्काल दीवार के बड़े होल में घुस गया। उसके पीछे अवि भी। अंदर जाते ही भारत ने मोबाइल की टार्च ऑन की। उसने देखा अन्दर एक महिला खून से लथपथ बेसुध पड़ी है। उसके साइड में एक छोटी बच्ची भी है। भारत ने महिला का हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींचा, किन्तु वह अपनी जगह से सरक नहीं पाई।

भारत ने बच्ची को अपनी ओर खींचा उसकी साँसे चैक की, फिर बच्ची को अवि के हाथों में सौंप दी। अवि बच्ची को लेकर बाहर निकल गया। टार्च से फिर उसने मुआयना किया तो देखा महिला का एक पाँव पिलर के नीचे दबा हुआ था। भारत ने बाहर निकलकर कहा, मुझे एक जैक चाहिये।

सुनकर मास्टर ने इशारा किया, दो अलग-अलग साइज के जैक लेकर एक वॉलेंटियर लेकर आ गया। भारत ने जैक लिया और फिर अन्दर घुस गया। उसने पिलर के नीचे जैक लगाकर चाबी से उसे घुमाना शुरू किया। काफी देर चाबी घुमाने पर धीरे धीरे पिलर ऊपर उठा। पिलर उठाने के बाद भारत ने महिला की टाँग को खींचा। पाँव फ्री तो चुका था। लेकिन वह बिल्कुल चकनाचूर हो गया था। उसने टॉर्च बन्द की, मोबाइल जेब में रखा, फिर उसने महिला के हाथों को पकड़कर खींचा। भारत धीरे-धीरे महिला को सरकाकर किनारे तक ले आया। फिर भारत और अवि दोनों ने मिलकर उसे बाहर निकाला। महिला अभी भी बेहोश थी। उसका एक पाँव बिल्कुल चूर हो चुका था। चेहरे और हाथ पर भी चोट के निशान थे।

भारत और अवि महिला को एम्बुलेंस के पास लेकर के आये। नर्स ने एम्बुलेंस का दरवाजा खोला। स्ट्रैचर निकाला और उसपर डाल दिया। छोटी बच्ची को पहले से एम्बुलेंस में लिटा दिया था। डॉक्टर ने दोनों का चेकअप किया, फिर दोनों पेशेंट को बॉटल चढ़ाई। प्रायमरी ट्रीटमेंट किया। फिर स्ट्रेचर सहित महिला को एम्बुलेंस में चढ़ा दिया।

थोड़ी ही देर में एम्बुलेन्स हॉस्पिटल की ओर रवाना हो गयी।

मैं समय हूँ...!
यह मत भूल... तुझे अपनी हर श्वास का हिसाब चुकाना है।

घायलों का इलाज

बंकर में उस समय स्थिति बड़ी नाजुक हो गयी, जब गम्भीर रूप से घायल पाँच सैनिकों को बंकर में लाया गया। उसमें भी स्थिति तब और गंभीर हो गयी। **उन पाँच सैनिकों में दो रशियन थे। इन्हें हॉस्टल के गार्ड सहित कुछ स्टूडेन्ट मिलकर लाए थे। वे बहुत गम्भीर स्थिति में थे।** हिमानी, जया, ईशा और सायना लगभग तीन घण्टे से उनके इलाज में लगी थी। उनकी हालत काफी गंभीर थी। जब वे खतरे से बाहर हो गए, तब हिमानी बाहर निकली। शायद फॉदर उसका पहले से वेट कर रहे थे। उसके बाहर निकलते ही उन्होंने इशारे से अपनी ओर बुलाया। वे बंकर के एक कोने में उसे ले गए। फॉदर उस समय बड़ी गम्भीर मुद्रा में थे, बोले- माय सन... अब कैसी हालत है?

हिमानी ने कहा- **पाँचों सोल्जर अब खतरे से बाहर हैं... फॉदर घायलों में दो राशियन सैनिक हैं.....**

हिमानी ने कहा- तो क्या हुआ फॉदर?

- यदि ये ओपन हो गया तो कानूनन मुश्किल खड़ी हो सकती है....

- हम डॉक्टर हैं... हमारे लिए वो सैनिक नहीं... सिर्फ एक मरीज हैं.... उनकी जान बचाना हमारी ड्यूटी है.... फॉदर अभी भी गम्भीर ही थे, बोले- मैं समझता हूँ माय सन... मैं भी एक रशियन ही हूँ.. लेकिन

कानून और भावना में बहुत अन्तर होता है.. तुम खतरे में पड़ सकती हो....!

यह बात सुनकर हिमानी बोली- **यदि इन्सानियत की ड्यूटी करना खतरा है, तो मुझे हर खतरा मन्जूर है। दुनिया का कोई कानून मौत से बड़ी सजा नहीं दे सकता... और अब हमें मौत से डर नहीं लगता... फॉदर।**

फॉदर ने एक पल हिमानी को देखा फिर कहा- **मैं तुम्हारी भावनाओं को सैल्यूट करता हूँ, माय सन..।**

तभी जया ने आवाज लगाई - हिमानी! जल्दी आ...। शायद किसी मरीज की हालत ज्यादा हो गयी थी।

हिमानी ने फॉदर को सॉरी कहा और हेल्थ सेन्टर की ओर पुनः दौड़ पड़ी। हिमानी के जाते ही जया बोली- ये रशियन सोल्जर छटपटाया और अचानक इसकी साँसें रुक गयी है... प्लीज़ कुछ करो। सुनकर हिमानी ने उसे चैक किया फिर पल्स चैक की, और जया से कहा- ही इज़ सीरियस... उसके बाद मरीज को डिफिब्रिलेटर के शॉक दिए और थोड़ी ही देर में मरीज की साँसें फिर से चलने लगी। हिमानी बोली- हमें दो तीन घण्टे लगातार मरीज पर नजर रखना है।

जया ने कहा- ओके... फिर उसने एक इंजेक्शन लगाया और वहीं बैठ गयी।

जया ने कहा- तू बीमार हो जाएगी हिमू, थोड़ा रेस्ट कर ले...। मैं मरीज पर नजर रख लूँगी। सायना और ईशा भी हैं.. वो मरीज का चैकअप करके यही बैठेंगी।

हिमानी ने कहा- **नहीं, जबतक इसकी कन्डिशन खतरे के बाहर नहीं हो जाती... तब तक मैं यही बैठूँगी।** लगभग बीस मिनट के बाद सायना और ईशा भी इनके पास आ गयी।

ईशा बोली- सबकी कन्डिशन ठीक है... लेकिन 9 नं. की कन्डिशन क्रिटिकल है।

यह सुनते ही हिमानी ने कहा- इस मरीज का ध्यान रखना... कहते हुए वह 9 नं. बेड की ओर चली गयी।

सायना ने कहा- यार हिमू ने दो दिन से बिल्कुल रेस्ट नहीं किया... कुछ

खाया भी नहीं है। लगता है, कहीं इसका इलाज नहीं करना पड़े।

ईशा बोली- तू ठीक कहती है पिछले दो दिन से हम कुछ बिस्किट्स ही खा पाए हैं, भूख के मारे वैसे ही जान निकल रही है... मगर ये हिमू कितनी भागदौड़ कर रही है... न जाने किस मिट्टी की बनी है।

जया ने कहा- मुझे भी उसकी बहुत चिंता हो रही है। इतने में भारत अन्दर आया उसके हाथ में एक बिस्किट्स का पैकेट् था। उसने जया को दिया और कहा- बड़ी मुश्किल से 17 पैकेटस बिस्किट्स के अरेंज किए हैं। सात पैकेट बाँट दिए। **हर तीन लोगों के बीच एक पैकेट से काम चलाना पड़ेगा।** ये तुम तीनों का पैकेट। दस पैकेट मरीजों के लिए डिपॉजिट रख लिये हैं।

ईशा बोली- अभी तो ये पैकेट तीन के बीच में भी वरदान है। पैकेट देकर भारत चला गया।

थोड़ी ही देर में हिमानी ने आकर कहा- अब 9 न. का मरीज नॉर्मल है।

सायना ने उसे बिस्किट का पैकेट देकर कहा- ले हिमू ये तेरे हिस्से

का... !

हिमानी ने कहा- और तुम्हारा..?

जया तपाक से बोली- हमने खा लिया.....

ईशा बोल पड़ी- अब तू भी जल्दी से खा ले, नहीं तो चक्कर खाकर गिर जाएगी।

हिमानी ने शान्ति से कहा- अभी नहीं, यह मरीज के लिए रख लेते हैं....

जया ने कहा- मरीजों के लिए भारत लेकर आ चुका है... तू ये खा ले...। कहते हुए जया ने पैकेट फाड़कर एक बिस्किट जया के मुँह से सटा दिया।

हिमानी ने बिस्किट फिर भी नहीं खाया और कहा- ऐसा करते हैं... हम तीनों मिलकर खाते हैं......

सायना फिर बोली- लेकिन हमने तो खा लिया...

हिमानी ने कहा- तेरी बोझिल आँखें बता रही हैं कि तूने कुछ नहीं खाया... झूठी...

इस पर सायना बोली - सच में हमने खा लिया है.....

हिमानी बोली- अच्छा मेरी कसम खा.. कि तूने बिस्किट खा लिया..

तेरी कसम से तो बेहतर है... कि अब बिस्किट ही खा लेते हैं....

हिमानी का दिल भर आया, वह बोली- **प्लीज़... तुम सब मुझे इतना प्यार भी मत दो... कि मैं उसका कर्ज कभी उतार न पाऊँ....**

जया बोली- **प्यार कभी कर्ज नहीं होता है.. तेरे लिए तो जान भी हाजिर है...**

थोड़ी देर के लिए माहौल संजीदा हो गया। तीनों चुप रहे।

ईशा ने कहा-चलो अब बिसकिट्स खाते हैं। फिर तीनों ने मिलकर एक पैकट बिस्किट का खाया। पिछले दो दिनों में इन्होंने आज तीन तीन बिस्किट्स खाए थे... बिस्किट्स खाकर इन्हें ऐसा लगा जैसे फाइव स्टार होटल से में लंच कर लिया हो...

मैं समय हूँ... !
सृष्टि में तू समग्र है, व्यक्तिगत नहीं, अतः तुझे समग्र होकर जीना है।

अब और नहीं...

पिछले 4 दिनों से कीव में धमाके हो रहे थे। मिसाइल अटैक, तोप और गोलियों की आवाज से पूरा इलाका काँप रहा था। चारों ओर धुँआ ही धुँआ। बारूद की दुर्गंध फैली थी, और गोलियों की बौछार हो रही थी। बंकर में अब 29 स्टूडेंट्स सहित 71 लोग ही बचे थे, जिनका बहुत बुरा हाल था। कुछ घायल नागरिक, बच्चे और सैनिक थे, जिनका इलाज किया जा रहा था।

इनमें पाँच यूक्रेनियन और तीन रशियन सैनिक थे। इंसानियत के नाते स्टूडेंट्स सभी का इलाज कर रहे थे। अब उन्हें मौत का डर नहीं था। वे खतरों के बीच से नागरिकों को निकालकर, सुरक्षित जगह लाकर उनका इलाज कर रहे थे।

पिछले 3 दिनों से लाइट ऑफ था। खाना खत्म हो चुका था। पेट एक-एक बिस्किट को तरस रहा था। पानी की सप्लाई 10 दिनों से बन्द थी। भूख और प्यास ने तोड़कर रख दिया था। बर्फ को गर्म करके उसके पानी से प्यास बुझाना पड़ रही थी। इससे कई बीमार हो चुके थे। कुछ हाइपोथर्मिया के शिकार हो गए थे। ऊपर से जान लेने वाली मायनस 3 डिग्री की ठण्ड। पिछले तीन चार दिन बहुत ही त्रासदी भरे बीते थे। ऐसा लगता था, जैसे पल-पल मौत करीब आ रही हो। कौन, कब तक जिन्दा रहेगा,

किसी को पता नहीं।

आज थोड़ी सी राहत जरूर मिली थी। पिछले चार घंटे से बमों के धमाके सुनाई नहीं दिए। कान फाड़ देने वाले ब्लॉस्ट नहीं हुए थे। बस गोलियों की आवाज रह रह कर आ रही थी।

लम्बे समय से एक ही जगह बंकर में पड़े रहने के कारण हिमानी का पूरा बदन टूट रहा था। ठण्ड के कारण उसकी चमड़ी पर लाल चट्ठे पड़ गए थे। खुला आकाश देखे उसे तीन दिन हो गए थे। घुटन से वह बेचैन हो उठी थी। ऐसा लग रहा था कि बंकर में कुछ और समय रही तो, उसका दम घुट जाएगा। भूख और प्यास के कारण उसके कदम नहीं उठ पा रहे थे। फिर भी वह खुले आकाश को देखना चाहती थी। यही बेचैनी उसे बाहर खींच लायी थी।

वह कब बंकर से निकलकर ग्राउण्ड फ्लोर तक आ गयी, उसे पता ही नहीं चला। धीरे धीरे वह खिड़की के पास आई। **खिड़की के बाहर आकाश को देखा, तो उसे बड़ा सुकून मिला। कितना विशाल, शान्त और शालीन था आकाश। उसे देखते ही उसके शरीर में जैसे जान आ गयी।** फिर उसकी नजर नीचे पड़ी तो वह काँप गयी, चारों तरफ मलवे का ढेर और तबाही का मन्ज़र दिखाई दे रहा था। बड़ी बड़ी बिल्डिंग्स खंडहर में बदल चुकी थी। जो कुछ खड़ी थी, वे भी धुँवें से काली पड़ गयीं थी। कहीं कहीं पर अभी भी धुँआ उठ रहा था।

चारों तरफ तबाही का मन्ज़र था। खूबसूरत शहर की बर्बादी देखकर वह काँप गई। स्नोफॉल अभी भी हो रहा था। दुःख और गुस्से के कारण उसके चेहरे पर पसीना आ गया।

वह सोच रही थी, दो लोगों की जिद करोड़ों लोगों की त्रासदी का कारण बन गयी। फिर उसकी नजर हॉस्टल के गेट पर पड़ी। जो यहाँ से लगभग 100 मीटर की दूरी पर था। इस पर उसने नो वॉर की तख्ती लगाई थी। जो अब उसे दिखाई नहीं दे रही है। किसने हटाई होगी यह तख्ती? उसे समझ नहीं आ रहा था। वर्ल्ड पीस फोरम के द्वारा ऐसे पोस्टर यूक्रेन के कई शहरों में लगाये जा चुके थे।

हिमानी इस तबाही को अपलक देखती रही। उसके दिमाग में सैकड़ों

प्रश्न बिजली की तरह कौंध रहे थे। **न जाने क्या सोचकर वह मुड़ी, कमरे के एक कोने में जाकर, उसने नो वॉर की तख्ती उठाई, और बाहर गेट की ओर चल पड़ी।**

गेट के सामने, रोड़ के उस पार दाहिने हाथ पर लिंडेन, एल्म और विलो के पेड़ थे। बीच में कोई 100 मीटर की खाली जगह और बायीं तरफ कुछ मकान थे, यानी एक तरफ पेड़ थे, दूसरी तरफ मकान और बीच में खाली जगह थी। वहाँ दोनों तरफ से रुक रुककर फायरिंग की आवाज सुनाई दे रही थी। शायद दोनों देशों के सैनिक आमने-सामने थे।

गेट पर आकर तख्ती लगाने की सोच ही रही थी, कि उसकी नजर रोड़ के उस पार खाली जगह में एक महिला पर पड़ी। उसकी गोद में एक बच्चा था, जिसे स्नोफॉल से बचाने के लिए उसने अपनी बाहों से सीने में छुपा रखा था। महिला शायद सुरक्षित स्थान ढूँढ रही थी। उसकी चाल देखकर लग रहा था कि, वह जख्मी है। लड़खड़ाकर चलते हुए, वह इस तरफ ही आ रही थी। ठीक इसी वक्त उस महिला के पीछे कुछ दूरी पर एक धमाका हुआ। यह धमाका हेण्डग्रेनेड का रहा होगा। दोनों तरफ से गोलियों की आवाज भी आयी। धमाके के कारण महिला बच्चे को छाती में छुपाकर, घुटनों के बल, औंधे मुँह बैठ गयी थी।

यह सब देखकर हिमानी अपने आप को रोक नहीं पाई। **गेट खोलकर वह बेतहाशा महिला की तरफ भागी।** सड़क पार करते समय उसका पाँव लड़खड़ाया और वह गिर पड़ी। उसके हाथ की तख्ती भी छूट गयी। किन्तु कुछ ही पलों में वह फिर उठी और महिला की तरफ दौड़ पड़ी।

थोड़ी ही देर में हिमानी उसके पास पहुँच चुकी थी। उसने देखा, महिला का पूरा कन्धा, कोहनी तक खून से लथपथ था। शायद उसे गोली लगी थी।

हिमानी ने अपने हाथों से उसे उठाया और सहारा देते हुए बोली- रिलैक्स, प्लीज़ कम...

महिला ने एक नजर हिमानी को देखा। उसकी आंखों में जैसे चमक लौट आई। हिमानी ने कहा - **तुम चिन्ता मत करो, कुछ नहीं होने दूँगी, मैं तुम्हारी जान बचाऊँगी.. चलो...।**

महिला ने बच्चे को संभाला और हिमानी के साथ लड़खड़ाकर चलने लगी। बच्चे को उसने अभी भी कसकर पकड़ रखा था। चलते-चलते महिला ने कहा- आइ एम रशियन, बट द किड इज़ यूक्रेनियन। इसकी माँ धमाके में मारी जा चुकी है। मैं किसी तरह इसे बचाने में सफल हो गयी। मैं इसे कुछ नहीं होने दूँगी।

यह सुनकर हिमानी बोली- आप एक यूक्रेनियन बच्चे को बचाने के लिए अपनी जान पर खेल गयी..?

उस महिला ने शान्त स्वर में कहा- **यूक्रेनियन नहीं, एक बच्चे की जान बचाने के लिए...**

महिला की बात सुनकर हिमानी की आँखों से आँसू छलक पड़े। उसके मुँह से अचानक ये शब्द निकल पड़े- **यू आर ग्रेट, आइ सैल्यूट यू...**

हिमानी सोच रही थी। **एक माँ का दिल ही हो सकता है, जो दुश्मन देश के बच्चे को भी बचाने के लिए अपनी जान तक देने को तैयार हो जाये। उसने सोचा- काश! ऐसा दिल सबका हो जाये।**

फुटपाथ क्रॉस कर तीनों सड़क के बीच में आ चुके थे, हॉस्टल का गेट अब करीब ही था, कि अचानक उनके आसपास फिर गोलियाँ चली। अब हिमानी ने महिला और बच्चे दोनों को अपने शरीर से ढँक लिया। इसी बीच हिमानी ने महसूस किया कि, उसके शरीर में गोलियाँ धँस चुकी हैं। फिर भी

उसने महिला और बच्चे को ढँक रखा था, किन्तु कुछ और पलों के बाद उसकी शक्ति जवाब दे गई, और वह एक तरफ लुढ़क गयी। उसे किसी पुरुष के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी, जो रशियन भाषा में थी। प्लीज़ स्टॉप... स्टॉप... प्लीज़... फिर यूक्रेनी भाषा में भी चिल्लाने की आवाज आई... प्लीज़ स्टॉप। और फिर धीरे धीरे उसकी आँखें बंद होती चली गयी। जैसे वह चेतना शून्य हो गयी हो। **ऐसा लगता था, जैसे युद्ध के आगे शान्ति हार गई या मानवता पस्त हो चुकी हो। जीवन और मौत के बीच जैसे सिर्फ युद्ध रह गया।**

कुछ समय के बाद... हिमानी के शरीर में थोड़ी सी हरकत हुई। धीरे-धीरे हिमानी को बच्चे के रोने की आवाज फिर सुनाई दी। यानि वह होश में आ चुकी थी। धीरे-धीरे उसकी आँखें खुली, तो पूरा दृश्य बदला हुआ दिखाई दिया...... उसने देखा, उसके दोनों तरफ सैनिक खड़े हुए हैं। उनके हाथों में राइफल्स हैं और अँगुली ट्रिगर पर। उनकी वर्दी से लग रहा था, कि एक तरफ यूक्रेनी और दूसरी तरफ रशियन्स सैनिक खड़े हैं। वो अपलक मुझे ही देख रहे थे। उनके पीछे भी कई और सैनिक खड़े थे। हॉस्टल के गेट से भी उसे कुछ लोग आते दिखाई दिए।

हिमानी को फिर से हिम्मत आयी, वह चीखकर बोली- **ये महिला.. जो बच्चे को बचा रही है... रशियन हैं और वो बच्चा यूक्रेनियन और मैं, इण्डियन... और उसके भी पहले हमसब इन्सान हैं.... आप किसे मारना चाह रहे हैं?**

बहुत हो चुका... अब और नहीं... इतना कहते हुए हिमानी ने अपने शरीर के बहते खून से बर्फ पर लिखा- नो वॉर...

एक पल उसने आकाश को देखा....उसकी तरफ हाथ बढ़ाया, ऐसा लगा जैसे वह आकाश की बाहों में समा जाना चाहती हो... और आकाश भी जैसे उसे अपने पास बुलाना चाहता हो.... फिर अचानक बादल गरजने लगे और बिजली कौंधने लगी... और थोड़ी ही देर में हिमानी ने दम तोड़ दिया।

सब स्तब्ध होकर देखते रह गए। मानवता जैसे हार गयी हो। लेकिन तभी... **सभी सैनिकों के हाथों से बन्दूकें छूटकर गिर गयी। वे घुटनों के बल सर झुकाकर बैठ गए।**

रशियन महिला उसे अपलक देखती रही.... उसके दिमाग में हिमानी के कहे हुए शब्द अभी भी गूँज रहे थे। ...तुम चिन्ता मत करो, कुछ नहीं होने दूँगी, मैं तुम्हारी जान बचाऊँगी। अचानक रशियन महिला खड़ी हुई। उसने सैल्यूट की पोजिशन में कहा-

यू आर ग्रेट... आइ सैल्यूट यू...

यह देखकर सभी सैनिकों ने भी एक साथ खड़े होकर सैल्यूट किया।

बच्चा जो अब तक रो रहा था, उसके हाथ में वही तख्ती आ गयी, जो हिमानी के हाथ से सड़क पर गिर गयी थी। बच्चा उसे हाथ से हिलाकर खेलने लगा। जिसके एक तरफ लिखा था- **नो वॉर..** और दूसरी तरफ **द होल वर्ल्ड इज़ फैमिली।**

शायद ये प्रकृति की ओर से दुनिया को जीने का एक नया सन्देश था.... जिस दुनिया में सुरक्षा थी... शान्ति थी... और... प्रेम था.....

अनायास ही बादलों से बूंदें बरस पड़ी। ऐसा लग रहा था....जैसे आकाश की आंखों से आँसू छलक पड़े हों....
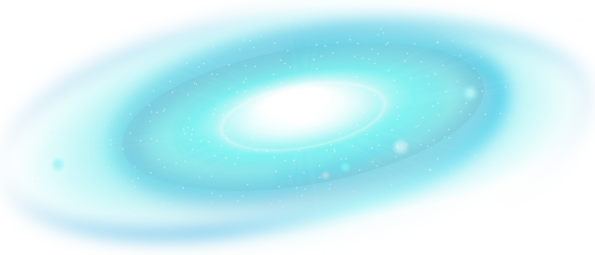
मैं समय हूँ...!

जिसमें मनुष्यता बची है, उसने मेरे संदेशों को समझ लिया होगा। मैंने हर ढंग से समझाने का प्रयास किया है। अब भी यदि मनुष्य समझ गया, तो बच सकता है, नहीं समझा तो उसका विनाश सुनिश्चित है।

हे मानव! सृष्टि में तेरी दुनिया, एक खिलौने से अधिक नहीं है, किन्तु इसे बना ही लिया है, तो इसके साथ शान्ति से खेल, इसका आनन्द ले। इसे नफरत और अहंकार से तोड़ने की मूर्खता मत कर, अन्यथा धरती से तेरा अस्तित्व ही मिट जाएगा।

तुझे युद्ध ही लड़ना है, तो स्वयं से लड़, क्योंकि वास्तविक शत्रु बाहर नहीं, तेरे भीतर है। अहंकार और घृणा पर नियंत्रण का पुरुषार्थ पैदा कर।

यदि प्रेम से रहना नहीं आया, तो पशु तुझसे श्रेष्ठ हो जाएगा और तेरा जन्म लेना व्यर्थ होगा। अहंकार और घृणा के प्रपंच में अपनी असीमित दिव्य शक्ति गंवाने की भूल मत कर।

जीवन तेरा है, अतः उसे सोच-समझकर जाग्रत अवस्था में जी। सत्य को मानकर नहीं, जानकर जीएगा, तो ही जीवन सार्थक होगा।

इसके पश्चात भी यदि तू नहीं समझा, तो फिर मुझे दोष मत देना...

नोट : उपन्यास में प्रयुक्त समस्त स्थान, घटनाएँ तथा पात्र काल्पनिक हैं। इनका वास्तविक जीवन से कोई संबंध नहीं है।

आभार...

नमन समस्त दिव्य विभूतियों को, जिन्होंने विश्व में शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया... उन सब स्त्रोतों के प्रति आभार, जिनसे मुझे किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त हुई।

कृतज्ञता

उन समस्त महानुभावों के प्रति, जिन्होंने प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, उपन्यास में सहयोग प्रदान किया।

श्री राधा वल्लभ त्रिपाठी (पूर्व उपकुलपति), श्री महेंद्र सिंह सोलंकी (सांसद देवास), श्री आशुतोष अवस्थी (पूर्व संभागायुक्त), सर्वश्री कृष्णकान्त नायर, नवीन नाहर, ओंकारेश्वर गहलोत, डॉ. प्रकाश कान्त, डॉ. एस.पी.एस. राणा, डॉ. शर्मिला कांटे, विजय श्रीवास्तव, डॉ. उमा श्रीवास्तव, शशिकान्त यादव, डॉ. मनोरमा जैन, डॉ. कल्पना चौहान, उदय आरस, अरविंद त्रिवेदी, चेतन उपाध्याय, सुरेंद्र सिंह राजपूत, दिलीप राठौर, संजय जोशी, विशाल जलोरे, प्रदीप कानूनगो, पूजा शेन्डे, राजेश विजयवर्गीय, आर.एल. बोड़ाना, राजेश परमार, संजय सरल, गर्वित मालवीय।

साधना कुंज पब्लिकेशन, रोटरी क्लब देवास, प्रेस क्लब देवास, मध्यप्रदेश लेखक संघ, साहित्य समन्वय समिति देवास, संस्कृति साहित्य रचनालय देवास।

स्केच सहयोग हेतु- देव्यानी राठौर, सोनू जायसवाल, ऋषिका मालवीय का आभार।

लेखक की बहुचर्चित पुस्तकें
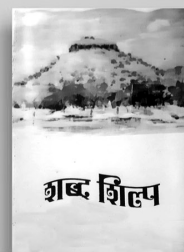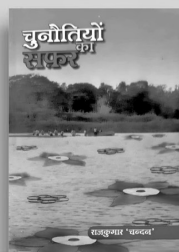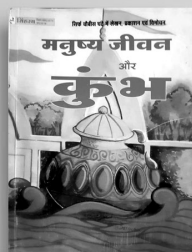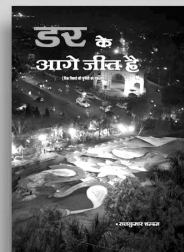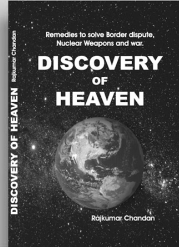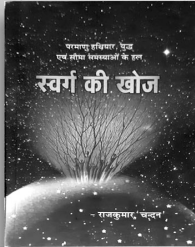
लेखक के पाँच विश्व रिकॉर्ड
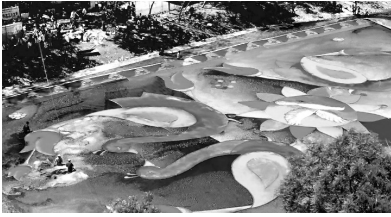
सबसे बड़ी कारपेट रंगोली
5200 वर्गफीट, 5.30 घंटे में
वर्ष - 2013, देवास म.प्र.

दुनिया की सबसे बड़ी वॉटर रंगोली
17 एकड़ तालाब, 8 लाख वर्गफीट
वर्ष - 2008, देवास म.प्र.

यूनिक वॉटर रंगोली
101 महापुरुषों के चित्र,
नॉन स्टॉप 24 घंटे 34 मिनट में
वर्ष - 2012, देवास म.प्र.

पुस्तक का तत्काल लेखन व प्रकाशन
22 घंटे 44 मिनट में पुस्तक का
तत्काल विषय पर लेखन,
प्रकाशन, विमोचन व वितरण
वर्ष - 2016, देवास म.प्र.

विश्व की
सबसे लम्बी ग़ज़ल
भाग 1
राजकुमार चंदन
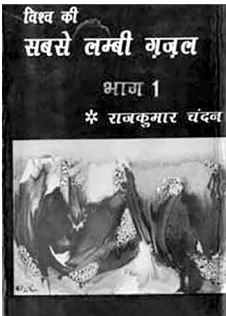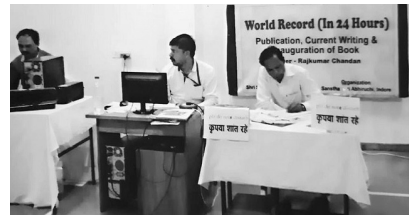
विश्व की सबसे लम्बी ग़ज़ल
10 हजार अशआर (शेर) की
एक ग़ज़ल
वर्ष - 1996, देवास म.प्र.

साधना कुंज पब्लिकेशन के अध्यात्मिक प्रकाशन
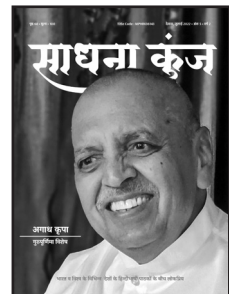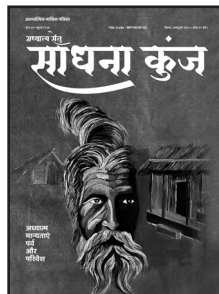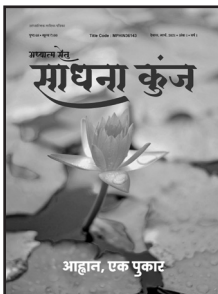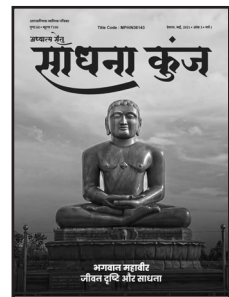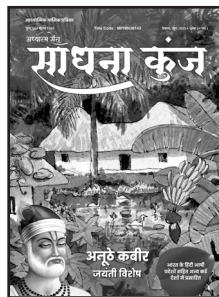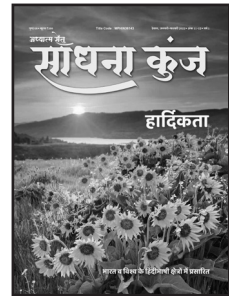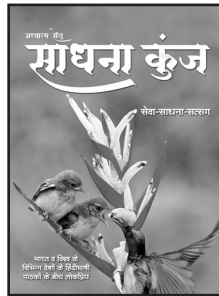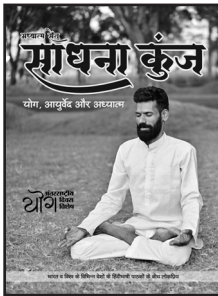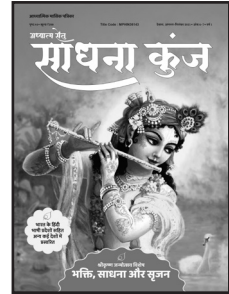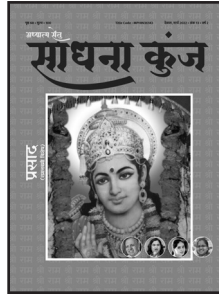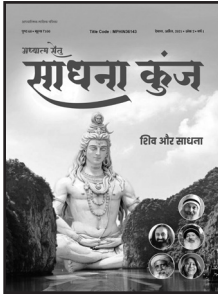
राजकुमार चन्दन अंतर्राष्ट्रीय विषयों के महत्वपूर्ण लेखक हैं। लेखक पाँच विश्व रिकार्ड होल्डर तथा राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हैं। विश्व की ज्वलंत समस्याओं को हल करने में आपकी गहरी रुचि है। यह प्रयोगवादी उपन्यास रूस-यूक्रेन लड़ाई की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जो भारतीय मेडिकल स्टूडेंट्स के द्वारा, विश्वशान्ति का अनूठा विकल्प प्रस्तुत करता है।

साधना कुंज पब्लिकेशन

ISBN NO.- 978-81-956404-3-0

E-Book